लेखक परिचय



नाम :- रोशन लाल पटेल

जन्म : 5 जनवरी सन् 1943 ई0

शिक्षा : एम.ए., एल.एल.बी.

वर्तमान में – एडवोकेट, बरेली ।

पूर्व में : सेवा – भारत सरकार दूरसंचार।

लेखन कार्य : देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख आदि समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं ।

रचनायें :-

1. मंडल कमीशन की समीक्षा
2. छत्रपति शाहूजी महाराज
3. सरदार पटेल का बारडोली आन्दोलन ।
4. अमर शहीद राजा जयलाल सिंह ।
5. क्रान्तिकारी डा. गया प्रसाद कटियार ।
6. अनमोल रत्न भाग – 1
7. विट्ठल भाई पटेल ।
8. अहिच्छत्रा कल और आज ।

सम्पर्क सूत्र :-

म0नं0 502, फूलबाग, किला छावनी, रामपुर रोड

बरेली (उ0प्र0)

दूरभाष : 0581-2480180, मो. 9412737400

महान क्रान्तिकारी

डॉ. गया प्रसाद कटियार

शहीदे आजम स. भगत सिंह व चन्द्रशेखर आजाद के साथी



जन्म : 20 जून 1900   मृत्यु : 10 फरवरी 1993

लेखक :

रोशनलाल पटेल

समर्पण

हमारे देश के लम्बे चले
स्वाधीनता समर में ज्ञात
अज्ञात हुतात्माओं को।

जिनके बलिदानों के बदौलत
हम आज आजादी की
सांस ले रहे हैं

एक क्रांतिकारी की सच्ची कहानी

मुद्रक एवं प्रकाशक
गंगवार प्रिन्टर्स
किला छावनी,बरेली उ०प्र०
फोन न० 0581-2480180

द्वितीय संस्करण 1000

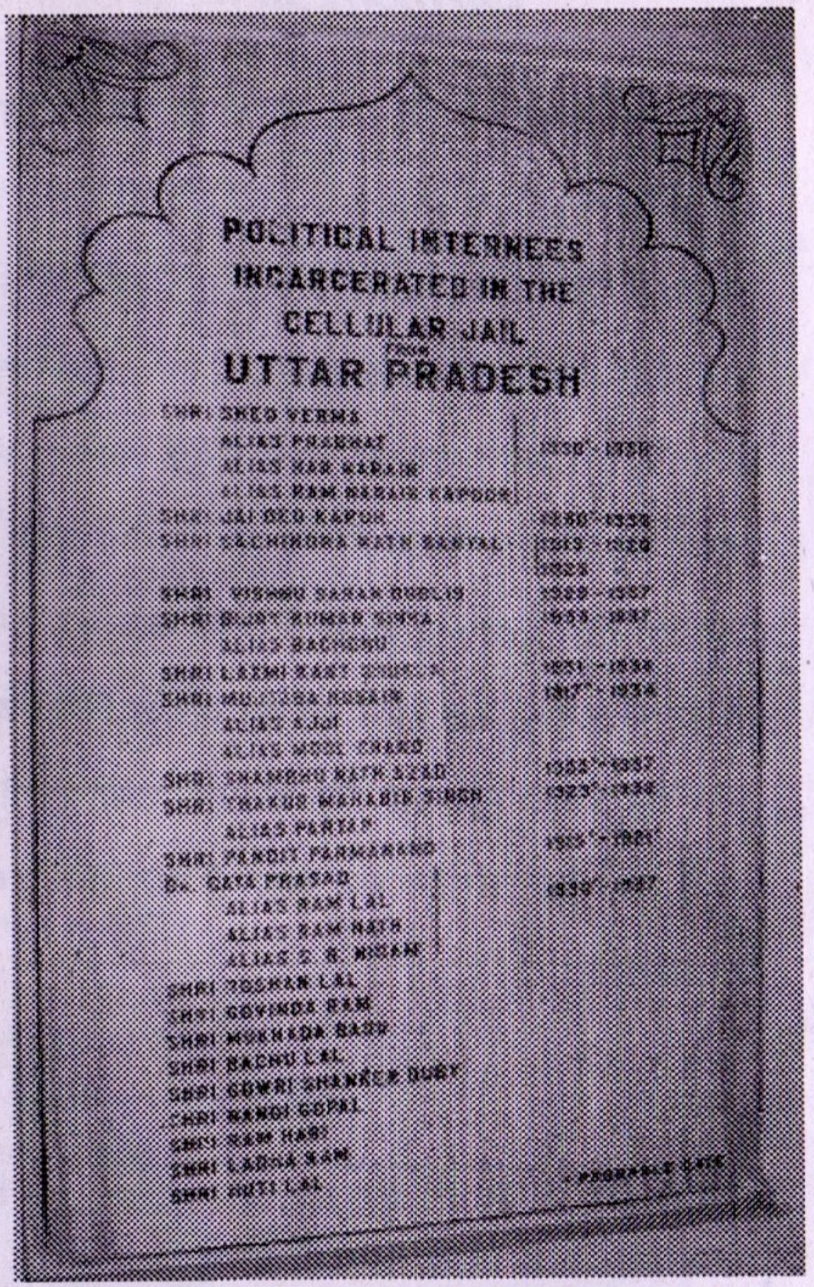
मूल्य रू० 55/-

गंगवार प्रिन्टर्स
आफसैट प्रिन्टिंग,स्क्रीन प्रिन्टिंग
कम्प्यूटर डिजाइनिंग
प्रो0 प्रेमपाल गंगवार
म.न.502 किला छावनी,
फूलवाग रामपुर रोड बरेली उ0प्र0।
फोन न.0581-2480180

इसी पुस्तक से ....

डा0 साहब को पता चला कि शादी शुदा व्यक्तियों को पार्टी के सक्रिय सदस्य के रूप में नहीं लिया जा सकता है तो वह सीधे घर आये और अपनी पत्नी श्रीमती रज्जो देवी से कहा 'मैं कान्तिकारी पार्टी का सदस्य बनना चाहता हूँ तुम अपने हाथ से अपना सिंदूर पोछ लो और समझ लो की तुम विधवा हो गई हो।'' रज्जो भाभी रो पड़ी उन्हें रोता देख डा0 साहब ने उनसे कहा – ''तुमने तो हर फैसले में मेरा साथ देने का वायदा किया था। आज यह वायदा भूल कर रोना कैसा '' रज्जो भाभी ने अपने आप को संभाल कर कहा मैं अंत तक वचन निभाऊँगी।''

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशाँ होगा।।



अंडमान निकोबार में सेल्यूलर जेल में उत्तर प्रदेश के क्रांतिकारियों के नाम का पत्थर

दो शब्द

क्रांतिकारी शिव वर्मा के अभिनन्दन ग्रंथ की तैयारी के सिलसिले में मैं पहली बार डॉ. गया प्रसाद कटियार के गाँव गया था। उनके परिवार में बीता वह पूरा एक दिन मेरी स्मृतियों की धरोहर है। उस रोज डाक्टर साहब का एक लम्बा इन्टरव्यू हमने रिकार्ड किया था। दक्षिण अफ्रीकी कांग्रेस के नेता नेल्सन मांडेला की रिहाई का समाचार वहीं उनके निकट बैठकर सुना और मैंने उनकी आंखों में झांका भी।

उनके भीतर क्रांति के वे दिन और सपने हिलारें ले रहे थे जब उन्होनें भगत सिंह और दूसरे क्रांतिकारियों के साथ क्रांति-पथ पर लम्बे डग भरे थे। स्वतन्त्रता और समाजवाद के लिए उनका कष्ट सहना,जेल जाना,भूख हड़तालें करना और छूटने के बाद स्वतन्त्र भारत में अपने सपनों के समाज को बनते न देखने की पीड़ा के बीच मुझे वे कई बार अकेले भी लगे। यद्यपि शहीदों की स्मृतियां उन्हें रोशनी और शक्ति दे रहीं थीं।

अंतिम बार उनसे हरदोई के एक आयोजन में मिला जिसके संयोजक क्रांतिकारी जयदेव कपूर थे। तब उनके घुटनों मे तकलीफ बढ़ गई थी। छड़ी का सहारा था। आंखों पर मोटे लेन्स का चश्मा जिसमें से भीतर तक भेदने वाली दृष्टि और शब्दों के लहजे में वही आत्मीयता मैंने अनुभव की।

आज भी उस क्रांतिकारी का सादगी भरा वह चेहरा अक्सर मेरे सामने आ खड़ा होता है। लगता है कि वे मेरी पीढ़ी से कुछ सवाल पूछ रहे हैं जिनके उत्तर कहाँ तलाश करूँ?

उनके सम्पूर्ण कृतित्व का मूल्यांकन स्वतन्त्र भारत में नहीं हो पाया। मैं अपनी पुस्तक "आमादेर विप्लवी"में सिर्फ उन पर एक अध्याय ही लिख पाया। श्रीयुत रोशन लाल पटेल ने अत्यन्त परिश्रम करके उन सूत्रों की तलाश करने की सार्थक कोशिश की है जो डॉ. गया प्रसाद के जीवन और कार्यों का प्रेरक ताना-बाना बनाते हैं। उनकी यह पुस्तक "लाहौर षड्यन्त्र केस" के युग की क्रांतिकारी घटनाओं को सूक्ष्मता से पिरोती और सामने लाती है।

आज कुर्सी और सत्ता की छीना-छपटी के इस निकृष्ट समय में जबकि शहीदों और क्रांतिकारियों के त्याग और बलिदान की राजनीति को प्रायः भुला दिया गया है,डॉ.गया प्रसाद जैसे बलिदानियों का स्मरण और सम्मान करना मौजूदा राजनीति को एक दिशा प्रदान करने जैसा है। इस नाते रोशन लाल पटेल की यह कृति शहीदों और क्रांतिकारियों के मिशन को ही पूरा करती है।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

-सुधीर विद्यार्थी

प्रथम संस्करण की भूमिका

डाक्टर गया प्रसाद कटियार के बारे में मैनें शिव वर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ में योगेन्द्र वर्मा द्वारा लिये गये इंटरव्यू के रूप में पढ़ा था। बाद में कानपुर के ही पटेल क्लब की स्मारिका में डा0 सुमन वाला कटियार पत्नि श्री क्रान्ति कुमार कटियार के द्वारा लिखित रज्जो दवी के सिन्दूर पोंछने की घटना के बारे में पढ़ा तो जिज्ञासा हुई थी कि डाक्टर गया प्रसाद कटियार के बारे में कुछ और जानकारी करनी चाहिए।

इस वर्ष सरदार भगत सिंह के जीवन पर आधारित कई फिल्में बनीं। जिनकी चर्चा अखवारों में भी हुई। मैंने डाक्टर कटियार के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से ऐसी फिल्मों को भी देखा जिनमें अदालत के फैसले को भी फिल्माया गया है, इनकी मैंने कई ऐसे लोगों से चर्चा की जिनकी रिश्तेदारियाँ व सम्बन्ध कानपुर में हैं। कानपुर का एक दौरा भी किया, जहाँ काफी जानकारी मिली।

मेरी जिज्ञासा बढ़ती चली गई। मुझे ज्ञात हुआ कि डाक्टर कटियार के एक रिश्तेदार बरेली के ग्राम बहरोली निवासी श्री काशीराम गंगवार हैं वे मेरे परिचित भी हैं। मैने काशीराम जी से सम्पर्क किया तो उन्होने काफी जानकारी दी। उनके माध्यम से मैं दो बार फिर कानपुर गया एवं उनको साथ लेकर सहारनपुर भगत सिंह के भाई सरदार कुलतार सिंह से मिला। इन सबको जोड़कर बनी डाक्टर साहब की जीवनी को आपके हाथों में सौंप रहा हूँ।

पुस्तक के लेखन में जिन पुस्तकों से सहायता ली गई है, उनका यथा स्थान उल्लेख कर दिया गया है। जिन महानुभावों से जानकारी ली गई है उनका भी उल्लेख यथास्थान कर दिया गया है।

मैं विशेष आभारी हूँ शहीद-ए-आजम भगत सिंह के भाई सरदार कुलतार सिंह जी का जिन्होंने बीमारी की दशा में भी मुझे पूरा सहयोग किया। मैं डाक्टर गया प्रसाद कटियार के पुत्र इंजीनियर क्रान्ति कुमार कटियार का भी विशेष आभारी हूँ जिन्होंने पुस्तक लिखने में आने जाने से लेकर मिलने मिलाने तक बराबर सहयोग किया। हिन्दी के जाने माने लेखक डा0 ब्रजलाल वर्मा का भी मैं विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने पुस्तक की प्रस्तावना लिखने का मेरा प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर प्रस्तावना लिख दी एवं पाण्डुलिपि को पढ़कर सुझाव भी दिये। पुस्तक के लिखने से लेकर आने-जाने की दौड़-धूप में प्रिय पुत्र प्रेमपाल गंगवार (एडवोकेट) का लगातार सहयोग रहा है। एवं डा0 रामदास गंगवार जी ने भी विशेष सहयोग दिया।

प्रिय पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि अगर आपकी जानकारी में डा0 गया प्रसाद कटियार से सम्बन्धित कोई संस्मरण है तो अवश्य बताये जो भी सुझाव देना चाहते है उनसे निवेदन है कि अपने सुझावों से अवगत कराने का कष्ट करें।

धन्यवाद!

रोशन लाल गंगवार
एम.ए.एल.एल.बी.
502, किला छावनी, फूलबाग, रामपुर रोड, बरेली
फोन 0581-2480180



डा. गया प्रसाद कटियार
जेल जाने से पूर्व



डा. गया प्रसाद कटियार
जेल में

डॉ. गया प्रसाद कटियार के आदर्श



शहीदेआजम स. भगत सिंह



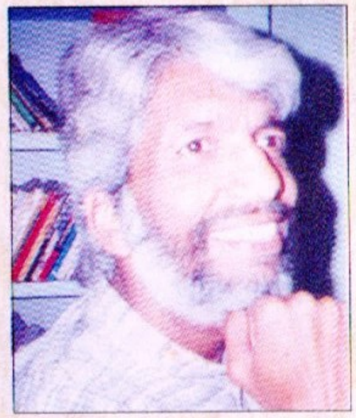
डा. गया प्रसाद कटियार
जेल में बीमार, साथ में शिव वर्मा



डा. गया प्रसाद कटियार
जेल से छूटने के बाद, साथ में सुधीर विद्या



डॉ. ब्रजलाल वर्मा
वरि. साहित्यकार, कानपुर



सुधीर विद्यार्थी
क्रान्तिकारी साहित्यकार, बरेली



स. कुलतार सिंह
शहीदेआजम भगत सिंह के अनुज



प्रो. रामप्रकाश गोयल 'सोज'
वरि. साहित्यकार, बरेली



जे.पी. सिंह, सीनियर जी.एम.,
विदेश संचार निगम, कलकत्ता



बायें से दायें : लेखक रोशन लाल पटेल, इंजी. क्रान्तीकुमार कटियार, काशीराम गंगवार, रमा देवी व निर्मला देवी

प्रथम संस्करण के विषय में सम्मतियाँ



डॉ. गया प्रसाद कटियार के गांव के पास मेरा एक शीतगृह है इसलिए उनसे काफी बातचीत होती रहती थी। वे बड़े क्रान्तिकारी थे और नितान्त सादा जीवन व्यतीत करते थे। पुस्तक में वर्णित सारे तथ्य सत्य हैं।

डॉ. सोनेलाल पटेल
राष्ट्रीय अध्यक्ष अपना दल



पुस्तक में लेखक ने हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के क्रान्तिकारी इतिहास का सटीक व सजीव चित्रण किया है। ऐसे क्रान्तिकारियों के बलिदानों के कारण ही हमारा देश आजाद हुआ।

मानसिंह पटेल
आई.टी.आई., रायबरेली



पुस्तक पढ़ी, बहुत अच्छी लगी। डॉ. गया प्रसाद कटियार हमारे देश के महान क्रान्तिकारी थे। पुस्तक में उनके जेल जीवन का चित्रण बहुत ही प्रभावोत्पादक है।

किसान सुखलाल गंगवार
धामपुर, बिजनौर



पुस्तक में डॉ. गया प्रसाद कटियार से उनकी बेटी की जेल में भेंट बड़ी ही कारूणिक है। पिता डॉ. कटियार को बेटी उमा ने पहले कभी देखा नहीं था। इस समय का चित्रण स्वभाविक ही है।

डॉ. संजय सिंह पटेल
235/1, अनन्त नगर, नारपोली (भिवंडी) महाराष्ट्र

यह क्रान्ति कथा

इस पुस्तक को मैने आद्यन्त शब्दशः क्या अक्षरशः देखा है। श्री रोशन लाल गंगवार ने इस पुस्तक को लिखकर न केवल क्रान्तिकारी इतिहास को अपना अमूल्य योगदान दिया है, प्रत्युत उन्होंने कठिन क्रान्ति धर्मी डा0 गया प्रसाद जी कटियार के पावन क्रान्ति वृत्त को सर्व सामान्य के समक्ष ऐसी औपन्यासिक शैली में प्रस्तुत किया है कि इसे पढ़कर प्रत्येक पाठक का हृदय करूणाभिभूत तथा मर्म विगलित हो जायगा। यह क्रान्ति कथा यद्यपि असंभाव्य उपवृत्तो की योजना के कारण कभी-कभी काल्पनिक सी प्रतीत होने लगती है। किन्तु पाठक निर्भ्रान्त रूप से यह स्वीकार करें कि पुस्तक में वर्णित समग्र वृत्त डा0 गया प्रसाद कटियार के जीवन का घटित वस्तु सत्य है। रोशन लाल जी ने डा. गया प्रसाद के द्वारा सम्पादित बलिदानी कृत्य निचय को जिस शैली में चित्रित किया है, वह तो अपने में करूणोत्पादक है ही - डा.कटियार का खतरनाक कार्यकलाप भी हमारे संवेदन को प्रखर बनाकर हमारे हृदय में अतीव गहरी वेदना उत्पन्न कर देता है।

कानपुर देहात के एक सम्पन्न सामन्त परिवार में जन्म लेकर भी डा. गया प्रसाद कटियार ने देश हित में क्रान्ति पथ का वरण किया। कवि की यह उक्ति डा. कटियार के जीवन पर पूर्णतः सटीक बैठती है-'स्वार्थ' प्रकुर्वन्ति परस्य चार्थम् ' अर्थात् दूसरों का कल्याण ही सत्पुरूषों का स्वार्थ होता है। गृहस्थी और ग्रहणी, परिवार और सम्पत्ति सभी का त्याग करके एक युवा, वीतराग सन्यासी की भांति क्रान्ति के योद्धाओं के साथ अंग्रेजी शासन के विरूद्ध विद्रोह के स्फुलिंग दर-दर बिखरते हुए एक विपन्न साधनहीन आजादी का

दीवाना बना ग्राम-ग्राम जंगल-जंगल घूमता रहा तथा स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए क्रान्ति तथा क्रान्तिकारियों के लिए विद्रोह के उपकरण जुटाता रहा। अभाव डा. कटियार का अपना सृजन था और प्रभाव उनकी अर्जित पूंजी। अपने निरपेक्ष त्याग से उन्होंने सच्चे त्याग की महिमा को प्रमाणित कर दिया। उनका अन्तः करण चतुष्टय ही पूर्णतः वीतराग था। कभी-कभी ऐसे व्यक्ति भी देखने में आते हैं। जिनके पास रहने को एक झोपड़ी नहीं हैं किन्तु महलों को त्याग देने की बात करते हैं वस्तु का अभाव किसी व्यक्ति का त्याग नहीं हो सकता। सब कुछ हो और अपने पास कुछ न रखे, इसी को त्याग कहते है।

राजनैतिक विचारधारा में डा. कटियार कार्ल मार्क्स के दर्शन में निष्ठा रखते थे। वे समाज की बहुमुखी विषमताओं एवं असमानताओं को निर्मूल और निराकृत करने में ही लोकमंगल मानते थे। इसीलिए यावज्जीवन साम्यवादी समाजवादी क्रांतिकारी रहे। उनके लगभग सभी साथी जैसे भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त, चन्द्रशेखर आजाद इसी विचारधारा के पोषक थे। लाहौर षड्यंत्र केस में 12 क्रान्तिकारियों को ब्रिटिश अदालत द्वारा सजा सुनाई गयी। कुछ को फांसी, कुछ को आजीवन कारावास और कुछ को काला पानी। डा. गया प्रसाद कटियार इन्हीं बारह में एक थे। इनको आजीवन कारावास तथा काला पानी का दण्ड घोषित हुआ।

अपनी सुहागिन पत्नी के हाथों उनका सुहाग सिन्दूर पुछवाना डा.कटियार के ही बूते की बात थी। उस सुहागिनी ने भी अपनी मांग का सिंदूर अपने हाथ से पोंछते हुए कहा कि " ऐ मेरे वीर पतिदेव, देश के लिए कुछ भी करो, मुझे सब स्वीकार है।" धन्य

हैं ऐसी देवियाँ जिनके नैतिक अभिक्रम पर देश के बलिदानियों ने अपने प्राणों तक की आहुति दे दी।

डा. गया प्रसाद जी कटियार के दो पुत्रों के नामों में भी इसी क्रान्ति मूलक संघर्ष की ध्वनि विद्यमान है। बड़े का नाम है क्रान्तिकुमार और छोटे का नाम है स्वतंत्र कुमार। मैं डा.कटियार के अनुज तुल्य क्रान्तिकारी स्व. शिव वर्मा से निकट परिचित था। श्री सुरेन्द्र पाण्डेय "दैनिक विश्वमित्र" के प्रारम्भिक सम्पादकीय विभाग में मेरे साथ ही थे। काकोरी केस के मुक्त राजबन्दी पं.राम दुलारे त्रिवेदी से मेरी पारस्परिकता थी। मन्मथनाथ गुप्त को मैं निकट से जानता था, वे मुझे बिल्कुल नहीं जानते थे। किन्तु डा. कटियार जैसे त्यागवीर महान क्रान्तिकारी से मेरा कभी साक्षात् नहीं हो सका, इसे मैं नियत की क्रूर लीला और परिस्थितियों का कुचक्र मानता हूँ अथवा इसे मेरा अनजाना अपराध तथा प्रमाद कहा सकता है।

मैं बन्धुवर रोशनलाल जी गंगवार को इस पुस्तक पर बधाई देता हूँ, इस कामना के साथ कि वे अपनी लेखनी से इसी प्रकार के अछूते प्रसंगों का निस्सरण करते रहें। कानपुर के लिये ही नहीं, सारी दुनिया के लिए रोशन लाल जी ने डा. कटियार का बलिदानी वृत्त रोशन कर दिया। स्व. डा. गया प्रसाद कटियार जी की पुण्य स्मृति ही अब उनके स्नेहियों का एक मात्र संबल है।

डा. ब्रजलाल वर्मा
पूर्व सदस्य, उ.प्र.लोक सेवा आयोग
एवं पूर्व अध्यक्ष, उ.प्र. शिक्षा आयोग
666-ए,शिवपुरी,जी.टी.रोड,
कानपुर -,फोन-410164

विषय प्रवेश

अंग्रेजो से भारत को स्वाधीन कराने की एक महत्वपूर्ण और जरूरी लड़ाई महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसक ढंग से कांग्रेस ने लड़ी थी। उस का अपना विशिष्ट महत्त्व है। हो सकता है वह लड़ाई न लड़ी जाती तो भारत आजाद न होता लेकिन भारत की आजादी की लड़ाई सिर्फ एक ही तरीके से नहीं लड़ी गई थी। सशस्त्र क्रांति मे विश्वास रखनेवाले क्रांतिकारियों ने भी देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी थी। इस लड़ाई को विदेशों में रह रहे क्रांतिकारियों ने भी लड़ा था। उनका त्याग और बलिदान हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई में अपना विशेष स्थान रखता है।

हमारे देश के लम्बे चले स्वाधीनता संघर्ष में हजारों बलिदान हुए है कुछ पुलिस की गोली से मारे गये, कुछ भूख-हड़तालों में शहीद हो गये कुछ फांसी के फंदे पर या पेड़ों पर लटका दिये गये। इनमें से बहुत कम के नाम हमें ज्ञात है। अधिकांश लोगों के नाम अज्ञात है। देश की स्वतंत्रता के पश्चात् इन्हें सूचीबद्ध किया जाना चाहिए था जो नहीं हो सका। अगर इस ओर हम गम्भीर नहीं हुए तो थोड़े दिनों बाद इन्हें हमारे बच्चे भूल जायेंगें।

स्वतंत्रता के पश्चात् सरकारों का अधिकतर प्रचार कांग्रेस की नीतियों के चारों ओर घूमता रहा। आम आदमी का ध्यान स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी पहलू की ओर नहीं गया क्योंकि या तो ऐसा साहित्य सृजित ही नहीं हुआ अथवा आम आदमी की पहुंच से दूर रहा। कहा जा सकता है कि यह नेताओं की सोची-समझी चाल थी।

इस सबके बावजूद शहीदे आजम भगत सिंह का नाम भारत के हर आदमी की जुबान पर व उनकी फोटो हर पार्टी के कार्यालय में देखी जा सकती है। हम दावे से कह सकते हैं कि देश के किसी

भी अकेले व्यक्ति को इतनी ख्याति नहीं मिली जितनी भगत सिंह को मिली। आज कल शहीदे आजम भगत सिंह के नाम पर बनने वाली फिल्मों की बाढ़ सी आ गई है, जिनके माध्यम से एवं अखबारों के विश्लेषण से ही लोगों को ज्ञात हुआ कि तत्कालीन बड़े नेताओं ने भगत सिंह व उनके साथियों की सजाऐं कम कराने का कोई प्रयास नहीं किया था। 5 मार्च 1931ई.को गांधी-इरविन समझौता हुआ। उसमें भगत सिंह आदि की रिहाई पर चर्चा नही हुयी।

अब जब आपको यह पता लगेगा कि भगत सिंह को इतना ऊँचा उठाने वाले उनकी रक्षा का कवच बनने वाले तथा उनके हर केन्द्र को पुलिस की नजरों से बचाने वाले अलग-अलग नामों से देश के लगभग डेढ़ दर्जन स्थानों पर बाहर दवाखाना और भीतर बम फैक्ट्री चलाने वाले डाक्टर गया प्रसाद कटियार थे तो आपकी निश्चित जिज्ञासा होगी कि डा0 गया प्रसाद कटियार कौन थे? कहाँ थे? उनका क्या हुआ और उन्होंने क्या-क्या कार्य किये? इत्यादि-इत्यादि।

डा0 गया प्रसाद कटियार का जीवन चरित्र क्रान्तिकारी घटनाओं से निर्मित परिस्थिति जन्य वृत्तों व उप वृत्तों की गाथा है। उसकी जानकारी देने से पहले हम पाठकों को बता देना चाहते है कि लाहौर षडयंत्र केस क्या था, और उसमें किस-किस को कितनी-कितनी सजाएँ हुई?

3 फरवरी सन् 1928ई0 में राजनीतिक सुविधायें देने का नाटक करने साईमन कमीशन भारत आया। कांग्रेस सहित सभी राजनीतिक दलों ने उसका वहिष्कार किया। 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर में साइमन कमीशन के ऐसे ही वहिष्कार आन्दोलन के समय पुलिस लाठी चार्ज से लाला लाजपत राय को बहुत चोटें आयी।

लाला लाजपत राय ने कहा-''मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में कील सिद्ध होगी।'' इन्ही चोटों

के कारण ही 17 नवम्बर को उनकी मृत्यु हो गई। देशवासियों को लाला जी की शहादत असह्य हो गई। जहाँ-तहाँ विरोध में प्रदर्शन हुए भगत सिंह और उनकी टोली ने तय किया कि लाठी चार्ज का आदेश देने वाले लाहौर के पुलिस अधीक्षक स्काट अथवा लाठी चार्ज करने वाले पुलिस उपाधीक्षक जे.पी.सांडर्स को इसकी सजा दी जाये। इसको विस्तार से आगे लिखेगें। इसी योजना में भगत सिंह और राजगुरू अपने साथियों की सहायता से सांडर्स की हत्या कर लाला जी की शहादत का बदला लेने में सफल हो गये। इसी को लाहौर षडयंत्र केस का नाम दिया गया।

इस केस में दो अन्य केस भी जुड़े हुए है। 1-पंजाब नेशनल बैंक लाहौर की डकैती 2- असेम्बली बम केस। यद्यपि इन केसों की सुनवायी अलग-अलग भी हुयी थी लेकिन सांडर्स हत्या कांड को मिलाकर लाहौर षडयंत्र केस कहलाया।

लाहौर षड़यंत्र केस का निर्णय

यह मुकद्मा भारतीय दंड विधान की धारा 121,121ए,122,123,302 तथा 120 वीं, विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 4,5,6 व 7 के अधीन 15 अभियुक्तों पर चला। जिनकें नाम थे-भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, किशोरी लाल,महावीर सिंह, विजय कुमार सिन्हा,शिव वर्मा,डा.गया प्रसाद कटियार, जयदेव, कमल नाथ तिवारी, कुन्दन लाल, प्रेमदत्त,देशराज,अजय कुमार घोष तथा जितेन्द्र सान्याल थे।

मुकद्में में जयगोपाल,फणीन्द्र नाथ घोष,मनमोहन बनर्जी,हंसराज बोहरा तथा ललीत मुखर्जी सरकारी गवाह बन गयें। यह मुकद्मा 5 मई 1930 को शुरू हुआ। मुकद्मे के जज जी.सी.हिल्टन,अब्दुल कदीर तथा जे.के.टप्प थे।

भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को असेम्वली बम कंड मे पहले ही सेशन जज से 12 जून 1929 को आजन्म कारावास की सजा हो चुकी थी और अपील में हाईकोर्ट लाहौर ने 13 जनवरी 1930 को सेंशन जज के सजा के आदेश को वहाल रक्खा था। इस प्रकार वे दोनों भी लाहौर षडयंत्र केस की कार्यवाही में जेल से ही सम्मिलत कर लिये गये।

क्रान्तिकारी अभियुक्तों ने मुकद्में का बहिष्कार किया और न्यायालय में हाजिर नही हुये। वे जेल में भूख हड़ताल पर बैठ गये। मुकद्मे में सरकार की ओर से 457 गवाह पेश किये गये। क्रान्तिकारियों ने किसी भी गवाह से जिरह नहीं की। गवाहों की गवाही क्रान्तिकारी अभियुक्तों की गैर हाजिरी में ली गयी। अभियुक्तों ने न्यायालय में ब्यान देनें से इन्कार कर दिया था। इस प्रकार किसी अभियुक्त का ब्यान नहीं लिया जा सका।

अभियुक्तों की संगठित कार्यवाहियों को देखते हुए सरकार ने असैम्बली मे आर्डीनेंस लाने की कोशिश की लेकिन तत्कालीन अध्यक्ष विट्ठल भाई पटेल के सरकार विरोधी रवैये के कारण सफलता नहीं मिली।

गर्वनर लार्ड इरविन ने **"लाहौर षडयंत्र केस आर्डीनेन्स"** के नाम से 1 मई 1930 को एक विशेष आदेश जारी किया इसके अनुसार तीन जजों का स्पेशल ट्रिब्यूनल नियुक्त किया गया। इस ट्रिब्यूनल को एक विशेष न्यायालय के रूप के अन्तर्गत बनाया गया था अध्यादेश के द्वारा न्यायालय को यह शक्ति प्रदान की गयी थी कि यदि अभियुक्तगण अपना ब्यान नही देते हैं तो उनकी अनुपस्थिति में,सफाई के वकीलों और गवाहों के उपस्थित हुए बिना और सरकारी गवाहों पर जिरह के अभाव में भी मुकद्मे का फैसला एक-तरफा कर सकता है।

इस मुकद्मे का फैसला 7 अक्टूबर 1930 को सुनाया गया। जिसमें भारतीय दंड विधान की उपरोक्त धाराओं के अर्न्तगत निम्नलिखित लोगों को उनके नाम के सामने अंकित सजाऐं दी गईः-

1.सर्वश्री भगत सिंह	सजाय-ए-मौत या फांसी
2.सर्वश्री शिवराम हरि राजगुरू	सजाय-ए-मौत या फांसी
3. सर्वश्री सुखदेव	सजाय-ए-मौत या फांसी
4. सर्वश्री शिव वर्मा	कालापानी
5. सर्वश्री गया प्रसाद कटियार	कालापानी
6. सर्वश्री जयदेव कपूर	कालापानी
7. सर्वश्री कमल नाथ तिवारी	कालापानी
8. सर्वश्री किशोरी लाल	कालापानी
9. सर्वश्री विजय कुमार सिन्हा	कालापानी
10. सर्वश्री महावीर सिंह	कालापानी
11. सर्वश्री कुन्दन लाल	7 साल कैद व मशक्कत
12. सर्वश्री प्रेमदत्त	5 साल कैद व मशक्कत

क्रान्तिकारी देशराज,अजयं घोष और जितेन्द्र नाथ सान्याल को सबूतों के अभाव में छोड़ दिया गया। विशेषाधिकारों से युक्त ट्रिव्यूनल के फैसले की अपील नहीं की जा सकती थी इसलिए उपरोक्त लोगों को उनके आगे निर्दिष्ट सजाऐं हुई।

द्वितीय संस्करण लिखते समय क्रान्तिकारी शिव वर्मा के भतीजे योगेन्द्र वर्मा ने उपरोक्त केस के निर्णय की प्रतिलिपि उपलब्ध करायी जिसका अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद तथा उसका उपरोक्त भावार्थ बरेली के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा साहित्यकार प्रोफेसर राम प्रकाश गोयल जी करने मे विशेष सहायता की।

महान क्रांतिकारी डा0 गया प्रसाद कटियार

प्रस्तुत पुस्तक के नायक महान् क्रांतिकारी डा0 गया प्रसाद कटियार को 93 वर्ष तक जीवन जीने का अवसर मिला। उनके जीवन का एक-एक दिन त्याग, तपस्या व इन्कलाब की कहानी है। जिनका मूल्यांकन करना मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के बस की बात नहीं है लेकिन अपनी युवा पीढ़ी तथा बच्चों तक डा0 गया प्रसाद कटियार की जीवनी के माध्यम से क्रान्तिकारी आन्दोलन की एक झलक पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं।

अध्ययन की सुविधा के लिए उनके जीवन को हमने चार भागों में बांटकर लिखा हैं।

1. जन्म से शिक्षा तक - (सन् 1900 से 1921 तक)
2. राजनीति में प्रवेश से क्रान्तिकारी गतिविधियों तक - (सन् 1921 से 1929)
3. गिरफ्तारी से रिहाई तक - (1929 से 1946 तक)
4. रिहाई से मृत्यु तक - (1946 से 1993 तक)

भाग - एक

जन्म से शिक्षा तक

उत्तर प्रदेश में कानपुर जिले की तहसील बिल्हौर के पास 3 किमी0 की दूरी पर ग्राम खजूरी खुर्द में महादीन कटियार सुप्रसिद्ध जमींदार थे। उन्होंने सन् 1857 ई0 के स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया था। उन दिनों कानपुर में बिठूर में पेशवा के

निवास से आन्दोलन का संचालन किया जा रहा था। गांव-गांव के लोग अंग्रेजों के खिलाफ घमासान लड़ाई लड़ रहे थे।

महादीन कटियार के तीन पुत्र क्रमशः केदार नाथ, मौजीराम और गंगाचरन थे इन्हीं में से मौजीराम कटियार को 20 जून सन् 1900 ई0 को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, चूंकि माँ-बाप ने पुत्र प्राप्ति हेतु गया जी का प्रसाद बोला था इसलिए उस बच्चे का नाम गया प्रसाद रखा गया। गया प्रसाद के पिता जी ने पुत्र के जन्म पर खुशियाँ मनायी, जन्म-पत्री बनवाई गई, इस बारे में ज्योतिषियों का विचार था कि यह बच्चा देश-विदेश में एक दिन नाम पैदा करेगा।

माता-पिता ने बेटे के लालन-पालन और शिक्षा दीक्षा की उत्तम व्यवस्था की। कहा जाता है कि ठीक ऐसी ही भविष्य वाणी महात्मा बुद्ध के जन्म के समय भी की गयी थी। उनके बारे में प्रसिद्ध है कि बाल्यावस्था में सिद्धार्थ को मन बहलाने के लिए रथ से घुमाया जाता था। लेकिन सिद्धार्थ की दृष्टि दीन दुखियों पर ही पड़ती थी। ठीक इसी प्रकार गया प्रसाद पर राजसी लालन-पालन का विपरीत ही प्रभाव हुआ।

बच्चे अपने दादा-दादी से कहानी सुनने के शौकीन होते हैं। आजकल दादा-दादी बच्चों को कहानी सुनाने की हठ करने पर उन्हें टी.वी. के सामने बैठा देते हैं पर उन दिनों बच्चों की हठ पर उन्हें कहानी सुनानी ही पड़ती थी, सो जैसे ही गया प्रसाद दादा महादीन से कहानी सुनाने की हठ करते तो दादाजी उन्हें पूरे सन् 1857 ई0 का स्वतंत्रता संग्राम जैसा उन्होने देखा, सुना या भाग लिया था सुना दिया करते थे। इसीलिए गया प्रसाद के बाल मन को सन् 1857 ई0 की कहानी जुवानी याद हो गयी थी।

बड़े होने पर वे पिता जी से देश की गुलामी, अंग्रेजों के रहन-सहन और मजदूर किसानों की बेबसी पर ऐसे सवाल कर देते थे कि जिनका उत्तर देना कठिन हो जाता था। ऐसी दशा में श्रोता दंग रह जाते थे।

पिताजी मौजीराम उन्हें पढ़-लिखकर डाक्टर, इंजीनियर या बड़ा अफसर बनने के सपने दिखाकर शान्त कर देते थे। यह उनकी मृग तृष्णा मात्र थी। वे भी जानते थे कि बेटे पर इन बातों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ रहा है लेकिन फिर भी उन्होंने बेटे की बातों को मानने में ही भलाई समझी। उन्होंने सोचा कि समय सब कुछ ठीक कर लेता है, जब यह भी पढ़-लिखकर होशियार हो जायेगा, तो आदर्श की बातें भूल जायेगा।

बालक गया प्रसाद में परिवर्तन उल्टा ही हो रहा था। कह सकते है कि गया प्रसाद पर दादा के विचारों का प्रभाव अधिक हो रहा था। वे जब स्कूल से छुट्टियों में वे गाँव आते तो मजदूरों, किसानों और अछूतों में घुल-मिल जाते।

देहातों में अछूतों के लिए वह दौर बहुत ही कष्टकर था।। उन दिनों अछूतों को छूना और उनका छूआ खाना बहुत बड़ी बात थी। लोग उनकी परछांई से भी नफरत करते थे। इतने पर भी एक बड़े जमीदार का बेटा गरीबों में बैठे, किसानों में बैठे तो माना जा सकता है कि सबसे हिलना मिलना ठीक है। अन्य लोग भी बात करना चाहाते है क्योंकि वह शहर में रहता है। मिलने वाले लोग उसका हाल चाल पूछते हैं कुछ हम उम्र साथी नयी जानकारी लेने के लिये भी बात करते हैं, कुछ को हाल चाल जानने की जिज्ञासा होती है, कुछ लोग गाँव के रिश्ते से या परिवार के चाचा ताऊ लगते

हैं, इसलिए उनमें हिलना मिलना और बैठना उचित माना जा सकता है। लेकिन अछूतों में बैठना,उनसे बात करना या मजदूरों में वैठकर बात करने से गया प्रसाद को क्या मिल सकता था?

आज कल विज्ञान व संचार की उन्नति चरमोत्कर्ष पर है पहले के अपेक्षाकृत शिक्षा भी बढ़ी है इसके बाद भी रिश्ते रसूखों में कोई बड़ा परिवर्तन नही हुआ है। अगर किसी अछूत/दलित का लड़का पढ़ लिख गया अथवा नौकरी में आ गया तो यह तरक्की केवल उसकी अपनी निजी तरक्की हुयी। समाज के आम लोगों की दशा पर उसका कोई प्रभाव नहीं दिखायी देता है आज भी दलितों के यहाँ कोई नही बैठता है स्वयं उन्हें भी दूसरों के खेतों में या घरों मे काम करना पड़ता है तभी दो जून की रोटी मिलती है तो समझा जा सकता है कि 1916 में उनके घर उनसे मिलने कौन जाता होगा। अगर यही सब ठीक से होता तो उसी काल मे शाहू जी महाराज और लोकमान्य तिलक के बीच जीवनभर विवाद क्यों होता रहता?

शाहू जी जीवन भर सभ्यता के विकास के लिए लड़ते रहें। वे समाज मे अंध-विश्वास समाप्त करना चाहते थे तथा अशिक्षा को समाप्त करना चहाते थे उन्होंने अछूतों/दलितों के बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा प्रारम्भ करायी। इसमे तिलक जी महाराज की धर्म की ध्वजा पर कहाँ आंच आ रही थी लेकिन तिलक जी जैसे विचारों के लोग अच्छी तरह जानते थे कि अगर शिक्षा के द्वार सभी को एक समान खोल दिये गये तो अछूतों के कानों मे शीशा पिघलाकर कौन डालेगा? है न धर्म पर धव्वा लगाने की योजना।

डा. गया प्रसाद तो स्वयं भी पढलिख गये और अछूतों को कुछ न कुछ पढाते ही रहते थे, इसलिए गांव के लोग उनसे चिढ़ते

भी थे। उनका कहना था कि " स्कूलों मे भी अछूत छात्रों को अलग से पट्टी बिछायी जाती है, प्यास लगने पर भी उनकों कोई दूसरा व्यक्ति ही नल चलाकर पानी पिलाता है वे नल को स्वयं नहीं छू सकते हैं न गाँव के सार्वजनिक कुओं से पानी ही ले सकते हैं उनके कुयें अलग है। गया प्रसाद जब उनके यहां वैठते हैं तो पानी भी पी लेते होंगे। आर्य समाजी लोग उनके साथ बैठने-उठने व खाने-पीने की बातें करके हमारा धर्म भ्रष्ट कर रहें हैं और फिर गया प्रसाद से तो बातों मे कोई जीत ही नही सकता"

उपरोक्त बातों को लेकर गाँव के दकियानूसी विचारों वाले लोग मौंजीराम से उनके बेटे की शिकायत करते तो वह बेटे पक्ष लेते हुए कह देते "शहर में रहता है वहां की हवा लग गई है। आर्य समाज में जाने में लगा है।" लेकिन गाँव के अधिकांश लोगो मे डा. गया प्रसाद कटियार चर्चा का विषय बन गये। कितने ही लोंग आपस मे कहते थे कि जमींदार साहब का बेटा पढ़ लिख कर सनकी हो गया है जमींदार नहीं होते तो उनका हुक्का पानी बन्द किया जा सकता था।

ऐसा भी नहीं था कि पिता को डा. गया प्रसाद के व्यवहार की पूरी जानकारीं नही हुयी थी कह सकते हैं कि नाम तो पिता का मौजीराम था लेकिन काम डा. गया प्रसाद का मौजी राम था। उनके सबालों का जबाव देने से बचने के लिए ही उनके साथ छेड़ खानी नही की जाती थी और यह मान लिया गया कि आर्य समाजी लोग इस प्रकार के ही हो जाते है।

16 वर्ष की अवस्था आते-आते युवाओं के विचारों में अनेक परिवर्तन होने लगते है। इस आयु में बुद्धि कच्ची होती है छोटी-छोटी

बातों पर युवा मन क्रांन्तिकारी हो जाता हैं वह अचानक ही गम्भीर फैसले लेने लगते है। इस समय युवाओं को अपनी बात ही अच्छी लगती है बुजुर्गो का समझाना उन्हें अच्छा नही लगता। बुजुर्गो के विचार दकियानूसी लगते है यही वो समय है जब किसी नौजवान को अपना भविष्य बनाना होता है। इस समय अनुभवी अविभावक अपने बच्चों को सही रास्ते पर डालने की कोशिश करते है। लेकिन नौजवान दुनिया को अपने विचारों के अनुकूल परिवर्तित देखना चाहता है वह पहाड़ को उखाड़ फेकने की शक्ति रखता है। इसी को कहते है ***'जिस ओर जवानी चलती है उस ओर जमाना चलता है।'*** उसका हृदय आदर्श को यथार्थ और यथार्थ को आदर्श मे बदल देना चाहता है।

जिस समय गया प्रसाद ने मैट्रिक पास किया था उस समय मैट्रिक तक पढ़ा लिखा लड़का देहात में देखने को नहीं मिलता था। गाँव के लोग तो वही पुरानी घिसी-पिटी बातें करने के अभ्यस्त थे। जमींदार की चौपाल पर आना उसी की तम्बाकू पीना और हां मे हां मिलाना उनकी दिनचर्या के महत्वपूर्ण कार्य थे। वेचारे मजदूर किसान इससे अधिक कर भी क्या सकते थे? दिन तो दो जून की रोटी कमाने मे गुजर जाता था। अगर किसी ने कुछ आगे बढ़ने या उनके सुधार की बातें बतायी भी तो उसमें भी उन्हें विश्वास नही होता था। कह सकते है कि वह बातें भी उनकी समझ से बाहर की थी।

अंग्रेज भारत से भागे या न भागें किसानों की दुनिया तो गॉव के जमीदार के चौखट के चारों ओर घूमती रहती थी। वह न तो पढ़े न लिखे उन्हें तो उनके पिता ने बता रक्खा है 'मेहनत करों ईमानदारी से रहों किसी को धोखा मत दो,किसी को बुरा भला मत

कहों आदि-आदि।' सो उन्होंने कभी अपने पिता की बात को नही टाला। डा0 गया प्रसाद तो पढ़े लिखे एवं योग्य युवा तथा डाक्टर थे। वे शाम को इक्ट्ठे होने वाले बढ़े बूढ़ो मे अपनी बात रखते तो वे लोग भी उनकी वात को गौर से सुनते थे।

डा.गया प्रसाद अब और तेजी से अंग्रेजों का विरोध करने लगे तथा किसान मजदूरों व दलितों का पक्ष लेने लग गये। डा0 सहाब रास बिहारी बोस के विचारो से पूर्णता सहमत थे वे अपने लिए आजादी की लड़ाई मे पूरी तरह झोंक देना चाहते थे उनका कहना था " फांसी के फंदे पर झूलने के उतावलेपन से बेहतर है कि हम दुश्मन को छकाने और थकाने की रणनीति बनाये और उसके शिकंजे मे फंसने से पहले दुश्मन के सामने इतने दुश्मन खड़े कर दें दिये कि उसको असली दुश्मन की पहचान ही न हो सकें (डा0 साहब कि पांण्डुलिपि से) इस प्रकार डा0 साहब ने सारा समय आजादी के लड़ाकों को एक्त्र करने मे लगाना शुरू कर दिया।

पिताजी ने सोचा कि बेटे को कैसे रास्ते पर लाया जाय। डा0 गया प्रसाद के ही शब्दों में -"जमीदार होने के कारण मेरे पिताजी पर अंग्रेज अफसरों का दबाब रहता था वैसे भी वे सामन्ती विचारध ारा के थे। सन् 1918 ई0 की बात है मैंने हाईस्कूल करने के बाद पी.एम.पी. का कोर्स करके गांव में ही दवाखाना खोल दिया था दवाखाना अच्छा चलने लगा अचानक मेरे दिमाग पर राजनीति का भूत सवार हो गया। उन दिनों आर्य समाज का बहुत जोर था मैं नियमित रूप से उसकी बैठकों में जाने लगा। राजनैतिक और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की पहले पहल प्रेरणा मुझे वहीं से मिली।"

डा0 गया प्रसाद कटियार का विवाह बचपन में ही हो गया था उनके पिता बड़े जमींदार थे उन दिनों जमींदार वर्ग स्वजातीय जमींदारों में ही बच्चों का विवाह करते थे। इसीलिए बच्चों के मेल का नहीं, जमीदारीं का मेल देखा जाता था। कानपुर में शिवराज पुर कस्बे के पास कटियार लोगो का मशहूर गांव बैरी है इस में एक बड़े जमींदार सुखदेव प्रसाद कटियार थे। उनकी 7 वर्षीय पुत्री रज्जो से 11 वर्षीय गया प्रसाद का विवाह कर दिया गया था। दोनों ही शादी के प्रति अबोध थे। दो बड़े जमीदारों ने घोड़े-गाड़ी का प्रदर्शन कर जिले की मशहूर खर्चे वाली शादी की थी।

उन दिनों छोटे बच्चों की शादी करने का रिवाज था लोग कहते थे कि लड़का अगर ज्यादा बड़ा हो गया तो उसकी शादी ही नही होगी। लड़की की तो आठ वर्ष की आयु मे ही शादी करना धर्म के अनुसार था लोगों को अपने बच्चों की पढ़ायी लिखायी की चिन्ता नही होती थी क्योकि स्कूल ही नही थें चिन्ता थी तो केवल एक सिर्फ उनकी शादी की। अतः मौजीराम भी अपने गया प्रसाद का विवाह करके मौज में थे लेकिन अब इस बिगड़ैल बालक को कैसे सुधारें? उन्हें लगने लगा कि बहुत जल्दी अंग्रेजी हुक्मरानों का कहर उनके घर पर बरसने बाला है। बेटा बड़ा विचारक है अगर जेल चला गया तो समाज के लोग क्या कहेंगे? बैसे भी सब जगह डा.गया प्रसाद की चर्चा होने लगी थी कुछ लोग फुसफुसाते थे कि गया प्रसाद का सम्बंध कांग्रेसियों से हो गया है।

"पिताजी ने सोचा कि इस लड़के को अंग्रेजी बेड़ियां लगे इससे पहले ही गृहस्थी की बेड़ियाँ डाल दी जायें।" इसीलिए डा0 गया प्रसाद का गौना कर दिया गया। एक बार फिर घोड़ा गाड़ी व

धूम-धड़ाके का प्रदर्शन हुआ। डा.गया प्रसाद को प्रसन्न करने हेतु पिता जी ने भरपूर खर्च किया।

गौना हो गया, बहू घर में आई वह रूप रंग में ठीक थी। उन दिनों महिलाओं की पढ़ाई लिखाई का रिवाज नहीं था। इसीलिए वह भी अनपढ़ थी लेकिन पति को परमेश्वर मानने की शिक्षा उन्हें मायके से मिली हुयी थी। उस पर पति डाक्टर और परिवार जमींदार। घर में माया का आगम और बड़ी बहू, घर की नई मालकिन रज्जो देवी, दिन भर काम धन्धे में लगी रहती। ऐसी ही बहुओं के लिये पास पड़ोस की अन्य महिलायें कहती है" बहू क्या है लक्ष्मी है।" लक्ष्मी घर मे आयी और लक्ष्मी घर मे लायी। ऐसी बहू रज्जों के व्यवहार से सभी खुश थे। मां बाप जितने बेटे से शंकित रहते थे। उतने ही बहू से खुश रहते थे।

गृहस्थ जीवन भी डा.साहब का खुशी से चलने लगा। घर वालों को लगा कि अब सब ठीक-ठाक है पर इस से भी डा0 गया प्रसाद कटियार के विचारों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ वे अपने विचारों को मरीजों व मिलने वाले लोगों के सामने खुलकर रखते, नियमित आर्य समाज जाते तथा गुलाम भारत को आजाद कराने का सपना संजोये बिना इस भय के कि भविष्य में क्या होने वाला है, क्रान्ति की बातें करते रहते थे। लेकिन इसके बाद भी डा. गया प्रसाद के व्यवहार से सभी लोग खुश थे।

कहा जाता है कि हकीम डाक्टर अपनी दुकान अच्छी चलाने के लिए लोगो को मुफ्त मे चूर्ण खिलाते है। डा. गया प्रसाद के यहां जो मरीज आता था वह आधा तो उनकी बातें सुनकर ही ठीक हो जाता था। वे एक से बात करते तो चार और सुनते। वे फीस भी

दूसरे डाक्टरों की अपेक्षा कम लेते थे इसलिए दवाखाना खूव चल निकला। लेकिन डा. साहब का यह कहना कि-" विवेक परायण पुरूष जीवन की वेदी पर सिद्धांतों की नही अपितु सिद्धान्तों की वेदी पर जीवन की बलि देते है।" उनके पिता जी को उलझन पैदा किये रहता था उन्हें डा.साहब के विचार जग व्यवहार के प्रतिकूल लगते थे।

एक दिन पिता के सामने विषम परिस्थिति खड़ी हो गई। बेटे पर गृहस्थी लादने का प्रयोग तो विफल हो ही चुका था "तदवीर कुनद बन्दा,तकदीर कुनद ख़न्दा" अर्थात मनुष्य उपाय करता है और नियती उसका उपहास करती है। इस प्रकार उपाय निरूपाय हो जाता है। असमर्थ पिता को अब सीधे-सीधे बात करने के अलावा कोई चारा नही बचा तो उन्होंने डाक्टर साहब से कहा कि बेटा अब तुम बच्चे नहीं हो तुम्हारी शादी हो गई है, दुकान भी अच्छी चल रही है। आर्य समाज की बाते छोड़ो। कभी-कभी घर परिवार की भी सोचो इतनी बड़ी जागीर है। इसे क्या हम ही देखते रहेंगे? आला अफसरान घर पर आते हैं तो तुम उन्हें अपनी आजादी की कहानी सुनाने लगते हो वे सब नाराज हो जाते है।

डा0 कटियार ने पिता जी को दो टूक उत्तर दे ही दिया कि जमींदारी सम्हालना मेरे बस का काम नहीं, इसे आप ही संभाले। जमींदार तो अंग्रेजों का एजेण्ट होता है गरीबों का खून चूस-चूस कर अंग्रेजों को मोटा कर रहा है। मेरे ख्याल से तो पहले जमींदारी प्रथा ही खत्म होनी चाहिए।

बेटे का अवहेलना भरा उत्तर पिताजी को पसन्द नहीं आया उन्होंने गुस्से में आकर कह ही दिया ***"जो न माने बड़ो की***

सीख वह मांगकर खाये भीख। तुम अपनी बीबी को ले जाओ और शहर में डाक्टरी करो और अंग्रेजों को भगाओ और छीनो जमींदारी। यहां पर रहकर तुम हमें भी जेल पहुँचा दोगे।" जब बेटे बाप को उपदेश करने लगते है तो हर बाप भी ऐसा ही सोचता व बोलता है पर वास्तव में उसके हृदय में कोई विरोधी भावना नहीं होती है।

पिता-पुत्र की भी कोई लड़ाई होती है पिता तो हमेशा उपदेशक का भाव रखता है और उसके बात करने का तरीका भी लगभग वही वन जाता है। पिता के उपदेश अनुभव की कसौटी पर खरे उतरने वाले ही होते हैं लेकिन डा. साहब को पिता जी के पुराने विचार ही देश की आजादी में बाधक लगते थे ठीक इसी प्रकार पिताजी को डा.साहब के उपदेश असम्भाव्य जैसे लगते थे जिनका रास्ता आगे चलकर क्रान्तिकारियों से जुड़ जायेगा। दोनो मे से इसका किसी को अनुमान नही था।

जिस प्रकार गतिमान छोटे-छोटे,नदी-नाले मिलकर बड़ी नदी बन जाते है लेकिन तालाब का जल स्थिर रहकर एक निश्चित आकार से आगे नही बढ़ सकता। इसी प्रकार डा. कटियार की नियति गतिमान हो रही थी वह बड़ी नदी मे मिलने की उतावली थी। इसलिऐ फैसला बहुत जल्दी हो गया।

बात तो बहुत छोटी सी थी लेकिन डा0 कटियार ने सोचा चलो छुट्टी हुई शहर में दुकान भी चलायेंगे और आगे की पढ़ाई भी हो जायेगी उनके मन मे पहले से ही आगे पढ़ने की इच्छा थी। जैसा कि योगेन्द्र वर्मा द्वारा लिए गये उनके इन्टरव्यू से प्रकट होता है कि उन्हें अंग्रेजी मे केवल हाईस्कूल तक की ही अपनी पढ़ाई कम होने का अहसास था।

कौन बाप चाहेगा कि अपने कलेजे के टुकड़े, जवान पुत्र को नाराज कर दे, जिस बहू को खुशी से घर लाया हो उसे नाराजी में घर से बाहर कर दे इसीलिए जब डा0 कटियार घर से चले तो पिताजी ने उनसे अपनी पत्नि को साथ ले जाने को नहीं कहा। सोचा होगा कि थोड़े बहुत दिन घूमफिर कर आ जायेगा। जब चूल्हा फूँकना पड़ेगा तो फिर बीबी या माँ की याद आयेगी तो अपने आप अक्ल ठिकाने आ जायेगी।

मां ने कुछ नहीं कहा। वेचारी माँ ! जिसे वेटे की वातें समझ में ही नहीं आती थीं उसने कभी विरोध भी नही किया डा. साहब को भी मां से कभी कोई शिकायत नहीं थी मां तो कभी कभी वेटे का ही पक्ष लेती थी जब पिता जी डा. साहब पर जमीदारीं का काम करने की बातें करके झुझलातें तो मां कहती"इतने कारिन्दे हैं फिर भी वेटे को आप परेशान करते रहते हो। डाक्टर है। दिन भर मरीजों की चिल्लपों लगी रहती है अगर घड़ी भर को बैठ जाये तो आप परेशान करते रहते हो। इतने पर भी कुछ न कुछ तो करता ही रहता है।"

डा.गया प्रसाद जब घर से चले तो मां से विछोह के कारण दोनों की आंखों मे आंसू निकल आये। डा. गया प्रसाद प्रकरण मे मां और उनकी पत्नि रज्जों दोनों ही स्त्री स्वभाव का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र हैं दोनों के दिलों में गया प्रसाद के विछोह का कितना दर्द था इसे नापने का कोई पैमाना नही है। जेल जीवन के बाद के दिनों में वे उन दोनों बेकसूरों की वड़ी याद करते थे यद्यपि वक्त के साथ सारे घाव भर जाते है उनके भी भर गये। जो नही भरे उनकी भर पायी भी नहीं हो सकती थी

पिता जी ने सोचा कि मां के प्यार के कारण ही बेटा लौट

आयेगा। वैसे भी रज्जो देवी घर के काम में बहुत सहायक थीं सास से उनकी पटरी भी अच्छी बैठ रही थी।

बेचारे मौजीराम को क्या पता था कि नसीहत के रूप में घर से विदा किया बेटा एक दिन इस देश का महान क्रान्तिकारी बन जायेगा। वह तो यही सोच रहे थे कि बाप बेटे की भी कोई अनबन होती है ऐसा कौन सा परिवार होगा जिसमें बाप बेटे को नसीहत न देता हो यह पवित्र रिश्ता ही इस बात पर निर्भर करता है कि पुत्र का सबसे योग्य शिक्षक अनुभवी व शुभेच्छु पिता ही होता है लेकिन यहां हम क्या अवहेलना का पातक डा0 कटियार के मत्थे मढ़ेंगे ऐसा कदापि नहीं है। डा0 कटियार ने देश हितमें जो किया वैसी कुर्बानी देना मनुष्य मात्र के लियें बहुत मुश्किल है दोनों में से कोई भी दोषी नहीं है समय की मांग थी बिना कुर्वानी के देश आजाद ही नही होने वाला था और कुर्वानी देना हर एक के हिम्मत की बात भी नही है मनुष्य का मन अपरिमेय ऊर्जा का केन्द्र है। मानव जीवन के बहुबिधि कार्य-कलाप इसी ऊर्जा की दमकती हुयी चिन्गारियाँ है। उदारता,करूणा,परोपकार,कृपा तथा सहानुभूति के सुषुप्त भावों को शक्ति की यही चिनगारियाँ प्रदीप्त एवं जागृत करके सक्रिय बना देती है। इसीलिए कहा जाता है।

लीक लीक तीनों चले कायर क्रूर कपूत।
लीक छाँड़ तीनों चले शायर सिंह सपूत।।

स्व0 क्रान्तिवीर शिव वर्मा के भतीजे योगेन्द्र वर्मा ने डा0 गया प्रसाद के विषय में शिव वर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रश्नोत्तर के रूप में लिखा है। यहां हम उसी पुस्तक से साभार उद्घृत कर रहे है।

"अमर शहीद सरदार भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद के

साथी डा0 गया प्रसाद कटियार का जीवन महान आदर्शो के लिए समर्पित उतार चढ़ावों से भरा हुआ संघर्ष मय जीवन रहा है। मैंने अपने बाबूजी शिव वर्मा से उनके बारे में बहुत कुछ सुन रखा था एक दिन इच्छा हुई क्यों न ऐसे बलिदानी पुरूष से मिलकर उनके जीवन की आंतरिक छवि के दर्शन किये जाये। दूसरे ही दिन टेप-रिकार्डर लेकर मैं उनके गांव जगदीश पुर पहुँचा और बातचीत की।

प्रश्न – आपकी शिक्षा कहाँ और किस कक्षा तक हुई?

उत्तर – घर पर पढ़ाई समाप्त कर मैं फर्रूखाबाद, बढ़पुर और फिर बिल्हौर में पढ़ता रहा अंग्रेजी में हाईस्कूल ही पासकर पाया उसके बाद समाज सेवा और राजनीति का भूत सवार हो गया जिन दिनों मैं फर्रूखाबाद में पढ़ता था उन दिनों वहां आर्य समाज बहुत जोर था मैं नियमित रूप से उसकी बैठकों में जाने लगा और बढ़-चढ़कर उसकी गतिविधियों मे हिस्सा लेने लगा। आर्य समाज के सम्पर्क से मेरे अंदर एक नया परिवर्तन आया। राजनीति और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की प्रथम प्रेरणा मुझे वहीं से प्राप्त हुई।

प्रश्न – राजनीति में कब और कैसे आये ?

उत्तर – आर्य समाज ने गुलामी के खिलाफ एक पृष्ठभूमि तो तैयार कर ही दी थी इसलिए 1921 में गांधी जी ने जब असहयोग आन्दोलन छेड़ा तो पढ़ाई छोड़कर मैं उसमें कूद पड़ा पिताजी सामन्ती विचारधारा के थे और अधिकारियों का उन पर काफी जोर था इसीलिए वहां काम करने में मुझे कदम-कदम पर रूकावटों का सामना करना पड़ रहा था। इसीलिए मैं गांव छोड़कर घाटमपुर चला गया और वहां से सीधा कानपुर चला आया कानपुर में डा0 मुरारी

लाल के घर पर ही कांग्रेस का दफ्तर था वहीं रहकर सक्रिय रूप से कांग्रेस का कार्य करना आरम्भ कर दिया। यहीं से मैंने कांग्रेस का संगठन बिल्हौर और कानपुर में मजबूत बनाने हेतु काम किया।

कानपुर में विदेशी कपड़ों के वहिष्कार का प्रचार तथा विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना देने का कार्य किया। यहां मुझे रामप्रसाद मिश्र, बालकृष्ण शर्मा, नारायण प्रसाद अरोरा, प्यारे लाल अग्रवाल के साथ काम करने का अवसर मिला। चौरी चौरा कांड के बाद असहयोग आन्दोलन वापस हो जाने पर बड़ी विकट परिस्थिति का सामना करना पड़ा। हम नौजवानों को इस प्रकार आन्दोलन की वापसी समझ में नहीं आयी।

5 फरवरी 1922 को देवरियां जिले के चौरी-चौरा नामक स्थान पर पुलिस ने जलूस को जबरन रोकना चाहा इस पर किसानों व पुलिस में मुटभेंड हो गयाी। क्रुब्द्ध किसानों ने थाने को आग लगा दी जिसमें एक थानेदार तथा 21 सिपाहियों की जलकर मृत्यु हो गयाी। गांधी जी उस समय बारडोली में बिट्ठल भाई पटेल व सरदार पटेल के साथ में थे उन्होंने वही से 12 फरवरी 1922 को आंदोलन वापस लेने की घोषणा कर दी। जिस की सभी नेताओं ने तीव्र आलोचना की,और कहा कि इतने बड़े देश के लिए इस घटना की सजा नही दी जा सकती।

चौरी-चौरा काण्ड ऐसा काण्ड नहीं था कि जब सारे भारत में अंग्रेजों के पाँव उखड़ने वाले ही थे कि यकायक आन्दोलन वापस ले लिया गया। हमें लगा कि आजादी मिली-मिलाई हाथ से निकल गई। मेरी पढ़ाई तो पहले ही छूट चुकी थी घर वापस जाने का कोई प्रश्न ही नहीं था, कांग्रेस से भी मन उखड़ गया था। क्या किया जाये

जाय? बहरहाल मैं कांग्रेस से अलग हो गया और मजदूर संगठनों में काम करने लग गया।

कुछ दिनों बाद मैंने जलालाबाद में अस्पताल खोला। इन्हीं दिनों एक हृदय विदारक घटना हो गई। जलालाबाद के पास ही सराय प्रयाग में मेरी बहन की शादी हुई थी। बड़े जमींदार होने के नाते हमारी रिश्तेदारियां भी सभी बड़े जमीदारों में ही थी। वे सभी मेरी राजनैतिक गतिविधियों को आवारागर्दी की संज्ञा देते थे। कभी-कभार जब देश की राजनीति पर हमसे बातचीत होती तो वे मेरी योजनाओं और विचारों को असम्भव मानकर सीधे अंग्रेजों से दुश्मनी पैदा कर लेने को तैयार नहीं थे कहीं अंग्रेज उनके पीछे भी न लग जाये। इसलिए तो वे मुझे अपने यहां बुलाना तक भी पंसद नहीं करते थे।

मेरी बहन को उसकी ससुराल में रात-दिन ताने सुनने-पड़ते थे। उसने मेरी क्लीनिक पर खबर भिजवाई कि भइया एक बार मुझसे मिल लो। जब मैं बहन के घर गया तो उसने बताया कि भइया आपका नाम लेकर मेरे परिवार के लोग मुझे अक्सर तंग करते रहते हैं तरह-तरह के उलाहने देते रहते हैं आपको जमींदारों व बिरादरी का दुश्मन बताते हैं। नास्तिक बताकर आपकी बड़ी निन्दा करते हैं जो मुझसे सहन नहीं होती है। आप खुद ही इन लोगों से बातचीत क्यों नहीं कर लेते?

मैं बहन को समझा-बुझा कर वापस आ गया लेकिन मैं परेशान हो गया कि आखिर मेरे विचारों से या कार्यकलापों से मेरी बहन के ससुराल वालों को आपत्ति क्यों है? वे लोग मिथ्याभिमानी थे उन्हें देशधर्म के विकास से कुछ लेना देना नहीं था। सिर्फ जमींदारों को छोटा-बड़ा कहना ही उनकी मात्र सोच थी। मेरे सामने तो उनके

तक

टिक नही सकते थे लेकिन पीछे वे मुझे व मेरे विचारों को भला-बुरा कहने की उनकी आदत बन गयी थी। अपने संतोष के लिए वे मुझे घमंडी तक कह डालते।

बाद में एक दिन सुना कि मेरी बहन ने उलाहनों से तंग आकर आत्म-हत्या कर ली। मेरे दुखी मन को मेरे परिवार वालों ने और घायल किया उनके लिए तो मैं दुनिया का सबसे बड़ा अपराधी था। उनकी बेटी की जान जाने का असली कारण तो मैं ही था मै परेशान था कि मैं अपने निर्दोष होने का क्या प्रमाण दूं? कहां चला जाऊं? गांव मैंने पहले ही छोड़ दिया था घर से कोई सम्बंध भी नही था फ़िर भी यह जमीदार न जाने क्या चाहते थे?

हर युग में क्रान्ति चाहे सामाजिक रही हो अथवा राजनैतिक अथवा आर्थिक, क्रान्ति के हर सूत्र धार को परम्पराजीवी अन्ध जड़ता में ग्रस्त प्रति-द्वन्द्वियों का कटु कठोर विरोध सदैव झेलना पड़ा है। इतना ही नहीं सामान्य लोक भावना भी क्रान्तिकारी महापुरूषों का साथ देने में सदा हिचकिचाती रही। संसार के विभिन्न देशों के क्रान्तिकारियों को विरोध का अभिशाप निरन्तर सहना पड़ा किन्तु इसी के साथ हमें यह भी याद रखना होगा कि क्रान्ति के छोटे-छोटे स्फुलिंग अन्तोगत्वा भीषण ज्वाला का रूप धारण करते रहे तथा प्रतिक्रियावादी शक्तियों को भस्म कर एक नये समाज की रचना में सफल होते रहे हैं।

प्रश्न–क्रान्तिकारी आन्दोलन में आप कैसे आये?

उत्तर–कांग्रेस से अलग होने के बाद कुछ दिनों तक मैं मजदूर सभा में काम करता रहा वहीं हरिहरनाथ शास्त्री और विद्यार्थी जी (गणेश शंकर विद्यार्थी) से मेरा परिचय बिल्हौर के श्री मुनीश्वर अवस्थी से

हुआ वे उन दिनों गोरखपुर से प्रकाशित होने वाले हिन्दी साप्ताहिक "स्वदेश" के सह सम्पादक थे उनका सम्पर्क क्रान्तिकारी पार्टी से भी था और वे प्रायः कानपुर आते रहते थे उनसे राजनीति पर काफी बातचीत के बाद मुझे लगा कि देश को आजाद कराने के लिये क्रान्तिकारी पार्टी ही एकमात्र सही रास्ता हैं बस मैं क्रान्तिकारी पार्टी का सदस्य बन गया। क्रान्तिकारी पार्टी में आने के बाद मेरा परिचय कानपुर के विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, सुरेन्द्र पाण्डेय, जयदेव कपूर, सदगुरू दयाल अवस्थी और ब्रहमदेव मिश्र आदि से हुआ।

प्रश्न– आजादी के बाद आप कैसा अनुभव कर रहे हैं?

उत्तर– मेरा तो आज के वातावरण में दम घुटा जा रहा है। हमने जिस आजाद भारत की कल्पना की थी वह तो ऐसा नहीं था। आज आदमी दो-दो पैसे पर ईमान बेचता है, पद के लिए मारामारी करता है यह तो हमने ख्वाब में भी नहीं सोच था।

प्रश्न– देश के नौजवानों के लिए आपका क्या संदेश है?

उत्तर– मुझे अपने नौजवानों से यही कहना है कि देश की आर्थिक आजादी अर्थात् उसे साम्राज्यवादी, सामन्तवादी शिकंजों से मुक्त करने के लिए पूरी निष्ठा के साथ आगे आयें ताकि जल्द देश में शोषणहीन, वर्गविहीन समाजवादी समाज की स्थापना की जा सके।

दाद क्या मिलेगी यह गूँगों का शहर है
अफसानये हयात यहां मत सुनाइयें

भाग – 2

राजनीति में प्रवेश से क्रान्तिकारी गतिविधियों तक

क्रान्तिकारी के रूप में पिछले अध्याय में हम लिख चुके है कि डा0 गया प्रसाद कटियार आर्य समाज की डगर पर चलते-चलते उनका सम्बन्ध क्रान्तिकारियों से किस प्रकार हुआ। इस समय तक डा0 साहब पूरी तरह से मान चुके थे कि अगर भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराना है तो क्रान्ति के अलावा और रास्ता नहीं हैं। मुट्ठी भर अंग्रेज चालाकी से भारत पर कब्जा कर गया है। हमारे लोगों की ही मदद से वह हम पर शासन कर रहा है। दादा जी द्वारा सुनाई 1857 की कहानी उन्हें अब भी याद थी अगर हमारे लोगों ने ही अंग्रेजों की सहायता न की होती अथवा उन्हें अपने ही घरों में न छुपाया गया होता तो अंग्रेज उस समय ही भाग गया होता। अफसोस तो यही है हमारे लोग न उस समय समझ सके और न अब समझते हैं।

अगर एकजुट होकर अंग्रेजों का विरोध किया जाए तो अंग्रेज डरकर देश छोड़कर भाग जायेंगें। ऐसे ही विचारों वालों का एक दल बन गया था जो सन् 1917 ई0 की रूस की क्रान्ति से प्रभावित था। लेनिन व मार्क्स को पढ़ना व पढ़ाना व देश की आजादी का दीवाना यह दल क्रान्तिकारियों का जमावड़ा था। जिसका आदर्श था श्याम जी कृष्ण वर्मा का यह कथन " यह देखते हुए कि इग्लैड भारत मे राजनैतिक स्वतन्त्रता के सभी अवशेषो को खत्म करने पर तुला है

शांतिपूर्ण क्रान्ति की संभावना बहुत क्षीण है ऐसी स्थिति में ऐसा सशस्त्र संघर्ष अनिवार्य है जिसका एकमात्र परिणाम भारत की विदेशी सरकार को उखाड़ फेंकना हो केवल रूसी तरीकों से ही इंग्लिश सरकार होश मे आ सकती है **(इंडियन सोशियोलोजिस्ट 1907-श्यामजी कृष्ण वर्मा)**

आतंकवादी तथा क्रान्तिकारी में बड़ा अन्तर होता है। आतंकवादी अपने दमन करने वाले अथवा विरोध करने वाले को शत्रु मानकर उसकी हत्या करने के लिए उद्यत होता है। वह समय,परिस्थिति और अवसर की बिना परवाह किए तथा बिना किसी महान उद्देश्य को निर्धारित किए दूसरों की हत्या के प्रयास में स्वयं भी मारा जाता है। जबकि क्रांतिकारी देश और समाज का उत्थान करने,मानव के सार्वजनिक कल्याण के लिए योजना बनाता है,समय की प्रतीक्षा करता है। वह हर विरोधी को शत्रु नही मान लेता और न उसकी हत्या करने की ही बात सोचता है। पुनीत उद्देश्यों की पूर्ति के लिए क्रांतिकारी हिंसा और अहिंसा का आश्रय लेता है। वह समाज और देश के लिए जीता-मरता है। वह अपने निहित स्वार्थों को पूरा करने के लिए अथवा किसी से प्रतिशोध के लिए उसकी हत्या नहीं करता। आतंकवादी अपने व्यक्तिगत विरोधी को शत्रु और व्यक्तिगत सहायक को मित्र मानता है। जबकि क्रांतिकारी समाज और देश के विरोधी को अपना शत्रु और समाज के हितैषी को अपना मित्र मानता है।

डा0 गया प्रसाद कटियार सीधे क्रान्तिकारी दल से जुड़ गये वहाँ इन्हें यह ज्ञात हुआ कि क्रान्तिकारी लोग क्रान्ति के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा विवाह को मानते थे इसीलिए शादीशुदा लोगों को दल में भर्ती नहीं करते थे उसका कारण यह था कि पत्नी कई बार

व्यक्ति की कमजोरी सिद्ध हो चुकी थी पर डा0 गया प्रसाद कटियार तो विवाहित थे। ऐसे में दल का कानून निर्वहन हेतु डा0 साहब ने सोचा क्यों न मैं अपनी पत्नी से वार्तालाप कर अपना मत उसे समझा कर उसकी चिंता से मुक्त हो जाऊँ इसीलिए वे पत्नी से मिलने घर गये। उस दिन घर पर पिताजी नहीं थे।।

पत्नी से सिंदूर पुछवाना

जिसने देश पर अपनी जान कुर्बान करने का व्रत ले लिया हो उसके लिये पत्नी या संतान कोई बाधा नहीं बन सकते वह अपने ध्येय व अराधना में अपने साथ इन सब चीजों को भी कुर्बान कर देता है। डा0 कटियार को भी इन चीजों ने पीछे नहीं खींचा। घर, पत्नी, पुत्री तथा जमींदारी किसी का भी मोह उन्हें आदर्शो से नहीं डिगा सका।

डा0 साहब ने अपनी पत्नी से बात करते समय सीधे-सीधे कह दिया कि मैं देश की आजादी की लड़ाई में क्रान्तिकारी संगठन से जुड़ा हूँ मैं किसी भी समय पुलिस की गोली का निशाना हो सकता हूँ बच गया तो जेल चला जाऊँगा हमारा तुम्हारा इतने दिन का ही साथ था।

इस घटना का प्रस्तुतीकरण क्रान्तिकारी शिव शर्मा के शब्दों में -"घटना सन् 1924 ई0 की है डा0 साहब को पता चला कि शादी शुदा व्यक्तियों को पार्टी के सक्रिय सदस्य के रूप में नहीं लिया जा सकता है तो वह सीधे घर आये और अपनी पत्नी श्रीमती रज्जो देवी से कहा 'मैं क्रान्तिकारी पार्टी का सदस्य बनना चाहता हूँ तुम अपने हाथ से अपना सिंदूर पोछ लो और समझ लो की तुम विधवा हो गई हो।" रज्जो भाभी रो पड़ी उन्हें रोता देख डा0 साहब ने

उनसे कहा - "तुमने तो हर फैसले में मेरा साथ देने का वायदा किया था। आज यह वायदा भूल कर रोना कैसा " रज्जो भाभी ने अपने आप को संभाल कर कहा मैं अंत तक वचन निभाऊँगी ; इस समय देश को समर्पित करने के लिए मेरे पास तुमसे अधिक मूल्यवान और कोई वस्तु नहीं है, आज से मैं तुम्हें परिवार के सभी मायामोह से मुक्त करती हूँ। जाओ वैरागी जिस रास्ते पर चल पड़े हो उसे अंत तक निभाना और पीछे मुड़ कर मत देखना यह कहकर उन्होंने अपने हाथों से अपना सिंदूर पोंछ लिया। **(प्रस्तुति शिव वर्मा, डाक्टर साहब के क्रान्तिकारी साथी)**

अब डा0 साहब घर से स्वतंत्र होकर देश को स्वतंत्र कराने निकल पड़े। उनकी इस राह के साथी थे विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, जयदेव कपूर, सुरेन्द्र नाथ पाण्डेय आदि।

प्रश्न – शिव वर्मा से आपकी कब, कहाँ और कैसे मुलाकात हुई और उनके बारे में आपके क्या विचार है?

उत्तर – जहाँ तक मुझे याद है शिव वर्मा से मेरी पहली मुलाकात सन् 1926 ई0 के आरम्भ में सुरेन्द्र पान्डे के यहाँ हुई थी। मैं पान्डे जी से मिलने गया था तभी वह वहाँ अचानक आ गये पहले से तय करके मुलाकात नहीं हुई थी फिर तो पार्टी के काम से बराबर मुलाकात होती रही। जाजमऊ वाली मीटिंग में मिले फिर जब वे ट्रेन से कूदकर भागे तो मेरे यहाँ आये मैं जब जलालाबाद से भागा तो कानपुर शिव वर्मा के पास पहुँचा उन्होंने मेरे पंजाब जाने की व्यवस्था कर दी। फीरोजपुर में शिव वर्मा मेरे छोटे भाई बन कर रहे। उन दिनों वह "चांद के फांसी अंक के लिए शहीदों की जीवनियाँ लिख रहे थे फिर साण्डर्स वध के बाद जब मैं आगरा केन्द्र पर आ गया

तब भी साथ हुआ पकड़े जाने के बाद तो 17 साल तक जेल में रात दिन का साथ रहा। वर्ष 1938 में जब बलरामपुर अस्पताल में मेरा अपेन्डीसाइटिस का आपरेशन हुआ तो अस्पताल में मेरी देखरेख के लिए पेरोल पर वर्मा जी को ही छोड़ा गया था।

प्रश्न– चन्द्रशेखर आजाद के बारे में कोई संस्मरण बताइये?

उत्तर– कानपुर में जाजमऊ के पास एक मीटिंग होनी थी। उस मीटिंग में भाग लेने के लिए आजाद को झांसी से लाना था। इसके लिए भगवान दास माहौर का पता देकर मुझे झांसी भेजा गया था। माहौर से मैं एक पुस्तकालय में मिला वहां से जब वे मुझे लेकर अपने घर को जा रहे थे तो रास्ते में ही आजाद मिल गये और माहौर ने वहीं उनसे मेरा परिचय कराया। आजाद ने इसे पसन्द नहीं किया।

जब घर पहुँचे तो माहौर की मां ने आजाद से उसकी शिकायत की कि यह कुछ पढ़ता लिखता नहीं है, दिन भर इधर-उधर घूमता रहता है, घर का भी कोई काम नहीं करता है आदि आदि। आजाद ने भी भगवान दास को खूब डांट पिलाई। उस समय मैंने सोचा कि खुद ही तो माहौर को इधर-उधर भेजते हैं और अब उसे डांट रहें है। बाद में पता चला कि वह सब माहौर के साथ उनकी मिली भगत थी।

वे मेरे साथ कानपुर के लिए रवाना तो हो गये लेकिन रास्ते भर अपना भरा हुआ रिवाल्वर छुपाये चुपचाप मेरे सामने की सीट पर बैठे रहे। कानपुर पहुँचने पर जब और साथी मिले तब आकर उन्हें यकीन हुआ कि मैं एक सही आदमी हूँ।

(शिव वर्मा अभिनन्दन ग्रंथ)

क्रान्तिकारी एजेन्डा में गया प्रसाद का डाक्टर होना साथियों

को बड़ा ही सहायक था जहाँ क्रान्तिकारियों का ठिकाना बनाना हुआ वहीं डाक्टरी की दुकान खोल दी बाहर से दिखने वाली डिस्पैन्सरी असल में क्रान्तिकारियों का अड्डा होती थी जहां से रिवाल्वरों और बमों के निर्माण से लेकर भेजने तक का सफलता पूर्वक संचालन किया जाता था इस प्रकार डाक्टर साहब ने आगरा, फिरोजपुर, सहारनपुर जलालाबाद आदि स्थानों में विभिन्न नामों से डाक्टरी की दुकाने खोली और क्रान्ति का संचालन किया। इसी प्रकार की दुकान जब वे जलालाबाद में करते थे उस समय की एक बहुत महत्वपूर्ण घटना उल्लेखनीय है। योगेन्द्र वर्मा के साक्षात्कार से:-

प्रश्न– भगत सिंह से आप कब और कहाँ मिले?

उत्तर– भगत सिंह से मेरी पहली मुलाकात लाहौर में हुई थी। हुआ यह कि उन दिनों पार्टी योगेश चन्द्र चटर्जी जिन्हें काकोरी काण्ड मे सजा हो चुकी थी वह फतेहगढ़ जेल में बन्द थे, उन्हें फतेहगढ़ जेल से छुड़ाने की योजना बन रही थी। उसी सिलसिले में विजय कुमार सिन्हा और शिव वर्मा जेल में उनसे मिलने गये। जेल सुपरिटैन्डैन्ट ने मिलाई की इजाजत नहीं दी। साथ ही सी.आई.डी. वालों को खबर कर दी। सी.आई.डी. वालों को इन लोगों पर शक हो गया और उन्होंने उनका पीछा किया। इस बात का अनुमान शिव वर्मा को भी हो गया।

इन दिनों मैं फर्रूखाबाद के पास जलालाबाद में डाक्टरी की प्रैक्टिस करता था। जलालाबाद के पास खुदलापुर स्टेशन से जब गाड़ी चली तो शिव वर्मा चलती गाड़ी से कूद कर मेरे यहाँ आ गये। उनके साथ गाड़ी की दूसरी तरफ से एक सी0 आई0 डी0 वाला भी कूदा। लेकिन वह गिर गया और उसके चोट आ गई। वह भी मेरे

ही दवाखाने में मरहम पट्टी करवाने आया। उसने कहा कि एक आदमी गाड़ी से कूदकर यहीं कहीं गायब हो गया है। मैंने उस सी0 आई0 डी0 इंस्पेक्टर की मरहम पट्टी की और दर्द कम करने के लिए मार्फिया का इंजेक्शन लगा दिया। वह बाहर पड़े तख्त पर लेट गया और सो गया।

मैंने एक पिस्तौल देकर शिव वर्मा को रात के बारह बजे की गाड़ी पर अगले स्टेशन से ट्रेन में बैठा कर उन्हें कानपुर रवाना कर दिया। सी0 आई0 डी0 को मेरे ऊपर भी शक हुआ और दो- तीन दिनों बाद वे मुझे गिरफ्तार करने आ गये। मैं मकान के पिछले दरवाजे से निकल आया। उस समय मेरी जेब में एक भी पैसा नहीं था। कुछ दूर चलने के बाद खेत पर काम करता एक परिचित किसान मिला। उससे मैंने कपड़े बदलकर पैदल ही कानपुर चल गया। शिव वर्मा के पास जाकर सब हाल बतलाया और उन्होंने पता देकर मुझे लाहौर रवाना कर दिया।

कानपुर से मैं दिल्ली आया। वहां जामा-मस्जिद के पास एक मकान में शौकत उस्मानी रहते थे। उनसे मिला उन्होनें लाहौर में केदारनाथ सहगल का पता दिया। सहगल ने मेरी मुलाकात भगतसिंह से करवाई।

भगतसिंह ने रावी नदी के पास एक छात्रावास था, वहाँ मेरे रहने की व्यवस्था कर दी। महावीर सिंह वहाँ पहले से मौजूद थे। तय यह हुआ कि यहाँ भी डाक्टरी की दुकान ही खोलकर उसके भीतर अड्डा बनाया जाय। कुछ दिन वहाँ रहने के बाद फीरोजपुर में मैंने डा0 वी एस निगम के नाम से डाक्टरी आरम्भ कर दी। जयगोपाल केवल गोपाल नाम से मेरे पास नौकर बनकर रहने लगा। फिर वहाँ

सुखदेव और शिव वर्मा भी आने जाने लगे।

प्रश्न–फीरोजपुर में आप कैसे रहते थे?

उत्तर–फीरोजपुर में घर के अन्दर मैं और जय गोपाल एक ही परिवार के सदस्य थे, लेकिन घर से बाहर वह नौकर था और मैं मालिक। नौकर होने के कारण जयगोपाल हमेशा मैले कपड़े पहनता था। हम लोग एक सस्ते ढाबे में खाना खाते थे। मैं गांव का रहने वाला था। पार्टी में आर्य समाज से आया था। दिमाग पर उसकी छाप तो थी ही। सादगी और नैतिकता की भी अपनी धारणायें थी। मैं पार्टी का पैसा बड़ी किफायत से खर्च करता था। ढाबे में मैं बगैर घी के ही दाल रोटी या सब्जी रोटी खा लेता था।

एक बार लाहौर से सुखदेव आये तो जयगोपाल ने उनसे मेरी शिकायत की कि न तो ये खुद घी खाता है न मुझे खाने देता है। मुझसे बगैर घी के दाल और रोटी नहीं चल पा रही है। सुखदेव विवेकशील व्यक्ति थे। उन्होने कहा मरना तो है ही लेकिन जब तक जिन्दा है स्वतंत्र होकर जियें तो कुछ काम भी कर लेंगे। उसने कहा यह जयगोपाल घी का आदी है इसे रोटी और दाल के साथ घी भी दिलवा दिया करें। मैंने उसको घी बंधवा दिया। अब मुश्किल यह हुई कि नौकर तो खायें घी की चुपड़ी रोटियाँ और मालिक चबाय सूखी रोटियाँ, इसलिए मैं दूसरे ढाबे में चला गया। (शिव वर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ से)

फीरोजपुर में डा0 कटियार डा0 बी0एस0 निगम के नाम से इतने मशहूर हो गये थे कि वहाँ की कायस्थ सभा ने उन्हें अपना जिला मंत्री चुन लिया था। यहाँ उनकी दुकान भी बहुत अच्छी चलती थी इससे दल के लोगो को बहुत मदद मिली। दल के कई क्रान्तिकारी दुकान पर काम करने व सामान लाने व ले जाने के हिसाब से नौकर

के रूप में कार्य करते थे।

कार्यालय से सम्बद्ध कार्य

1. जो क्रांतिकारी उत्तर प्रदेश, बिहारी, बंगाल से आते उनके रूकने की व्यवस्था।
2. यहाँ से बम बनाने का सामान प्राप्त करना।
3. आर्थिक सहायता प्राप्त करना।

इन्हीं दिनों भारत में कुछ राजनैतिक सुविधायें देने के नाम पर साईमन कमीशन आया। जिसका विवरण हम पहले विषय प्रवेश में भी लिख चुके है। लाला जी की हत्या का बदला लेने की योजना बनाने हेतु महत्वपूर्ण क्रान्तिकारियों की एक बैठक लाहौर में हुई। जिसमें अन्त में यह तय हुआ कि अगर अंग्रेज अधिकारी पुलिस अधीक्षक स्काट की हत्या का प्रमुख दायित्व भगत सिंह निभाते है तो उन्हें अपना बचाव करने के लिए भेष बदलना होगा उसमें केश बाधक होंगे।

भगत सिंह की धार्मिक आस्था भी समाप्त हो चुकी थी। ऐसे में केश लादने का कोई औचित्य भी नहीं था। अतः तय हुआ बाल कटा दिये जाये अगर किसी नाई से कटवाते है तो योजना का भेद खुल सकता है। अतः तय हुआ कि डा0 गया प्रसाद ही भगत सिंह के बाल काटें। यह ऐतिहासिक कार्य डा0 गया प्रसाद (बी.एस.निगम) ने अपनी क्लीनिक पर चुपचाप कर दिया। डा0 गया प्रसाद का साथी नौकर जय गोपाल पकड़े जाने के बाद जब मुखबिर हो गया तो उसने पुलिस को बताया कि भगत सिंह के सिर के केश व दाढ़ी क्लीनिक में डा0 गया प्रसाद ने अपने हाथों से काटे थे। (लाहौर षडयंत्र केस की प्रोसीडिंग से)

सांडर्स हत्या कांड

विषय प्रवेश में हम सांडर्स हत्याकांड का संक्षिप्त वर्णन कर चुके है। योजना के अनुसार पुलिस अधीक्षक स्काट की हत्या की जानी थी क्योकि पंजाब केसरी लाला लाजपत राय को जिस पुलिस लाठी चार्च मे चोटे आयी उसका आदेश स्काट ने ही दिया था जय गोपाल को स्काट की शक्ल पहचानने व आने जाने के रास्ते की जानकारी लेने तथा उपयुक्त स्थान की तलाश का जिम्मा सौंपा गया था भगत सिंह और राजगुरू को हत्या करने के बाद सुरक्षित निकालने का जिम्मा चन्द्रशेखर आजाद को सौपा गया था।

निश्चित दिन 17 दिसम्बर सन् 1928 ई0 को जय गोपाल को अपनी साइकिल से निश्चित बिन्दु पर पहुँचने को कहा गया वह वहाँ जाकर ऐसे कार्यवाही करने लगा जैसे साइकिल खराब हो गई वास्तव में उसका ध्यान दफ्तर से निकलने वाले स्काट को पहचानकर इशारा करने की ओर था जयगोपाल स्काट और सांडर्स को ठीक से नहीं जानता था अतः जैसे ही सांडर्स अपनी मोटर साइकिल से दफ्तर से निकला जयगोपाल ने इशारा कर दिया। पास में छिपे राजगुरू और भगत सिंह ने तड़ातड़ गोलियां दागी जिनसे सांडर्स वहीं पर ढेर हो गया।

हत्या करने के बाद दोनों भागे तो कई लोगों ने इनका पीछा किया इन्हें चन्द्रशेखर ने ललकार कर कहा कि हम किसी हिन्दुस्तानी की जान लेना नहीं चाहते हैं इसलिए आप लोग पीछा मत करो इस पर कुछ लोग ठिठके लेकिन सिपाही चानन सिंह पीछा करता ही रहा आजाद ने फिर चेतावनी दी इस पर भी जब वह नहीं माना तो आजाद ने उसे भी गोली मार दी वह वही ढेर हो गया पीछा करने

वाले इधर उधर भाग गये। भगत सिंह व राजगुरू साइकिल पर सवार होकर भागे। बाद में आजाद और जयगोपाल भी साइकिल से ही निकले इस प्रकार यह लोग सान्डर्स की हत्या कर के लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने में सफल हो गये। **(इसका मुकदमा ही लाहौर षडयंत्र केस के नाम से जाना जाता है)**

सांण्डर्स की हत्या के कारणों को स्पष्ट करते हुए भगत सिंह के हाथ का लिखा एक पर्चा लाहौर षड़यन्त्र केस मे पुलिस द्वारा पेश किया गया। जो इस प्रकार है।

हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना

नोटिस

नौकरशाही सावधान

जे०पी०सांडर्स की मृत्यु से लाला लाजपत राय की हत्या का बदला ले लिया गया।

यह सोचकर कितना दुख होता है कि जे.पी.सांडर्स जैसे एक मामूली पुलिस अफसर के कमीने हाथों देश की तीस करोड़ जनता द्वारा सम्मानित एक नेता पर हमला करके उनके प्राण ले लिये गये। राष्ट्र का यह अपमान हिन्दुस्तानी नवयुवकों एवं मर्दो को चुनौती थी।

आज संसार ने देख लिया है कि हिन्दुस्तान की जनता निष्प्राण नहीं हो गयी है। उन नौजवानों का खून जम नहीं गया है,वे अपने राष्ट्र के सम्मान के लिये प्राणों की बाजी लगा सकते हैं। और यह प्रमाण देश के उन नवयुवकों ने दिया है जिनका स्वयं देश के नेता निन्दा एवं अपमान करते हैं।

-अत्याचारी सरकार सावधान-

इस देश की दलित और पीड़ित जनता की भावनाओं को ठेस मत लगाओं,अपनी शैतानी हरकतें बन्द करों,हमें हथियार न रखने देने के लिये बनाये गये तुम्हारे सब कानूनों और चौकसी के बावजूद पिस्तौल और रिवाल्वर इस देश की जनता के हाथ में आते ही रहेंगे। यदि वे हथियार सशस्त्र क्रान्ति के लिये पर्याप्त न भी हुए तो भी राष्ट्रीय अपमान का बदला लेते रहने के लिये तो काफी रहेंगे ही। हमारे अपने लोग हमारी निन्दा और अपमान करें। विदेशी सरकार चाहे हमारा कितना भी दमन कर लें, परन्तु हम राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा करने और विदेशी अत्याचारियों को सबक सिखाने के लिये सदा तत्पर रहेंगे। हम तमाम दमन और विरोध के बावजूद क्रांति की पुकार को बुलंद रखेंगे और फांसी के तख़्ते से भी पुकार कर कहेंगे **"इन्कलाब जिन्दाबाद।"**

हमें एक आदमी की हत्या करने का खेद है। परन्तु यह आदमी उस निर्दयी,नीच और अन्यायपूर्ण व्यवस्था का अंग था। जिसे समाप्त कर देना आवश्यक है। इस आदमी की हत्या हिन्दुस्तान में ब्रिटिश शासन के कारिन्दे के रूप में की गयी है। यह सरकार संसार की सबसे अत्याचारी सरकार है।

मनुष्य का रक्त बहाने के लिये हमें खेद है। परन्तु क्रांति की वेदी पर कभी-कभी रक्त बहाना अनिवार्य हो जाता है। हमारा उद्‌देश्य एक ऐसी क्रांति से है जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अन्त कर देगी।

इन्कलाब ज़िन्दाबाद!

ह0बलराज

18 दिसम्बर,1928

सेनापति,पंजाब हिस्प्रस

कार्यालय स्थानान्तरण फिरोजपुर से आगरा

इन लोगों का फिरोजपुर में रहना अब खतरे से खाली नहीं था। इसीलिए इन्होंने अपना कार्यालय मय सामान के फिरोजपुर से आगरा स्थानान्तरित कर दिया। भगत सिंह और चन्द्रशेखर भी भेष बदल कर वहां से निकल गये।

उन्हीं दिनों भगत सिंह को कई बार इलाहाबाद जाना पड़ा। वहाँ उनकी मुलाकात एम.एस.सी. के एक छात्र ललित मोहन बनर्जी से हुई भगत सिंह ने उत्साही साथी समझकर ललित को अन्य लोगों के साथ आगरा बुलाया। जहाँ बम वनाने की ट्रेनिग दी जा रही थी। वहां के हालात देख कर ललित मोहन डर गया, यतीन्द्र नाथ दास ने कहा कि "यह व्यक्ति अगर पुलिस की पकड़ में आ गया तो सारा भंडा फोड़ हो जायेगा। इसीलिए तत्काल हमें दफ्तर बदल देना चाहिए।" हुआ भी कुछ वैसा ही। इलाहाबाद पहुंचते ही ललित पुलिस की पकड़ में आ गया और डर कर सरकारी गवाह बन गया।

भगत सिंह ने डा0 कटियार से तत्काल ललित के देखे हुए सभी मकान बदलने हेतु सहारनपुर में उपयुक्त जगह खोजने को कहा। जगह हासिल नहीं हो पायी तब तक पता चला कि ललित पुलिस की पकड़ने में आ गया है। इसीलिए सारा सामान तत्काल हटाकर दिल्ली में सीताराम बाजार में अस्थायी रूप से एक मकान में रखवा दिया जब पुलिस ललित को लेकर आगरा वाले मकान पर पहुँची तो वहाँ कोई नहीं मिला।

दिल्ली मे सीताराम बाजार वाला मकान बहुत अधिक सुरक्षित भी नही था तथा योजना के अनुसार केन्द्रीय कार्यालय सहारनपुर ले जाना था। लेकिन सहारनपुर मे जब तक उपयुक्त जगह मिले तब तक के लिए वैकल्पिक व्यवस्था दिल्ली मे की गयी थी। लेकिन दिल्ली मे एक अजीब घटना घट गयी उसी मकान मे कुछ दादा टाईप के लोग पहले से रहते थे उन्होंने डा0गया प्रसाद कटियार और उनके साथियों पर दादागिरी का रौव जमाना चाहा वे वेचारे यह तो जानते ही नही थे कि यह लोग तो सिर से कफन बांधे हर समय अपनी मौत से ही लड़ रहे हैं यह बात दादाओं के सामने प्रदर्शित भी नही की जा सकती थी पर दादा लोग बुरी तरह से पीछे पड़ गये थे। डा. साहब ने बड़ी सूझ-बूझ के बिना झगड़ा किये ही उनसे निपटारा कर लिया। कुछ दिनों बाद जब कार्यालय सहारनपुर पहुँच गया तो ज्ञात हुआ कि दिल्ली वाले मकान पर पुलिस ने छापा मारा था। लेकिन दादा लोगों ने पुलिस वालों को कुछ नही बताया और फोटो पहचानने से भी मना कर दिया। क्रान्तिकारियों ने मन ही मन उन दादाओं का शुक्रिया अदा किया।

सांडर्स की हत्या के बाद देश भर में क्रान्तिकारियों की पकड़-धकड़ शुरू हुई। क्रान्तिकारियों ने भी इन दिनों लगातार गुप्त बैठकें करके आगे का कार्यक्रम तेज किया। किसी भी समय कोई साथी पकड़ा जा सकता था इसीलिए भगत सिंह ने कहा कि हम पकड़ने से पहले ऐसा कार्य करके गिरफ्तारी दे दें कि जिसकी आवाज इंग्लैंड तक पहुंचे।

उन दिनों जनता द्वारा चुने गये विधायक असैम्बली में विधेयक तो पास कर सकते थे लेकिन उनके क्रियान्वयन पर

वायसराय की बीटो पावर भारी पड़ती थी या कह सकते है कि असैम्बली केवल दिखावा मात्र थी। इसके लिए असैम्बली में ऐसे बम फेंकना तय हुआ जिनसे कोई भारतीय घायल भी न हो और घटना भी महत्वपूर्ण हो जाए अतः केवल धुएं-धमाकें के विशेष बम तैयार किये गये इन बमों का निर्माण डा0 गया प्रसाद द्वारा संचालित सहारनपुर बम फैक्ट्री में उनकी देखरेख में ही किया गया था।

8.4.1929 को भगत सिंह व उनके साथी बी.के.दत्त ने केन्द्रीय असैम्बली में बम फेंके। उस समय अध्यक्ष की कुर्सी पर सरदार बल्लभ भाई पटेल के बड़े भाई विट्ठल भाई पटेल विराजमान थे। किसी को कोई चोट-खरोंच नहीं आई पर असैम्बली धुएं से भर गई। धमाके बड़े जबरदस्त थे बन्द एसैम्बली भवन में बमों की आवाज और अधिक गुंजी तथा धुऐं के बवंडर में किसी को यह अहसास नही हो पाया कि कितने धन व जन की हानि हुयी है। सदस्य लोग भय से कोहराम मचाते हुए बाहर की ओर भागे। और वहीं पर भगत सिंह और वटुकेश्वर दत्त ने इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगाये और असैम्बली में गुलाबी रंग के लैटर पैड पर टाईप 40 पर्चे फेंके।

असैम्बली मे उस समय आवश्यक पुलिस बल मौजूद था लेकिन वह भी वस्तु स्थिति को समझ नहीं पाया। यह भी हो सकता है कि उन्होंने सोच लिया हो कि बमों का बिस्फोट करने वालों का अब अगला कदम क्या होगा? इसलिए सुरक्षात्मक उपाय पहले किये। इस बीच भगत सिंह को इतना समय मिल गया था कि अगर वे चाहते तो वे वहां से भाग सकते थे। लेकिन वे अवसर मिलने के बाद भी नहीं भागे और पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अपनी गिरफ्तारियाँ दीं।

सोचिये! साडर्स की हत्या के समय काफी लोगों ने भगत सिंह का पीछा किया था लेकिन इतने लोगों के बीच से निकलकर वे साइकिलों से ही भागने में सफल हो गये तो असैम्बली बम कांड के बाद गैलरी से भाग जाने पर उनका पीछा कौन करता ? अतः कह सकते है कि उन लोगों ने अपने गिरफ्तार करने वालों को स्वयं ही मौका दिया और गिरफ्तारी के समय कोई विरोध भी नहीं किया। अतः स्पष्ट है कि वे तय शुदा कार्यक्रम के अनुसार ही सारा काम निपटाना चाहते थे।

क्या पाठक भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त के इस कार्य को दुस्साहस की श्रेणी में ले जाना चाहेंगे? इस विषय पर हमें दिमागी घोड़े दौड़ाने की आवश्यकता नहीं यह सव शहीदे आजम ने विश्वभर का ध्यान अंग्रेजों के जुल्मों की ओर खींचने के लिए सोची समझी योजना के अनुसार किया था। जो फेंके गये पर्चों की भाषा से और अधिक स्पष्ट होता है। पर्चों की भाषा इस प्रकार है:-

हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ

सूचना

"बहरों को सुनाने के लिए बहुत ऊँची आवाज की आवश्यकता होती है।" प्रसिद्ध फ्रांसीसी अराजकतावादी शहीद वेलियां के यह अमर शब्द हमारे काम के औचित्य के साक्षी है।

पिछले दस वर्षो में ब्रिटिश सरकार ने शासन सुधार के नाम पर इस देश का जो अपमान किया है उसकी कहानी दोहराने की आवश्यकता नहीं,और न ही हिन्दुस्तानी पार्लियामेन्ट पुकारी जाने वाली इस सभा ने भारतीय राष्ट्र के सिर पर पत्थर फेंक कर उसका जो अपमान किया है उसके उदाहरणों को याद दिलाने की आवश्यकता

है। ये सर्वविदित और स्पष्ट है। आज फिर जब लोग साइमन कमीशन से कुछ सुधारों के टुकड़ों की आशा में आंखें फैलाये हैं और उन टुकड़ों के लोभ में आपस में झगड़ रहें हैं, विदेशी सरकार **"सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक"** और **"औद्यौगिक विवाद विधेयक"** के रूप मे अपने दमन को और भी कड़ा कर लेने का प्रयत्न कर रही है। उसके साथ ही आने वाले अधिवेशन में समाचार पत्रों द्वारा राज्यद्रोह प्रचार रोकने का कानून जनता पर थोपने की धमकी दी जा रही है। सार्वजनिक काम करने वाले मजदूर नेताओं की अंधा-धुंध गिरफ्तारी से सरकार का रवैया स्पष्ट हो जाता है।

राष्ट्रीय दमन और अपमान की इस उत्तेजना पूर्ण परिस्थिति की अपने उत्तरदायित्व की गम्भीरता को महसूस कर **"हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ"** ने अपनी सेना को यह..कदम उठाने का आदेश दिया है। इस कार्य का यह प्रयोजन है कि कानून का यह अपमान जनक प्रहसन समाप्त कर दिया जाय। विदेशी शोषण और नौकरशाही जो चाहे करे परन्तु उसकी वैधानिकता के नकाव फाड़ देना आवश्यक है।

जनता के प्रतिनिधियों से हमारा आग्रह है कि वे इस पार्लियामेन्ट के पाखण्ड को छोड़ कर अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्र मे लौट जायें और जनता को विदेशी दमन और शोषण के विरूद्ध क्रान्ति के लिए तैयार करें। हम विदेशी सरकार को यह बतला देना चाहते हैं कि हम देश की जनता की ओर से **"सार्वजनिक सुरक्षा"** और **"औद्यौगिक विवाद"** के दमनकारी कानूनों और लाला लाजपत राय की हत्या के विरोध मे यह कदम उठा रहें हैं।

हम मनुष्य के जीवन को पवित्र समझते हैं। हम ऐसे उज्जवल

भविष्य में विश्वास रखतें हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण शान्ति और स्वतंत्रता का अवसर मिल सके। हम इन्सान का खून बहाने की अपनी विवशता पर दुखी हैं परन्तु क्रान्ति द्वारा सबको समान स्वतंत्रता देने और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को समाप्त कर देने के लिए क्रान्ति में कुछ न कुछ रक्त-पात अनिवार्य है।

इन्कलाब जिन्दावाद !

ह० बलराज

कमांडर–इन–चीफ

क्रान्तिकारी यशपाल की सम्मति

असैम्बली बम कांड के बाद **'हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ'** के अधिकांश साथी गिरफ्तार कर लिये गये। क्रान्तिकारी यशपाल ने लिखा है "डा0 गया प्रसाद की होम्योपैथिक एलोपैथी और हकीमीं की मिली–जुली प्रैक्ट्सि से निर्वाह लायक आमदनी भी होने लगी थी लेकिन सहारनपुर में पैसे की कमी के कारण जुगाड़ न जम सका था।

शिव वर्मा और जयदेव कपूर देहली से आगरा का सामान तो लाकर सहारनपुर के मकान में रहने लगे परन्तु बहुत यत्न करने पर भी पैसा न ला सके। डाक्टर कुछ रूपया आने की प्रतीक्षा में बैठक में पड़े तख्त पर बैठे या लेटे कोई पुस्तक पढ़ते या ऊँघते रहते थे। डिस्पैन्सरी के नाम पर एक स्टैथ्सकोप और एनीमा दीवार पर कीलों के सहारे लटके रहते थे।

जे0पी0 साण्डर्स-वध, असेम्बली बमकांड और लाहौर बम-फैक्ट्री पकड़ी जाने की घटनायें लगातार जल्दी–जल्दी हो चुकी थी। जगह–जगह क्रान्तिकारियों की गिरफ्तारियाँ भी हो रही थी। लाहौर में सुखदेव के

बयान दे देने का विश्वास न होने पर भी इस मकान को नियमानुसार बदला लेना आवश्यक हो गया था परन्तु कठिनाई पैसे की थी।

वातावरण में राजनीति के क्रांतिकारी रंग की सनसनी थी। पैसा न होने के कारण शिव वर्मा और जयदेव कपूर स्थानीय ढ़ंग के कपड़े नहीं बनवा पाये थे। कानपुर,इलाहाबाद के विद्यार्थियों के जैसे ही कपड़े पहनते थे। इन लोगों के कपड़े और ड़ा0 गयाप्रसाद की डाक्टरी के सामान से शून्य दुकान लोगों का ध्यान आकर्षित करने लगी। यह लोग समीप के वाचनालय में अखबार पढ़ने के लिये जाते तो लोग इनसे राजनैतिक बातचीत करने लगते। तीनों ने इस स्थिति को भांपा और सहारनपुर से डेरा हटा लेने की आवश्यकता अनुभव करने लगे।

10 या 11 मई के दिन एक खद्दरधारी सज्जन ने डाक्टर गया प्रसाद से एकान्त में मिलकर चेतावनी दी-**"आपका क्राँतिकारियों से कोई सम्बन्ध तो नही? सुना है,पुलिस इस शहर में क्रांतिकारियों का अड्डा खोज रही है।"**

डाक्टर सहाब ने राजनीति से अपना वैराग्य बताकर उन्हें निश्चिन्त कर दिया परन्तु सहारनपुर से तुरन्त उठ चलने के लिए छटपटाने भी लगे। पर यह हो नहीं पाया। तीनों के निकल चलने लायक पैसा न था तीनों की जेबों में कुल मिलाकर कानपुर तक का एक ही टिकट का दाम निकला। डाक्टर साहब अपने किसी सम्बन्धी से रूपया उधार लाने के लिये कानपुर चले तब शिव वर्मा और जयदेव कपूर के पास केवल दस आने ही रह गये थे। आशां थी कि डाक्टर 12 तारीख की सुबह तक लौट आयेंगे, दो दिन तो चना-चबेना से काटे जा सकते थे।"

शिव वर्मा और जयदेव कपूर से कुछ पते लेकर एवं कुछ अपने मिलने वालों से पैसा मिलने की उम्मीद लेकर डाक्टर साहब कानपुर आये थे। जहाँ चिन्हित लोगों से सम्पर्क करने के बाद कोई पैसा नहीं मिला साथ ही यह उलाहना भी सुनने को मिला कि**"आप लोगों (क्रान्तिकारियों) को पैसा देकर कौन मुसीबत में पड़े। गिरफ्तारियां चल रही है, पकड़े जाने पर आप लोग पैसा देने वालों का भी पता बता देंगे। ऐसे में हम भी पकड़े जा सकते है। इसीलिए बाबा माफ करो हमें ऐसी आजादी नहीं चाहिए जिसमें बच्चे भूखों मरने लगे।"**

इस प्रकार के वचनों ने डाक्टर साहब को अपने भरे पूरे परिवार एवं गृहस्थी की याद दिला दी और देश की गुलामी का कारण भी स्पष्ट कर दिया जिस देश के भामाशाह अपने स्वामी महाराणाप्रताप को उन्हीं का दिया धन उन्हीं को तब तक वापस नहीं करेगा जब तक कि अकबर के लोगों के द्वारा उसके छीने जाने का भय ही उत्पन्न न हो। तब तो राणा प्रताप को 16 साल तक भूखों मरना व बच्चों को रोते-बिलखते देखना ही पड़ेगा।

गया प्रसाद को पूंजीपतियों का यह व्यवहार उनके विचार के अनुकूल प्रमाण-पत्र था। डा. गया प्रसाद को उन लोगों के व्यंग्य वाणों से और भी गहरा धक्का लगा। बहस में तो लोग किसी को जीतने नही देते लेकिन काम स्वयं नही करना चाहते, न चार पैसा ही खर्च करना चाहते हैं। पानी मथ कर मक्खन निकालने की कसरत करने मे माहिर लोगों का यह तुर्रा कि वह जो कुछ कर रहें हैं या जो कुछ कह रहें हैं वही नीति संगत है अथवा कह सकते हैं कि 'लोगों को वेवकूफ वनाने के लिए वे कहानियाँ गढ़ते रहते हैं ऐसे ही होशियार लोगों के कारण इस देश पर मुट्ठी भर अंग्रेज शासन कर रहा है।

जब देश आजाद हो जायेगा तो यही नीति निपुण लोग नेता बनकर आगे की कुर्सियों पर बैठेगें और जो कुर्वानियाँ कर रहे हैं या जिनके परिवार बर्वाद हो रहे है वे फिर पीछे की पंक्ति में धकिया दिये जायेंगे। लेकिन कटियार साहव ने सोचा हम को किसी ने धोखे से फसांया थोंडे ही है हम लोग तो देश की आजादी के प्रति समर्पित है भविष्य के बारे मे अभी सोचा ही कहाँ है। अतः परिस्थिति को समझकर जो कुछ मिला उसे लेकर डा.साहब झांसी जाने के बजाय सहारनपुर चले गये। जहां वे पकड़े गये। डाक्टर साहब की गिरफ्तारी की कहानी उनकी ही जुबानी **शिव वर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ** में छापी गई है। वहीं से साभार-

"हुआ यह कि हमने सहारनपुर में मकान तो ले लिया, लेकिन दवाखाना चलाने के लिए पैसे नहीं थे। शिव वर्मा ने कानपुर के दो तीन पते देकर मुझे उनके पास पैसों के लिए भेजा। साथ में योगेश चटर्जी का एक लम्बा पत्र भी दे दिया। उस पत्र में योगेश बाबू के लखनऊ सेण्ट्रल जेल से निकलने की पूरी योजना दी थी। साथ ही यह भी लिख दिया था कि उनके पास जो भी हथियार व पत्र आदि भेजना हो तो सी0बी0गुप्ता (जो बाद में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने) के पास पहुंचने से उन्हें मिल जायेंगे। इतने पुराने और तजुर्बेकार होते हुए भी उन्होंने गुप्ता जी का नाम कैसे लिख दिया, समझ में नहीं आया। मुझे कानपुर से रूपये लेकर झांसी जाना था। वहां आजाद जी से योगेश बाबू के पत्र के बारे में बात करनी थी।"

प्रस्तुत पुस्तक लिखते समय लेखक ने कानपुर में डा0 गया प्रसाद कटियार के परिवार के लोगों से मिला व पुस्तक की विषय वस्तु को अधिकतम विश्वसनीय बनाने के लिए उनके गांव खजुरी

खुर्द, ससुराल बैरी व बाद का दवाखाना जगदीशपुर व ब्लाक शिवराजपुर का भ्रमण उनके बड़े बेटे इंजीनियर क्रान्ति कुमार कटियार के साथ किया तो उस समय क्रान्ति कुमार ने डा. साहब के हाथ से लिखी एक कापी दिखाई। जिसमें डा0 गया प्रसाद के अंतिम बार ससुराल जाने का हाल इस प्रकार लिखा था, ''कानपुर में जब पैसा नहीं मिला तो सोचा कि क्या करें? माता जी से बात करने घर जाने का साहस नही हुआ। निदान एक ही उपाय वचता था कि धर्मपत्नी से मिलकर कुछ पैसा या गहने ले लेता हूँ, क्योंकि सहारनपुर का मकान भी तत्काल बदलना था।

जब मैं ससुराल पहुँचा तो पत्नी के मामा जी घर के बाहर ही मिल गए। उन दिनों वे ही कारगुजार थे,मेरे ससुर जी की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी, तथा साला अमर नाथ छोटा था। मुझे देखते ही मामा जी सकपका गये। मुंह से बोलती बन्द हो गई। मैंने कहा घबराइये नहीं, मेरे आगे पीछे कोई नहीं है। इतने पर भी उन्होंने मेरी खैर खबर न पूछ कर कहा कि आपका जाने का प्रोगाम क्या है? मैंने कहा- सुबह की गाड़ी से रात ही रात में निकल जाऊँगा।

उस समय महल का फाटक बन्द हो चुका था। भीतर कैसे घुसा जाए? मैनें प्यास का बहाना बनाया लेकिन मामा जी बाहर कुएं से लोटा डोर से पानी ले आये। मैंने मामाजी से पैसों की बात कही तो उन्होंने मुझे घुड़क दिया। मेरे सामने अब कोई चारा नहीं बचा तो मैं भी नाराज हो गया। अंत मे मामा जी ने फाटक खुलवाया। मैं अपनी पत्नी से मिला। यह मेरी पत्नी से अंतिम मुलाकात थी। जब तक मैं घर से नहीं निकला मामाजी का खून सूख गया था।

पत्नी ने गहने देने चाहे पर वे जमीन में गड़े थे खोदने में देर

होती तब तक तो मामाजी शायद बेहोश हो जाते,बेचारी पत्नी पर जो था उसने मुझे दे दिया। उसे लेकर मैं तुरन्त वापस हो लिया। कानपुर में पैसा न मिल सकने के कारण मैं झांसी नहीं जा सका और सीधा सहारनपुर चल दिया। इस बीच सहारनपुर में शिव वर्मा और जयदेव कपूर पकड़े जा चुके थे। मुझे उसका पता नहीं चला था।

जब गाड़ी सहारनपुर पहुँची,तो मुझे लगा कि स्टेशन पर सी. आई.डी. के आदमी लगे हैं। मैंने सवेरे के झुटपुटे में गाड़ी से उतरकर अपना चश्मा जेब में रख लिया। भेष भी कुछ बदला हुआ था। कोई पहचान नहीं पाया और सही सलामत स्टेशन से बाहर आ गया। पैसा बचाने की धुन में अखबार भी नहीं खरीदा नहीं तो उससे जयदेव व शिव वर्मा की गिरफ्तारी का पता चल जाता। रिक्शा या तांगा करता तो भी पता चल जाता पर पैसे की कमी के कारण पैदल ही घर की तरफ चल दिया।

घर पहुँचकर मैंने दरवाजा खटखटाया, आधा दरवाजा खुला और मैं अन्दर हो गया। अंधेरे में एक आदमी ने आगे बढ़कर जम्फी डाल दीं मैंने सोचा -यार लोग गले मिल रहे हैं। मैंने भी जम्फी डाल दी। तभी वह चिल्लाया दौड़ो। तीसरा भी आ गया अब मैंने उसे पहचान लिया। पर मैं पकड़ा जा चुका था। पुलिस इतनी थी कि जोर-जबरदस्ती कर भाग भी नहीं सकता था। इस प्रकार हम तीनों पैसे की कमी के कारण ही पकड़े गये।''

कहते हैं पैसा या धन ही सब कुछ नहीं है लेकिन उसकी भूमिका कितनी ही वार बहुत महत्तवपूर्ण होती है। पकड़े जाने का अफसोस क्रान्तिकारियों को नहीं था। उन्हें तो आज नहीं तो कल पकड़ा ही जाना था। इतने बड़े साम्राज्य की आंखो मे कहां तक धूल

झोंकी जा सकती थी लेकिन इन गिरफ्तारियों ने क्रान्तिकारी इतिहास को नये मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया।

शिव वर्मा जो उच्च कोटि के योजनाकार थे उनके पकड़े जाने से आगे की योज़नाओं पर विराम लग गया। ठीक इसी प्रकार डा. गया प्रसाद कटियार डिस्पैंसरी खोलकर क्रान्तिकारियों को संरक्षण देते थे उनके पकड़े जाने के वाद किसी ने इस प्रकार के कार्य नहीं किये अतः इनके पकड़े जाने के बाद केन्द्रीय कार्यालय का संचालन ही बन्द हो गया। कह सकते हैं कि पैंसे की कमी के कारण सारा आन्दोलन ही ठप्प हो गया। इतने बड़े देश मे हजारों,राजाओं,जमीदारों व सेठों का पैसा जमीन में गढ़ा पड़ा रहा अथवा सुरा सुन्दरी पर खर्च होता रहा। अगर इस मे से कुछ भी पैसा क्रान्तिकारियों को मिल गया होता तो हमारा देश 10 वर्ष पहले ही स्वतंत्र हो गया होता।

महापुरूषों के जीवन में संघर्ष न तो स्वयं दम लेते है और न उस महापुरूष को ही दम लेने देते है। सतही तौर पर हम सामान्य व्यक्ति सोच सकते हैं कि क्या आवश्यकता है कि कोई ऐसे कार्य करे जिससे संघर्ष उत्पन्न हो-क्यों न शांतिपूर्ण सुखी जीवन बिताया जाय? परन्तु नियति एक ओर महापुरूष को जन हितकारी कार्यो के लिए छिपे-छिपे प्रबल प्रेरणा देती रहती है तो दूसरी ओर इतिहास ऐसे महापुरूष के संघर्ष प्रसबी कार्य कलाप को अक्षरबद्ध करने की प्रतीक्षा करता रहता है।

भाग - 3
गिरफ्तारी से रिहाई तक

आपने सिनेमा के पर्दे पर फिल्म की कहानी को जल्दी-जल्दी बदलते देखा होगा। कभी-कभी मुख्य कहानी के साथ-साथ सहयोगी कहानियां भी चलती रहती हैं। डाक्टर कटियार की जीवन कहानी भी जल्दी-जल्दी होने वाली घटनाओं एवं संगी-साथियों की कहानियों से जुड़ी कुछ ऐसी ही है।

15 मई सन् 1929 ई0 को जब डाक्टर कटियार को गिरफ्तार करके कोतवाली ले जाया जा रहा था। तो रास्ते में उन्हें ख्याल आया कि जेब में जो कागज हैं जामा तालाशी के समय पकड़े जायेंगे इनका क्या करें? उन दिनों कांग्रेसी वकीलों का एक ग्रुप इन लोगों की सहायता करता था जिनमें सी.वी. गुप्ता जो बाद में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे के साथ-साथ मोहनलाल सक्सेना का नाम मुख्य था। उनके नाम भी जेब के पर्चे में लिखे थे तथा योगेशदा की जेल से फरारी की योजना वाली चिट्ठी जिसे देने डाक्टर कटियार को आजाद के पास झांसी जाना था। बड़े महत्वपूर्ण कागज थे।

डाक्टर कटियार ने सोचा अगर ये कागज पकड़े गये तो पूरे क्रान्तिकारी दल का भंडा-फोड़ हो जायेगा। अतः इन कागजों को खा लिया जाये। पर खायें कैसे? दोनों हाथ तो बंधे थे उन्होंने सिप्राहियों से कहा कि मुझे पेशाब लग रही हैं। सिपाहियों ने कहा कि कोतवाली पहुँचकर कर लेना। डाक्टर कटियार ने बहुत कहा तो सिपाहियों ने एक हाथ खोल दिया। पेशाब करने के बहाने उन्होंने जेब के कागज मुंह में डाल लिये और आंख बचाकर चबाते रहे जब निगलने को हुए तो लुग्दी घाँटी में चिपक गयी। डाक्टर साहब का दम घुटने लगा।

डा. साहब ने स्पष्ट किया है कि एक तो कुछ खाया पिया नहीं था, फिर अचानक गिरफ्तारी से घाँटी सूख गयी थी और काफी देर से मैं मन ही मन परेशान था कि इन कागजों का मैं करूँ तो क्या करूँ? इस ऊहा पोह मे मेरा मुँह बिल्कुल ही खुश्क हो गया था। सूखी घाँटी मे लुग्दी कैसे निगली जाए उधर पुलिस वाले शोर मचाने लगे जल्दी-जल्दी मे बनायी खुश्क लुग्दी निगली तो वह घाँटी में अटक गयीं। वे अचेत होने से पहले बैठ गये सिपाहियों से पानी मांगने का इशारा किया। सिपाही जल्दी से पानी लाया, तो डाक्टर साहब पानी के सहारे लुग्दी पेट में ढ़केलेने में सफल हुए इस प्रकार डा.साहव के प्राण बचे। सिपाहियों को समझ में ही नहीं आया कि माजरा क्या हुआ?

श्री चंद्रभान गुप्त और मोहनलाल सक्सेना जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों को फंसा सकने वाले कागजों को गया प्रसाद ने एक तरह से प्राणों को संकट में डालकर निगल लिया वह बहुत समझदारी का काम था। उन दिनों लाहौर बम फैक्ट्री केस में तथा इधर-उधर गिरफ्तार होने वालों ने दल से सहानुभूति रखने वालों के भेद खोल देने के कारण क्रान्तिकारियों के प्रति जनता का विश्वास और आदर घट रहा था। क्रान्तिकारियों की असावधानी के कारण कांग्रेस के प्रसिद्ध व्यक्तियों के संकट में फंस जाने से तो दल की बदनामी की आंधी आ जाती। जनता क्रान्तिकारियों से तो वीरता,साहस और दृढ़ता की आशा रखती थी परन्तु अपने लिए समझदारी इसी बात मे है कि सर्तकता रखों। भीरूता को स्वाभाविक सर्तकता बताकर लोग समझदार कहलाते है।

यशपाल जी के शब्दों में, **"यह घटना डाक्टर साहब के**

स्वभाव और व्यवहार का बहुत अच्छा नमूना भी हैं। बिना हो हल्ला और बहस किये अपने विचार में उचित काम किये जाना उसके लिये जान पर खेल जाना। बात करने में तो जान पड़ता था। डाक्टर साहब बड़ी कठिनाई से होंठ हिला पा रहे हैं चलते हैं तो जैसे थकावट के कारण अनिच्छा से कदम उठा रहे हों। लेकिन बिना रूके चलते जायेंगे, सफर चाहे जितना लम्बा हो।"

'सिंहावलोकन से साभार''

पिंजरे में बंद शेर

अब शेर पिंजरे में बन्द था। जंगलो का शेर जिसे कोड़े के बल पर या भूखा रख कर नचाया जाता है लेकिन हमारा शेर तो कुछ ऐसा था जो धोखे से पिंजरे में बंद तो हो गया लेकिन नचाता रहा अंग्रेजी सरकार को ही। डाक्टर साहब जानते थे कि अंग्रेजी सरकार मुकदमा चलाने का ढोंग करेगी फिर फांसी पर लटका दिया जायेगा या डाल दिया जायेगा किसी अंधेरे कुएं में जहां घुट-घुट कर मरना होगा लेकिन बहादुर कभी अपना हौसला या धीरज नहीं तोड़ते।

15 मई सन् 1929 से 21 मई 1929 ई0 तक डा.साहव पुलिस रिमांड पर कोतवाली सहारनपुर में रखे गये। अंग्रेजी पुलिस के हाथों देश के इस महान क्रान्तिकारी को यातनाएं दी जा रही थीं। यातनाओं के नये-नये प्रकार थे जिनकों सुनकर कलेजे दहल जाते हैं। गरम दहकती हुयी सलाखे जब आंखो के सामने लायी जाती थीं और किनारे से चुभायी जाती थीं तो बड़े-बड़े क्रान्तिकारी हिल जाते थे फिर सबसे मोटा तगड़ा क्रान्तिकारी जिसकी मार लगाने में पुलिस को आनंद भी आता था वेबस डा. साहब पिटते-पिटते वेसुध हो जाते थे।

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी शिव वर्मा ने लिखा है "मुझे जब डाक्टर साहब के साथ की गई वदसलूकियों का हाल मालूम हुआ, तो बड़ा क्रोध आया डाक्टर साहब हमारे दल के साथी ही नहीं थे अपितु अवस्था में हमसे बड़े होने के साथ अपने व्यवहार से उन्होंने हम सबके बीच अग्रज का स्थान पा लिया था। हर साथी के साधारण से साधारण कष्ट पर विचलित हो उठना, उसकी देख-रेख करना, सेवा करना, भूख न होने का बहाना लेकर दूसरों को अपना खाना खिलाना। छोटी से छोटी चीज में भी हर साथी का हिस्सा लगाना जो न हो उसके लिए संभालकर रखना आदि उनके कुछ ऐसे गुण थे जिन के कारण मन ही मन लोगो ने उन्हें बड़ा भाई मान लिया था। मुझे लगा जैसे पुलिस वालों ने मेरे बड़े भाई का अपमान कर डाला है। लेकिन उस समय मन ही मन चिढ़ने,कुढ़ने और क्रोध करने के अलावा और मैं कर भी क्या सकता था? वह तो हमारी परीक्षा का आरम्भ मात्र था। **(दैनिक जागरण रजत जयन्ती अंक 1972)**

अधिकांश क्रान्तिकारी पकड़े जा चुके थे। सबके साथ ही सख्ती से पूछताछ की गई। एकाध साथी पुलिस की मार से टूट भी गये थे। डाक्टर साहब ने यह मान लिया कि अब मौत ही विकल्प मात्र है इसलिए पुलिस यातनाओं का उन पर कोई असर नहीं होता था किन्तु उन्हें एक ही कलख सालता रहता था कि सहारनपुर बम फैक्ट्री कांड केवल पैसा न होने से गिरफ्त में आ गया अगर डाक्टरी की दुकान का परदा बन गया होता तो फैक्ट्री भी नहीं पकड़ी जाती और जो कुछ साथियों के साथ हो रहा था वह भी नही होता। संतोष तो केवल इस बात का था कि महत्वपूर्ण पतों वाले कागज निगल लिए वरना उनके मुंह पर भी कालिख पुत जाती। जिसे उन्होंने प्राणों पर खेलकर बचा लिया।

1 जून को उन्हें सहारनपुर से लाहौर भेजा गया जहां वे लाहौर फोर्ट हवालात में 10 जुलाई तक रखे गये। इस बीच पुलिस ने शिनाख्त आदि की कार्यवाही करवायी। 10 जुलाई सन् 1929 ई0 को उन्हें अन्य साथियों के साथ लाहौर वोर्सटल जेल ले जाया गया। यहीं पर केस चला। यातनाओं का यह दौर था कि देखने वाला भी थर्रा जाय डा0 गया प्रसाद का स्वास्थ्य बहुत अच्छा था जेल कर्मी या पुलिस कर्मी उनको पीटकर क्रान्तिकारीयों पर अपनी दहशत गालिब करते थे। कभी-कभी दुबले-पतले साथियों कें हिस्से की मार भी डाक्टर साहब को पड़ती थी।

डा0 साहब की पाण्डुलिपि से " जब पुलिस पीट-पीट कर थक गई और उसे कुछ नहीं उगलवा मिला तो उन्होने एक मजेदार तरीका निकाला। हम लोग जहां रखे गये थे वहां यह पता नहीं चलता था कि किस साथी के साथ कैसा व्यवहार हो रहा है या किस ने क्या कहा है। कोठरी मे कोई सुराख तक नहीं था। जहां से किसी से बात हो जाय या आंख से कुछ दिखाई दें।

एक दिन सी. आई. डी. का दरोगा विश्वेसर सिंह मेरी कोठरी के सामने चुपचाप आकर खड़ा हो गया रात का अंधेरा था। उसके साथी के पास लालटेन थी। वह धीरे-धीरे बात करने लगा। उसने बताया कि मै सी. आई. डी. इंसपैक्टर हूँ। तुम्हारी ससुराल बैरी गया था। सोचा था कि वहां से कुछ तुम्हारे बारे में पता चलेगा जब मैं तुम्हारी पत्नी से मिला तो उसने रोते-रोते बुरा हाल कर लिया और मुझसे भईया कह दिया तो मुझे तरस आ गया और उसका संदेशा देने मैं तुम्हारे पास आया हूँ। आप जो कुछ कहना चाहते हो चुपचाप मुझसे कह दीजिए मैं आपकी पत्नी को खबर कर दूँगा।

जब वह जाने लगा तो मैंने उसकी बगल में दबा अखबार देखा तो मैंने कहा भाई बहुत दिनों से अखबार नहीं पढ़ा है। क्या मुझे यह अखवार नहीं पढ़वा सकते हो? तो उसने अपने साथी से कहा कि इन्हें जल्दी से पढ़वाकर के आ जाना और वह चला गया। जब मैंने अखवार पढ़ा तो उसमें लिखा था कि भगत सिंह से पुलिस पूरे केस खुलवाने में कामयाब हो गई। उन्होंने अपने सभी साथियों के नाम बता दिये। अखबार पढ़कर एक दम मुझे भगत सिंह पर गुस्सा आया। जबं वह सी. आई. डी. वाला चला गया तो मैंने सोचा कि यह फर्जी साला मुझें यह फर्जी अखबार पढ़वाने ही आया था। ससुराल जाने वाली कहानी उसकी गढ़ी हुई थी।

लाहौर षडयंत्र केस की कार्यवाही

लाहौर षडयंत्र केस सबसे अधिक चर्चित केस रहा है शायद ही किसी मुकद्‌मे ने देश की जनता का इतना ध्यान आकर्षित करने में सफलता प्राप्त की होगी। इस मुकद्‌मे की कार्यवाही और उसमे डा.कटियार और उनके साथियों के द्वारा बनायी गयी नीति की सफलता ही कही जायेगी कि शहीदे आजम भगत सिंह अपने जीवन काल में ही विश्व स्तर की ख्याति अर्जित करने में सफल हो गये थे।

मौत के बहुत नजदीक पहुँचे इन क्रान्तिकारियों ने विश्व की सबसे शक्तिशाली अंग्रेज सरकार को हिला दिया। यह मुकद्‌मा हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास की अमूल्य नीधि है और धन्य है वो पात्र जिन्होंने उसमे भाग लिया। होना यह चाहिए था कि

स्वतंत्रता के बाद इस केस की कार्यवाही को सरकार अपने खर्चे पर आम जनता तक पहुंचाती ताकि हमारे नौजवानों को उन पात्रों को अपना आदर्श बनाने का अवसर मिलता।

निष्कर्ष के रूप मे हम कह सकते हैं कि कितने निर्भीक थे वे लोग जिन्हे अंग्रेजों ने हर प्रकार की यातनायें दीं,उसके बाद भी उन्होंने झुकने का नाम नही लिया। शायद देश वासियों ने भी उन जांबाज बहादुरों के साथ अभी तक इंसाफ नही किया है। क्या लोगो के पास जुवान नही है या गूंगे बहरे हो गये है या पोखर के जल की तरह उनमे ठहराव आ गया है।

क्रान्तिकारियों के लक्ष्य और साधन के विषय मे सरदार भगत सिंह के ब्यान से जो उन्होंने निचली अदालत मे दिया था और अधिक स्पष्ट समझा जा सकता है। न्यायालयों में भगत सिंह से पूछा गया था कि क्रान्ति से वे क्या समझते है? प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था कि-" क्रान्ति में घातक संघर्षो का अनिवार्य स्थान नहीं है,न उसमें व्यक्तिगत रूप से प्रतिशोध लेने की ही गुंजाइश है।

क्रान्ति बम और पिस्तौल की संस्कृति नहीं है। क्रान्ति से हमारा प्रयोजन यह है कि अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिर्वतन होना चाहिए। उत्पादक अथवा श्रमिक समाज के अत्यन्त आवश्यक तत्व हैं तथापि शोषक लोग उन्हें श्रम के फलों और मौलिक अधिकारों से वंचित कर देते है। एक ओर सबके लिए अन्न उगाने वाले कृषक सपरिवार भूखों मर रहे हैं,सारी दुनिया के बाजारों में कपड़े की पूर्ति करने बाले बुनकर अपने और अपने बच्चों के शरीर को ढ़ांपने के लिए पूरे वस्त्र प्राप्त नहीं कर पाते,भवन निर्माण,लोहारी और बढ़ईगीरी के कामों में लगे लोग शानदार महलों

का निर्माण करके भी गन्दी बस्तियों में रहते और मर जाते हैं,दूसरी ओर पूंजीपति,शोषक और समाज पर घुन की तरह जीने वाले लोग अपनी सनक पूरी करने के लिए करोड़ो रूपया पानी की तरह बहा रहे है। यह भयंकर विषमताएं और विकास के अवसरों की कृत्रिम समानताएं समाज को अराजकता की ओर ले जा रही हैं। यह परिस्थिति सदा तक नहीं रह सकती तथा यह स्पष्ट है कि वर्तमान समाज-व्यवस्था एक ज्वालामुखी के मुख पर बैठी हुई आनन्द मना रही है और शोषकों के अबोध बच्चों की भांति हम एक खतरनाक दरार के कगार पर खड़े हैं।

यदि सभ्यता के ढ़ांचे को समय रहते नहीं बचाया गया तो वह नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा,अतः क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है और जो लोग इस आवश्यकता को अनुभव करते है,उनका यह कर्त्तव्य है कि वे समाज को समाजवादी आधारों पर पुर्नगठित करें। जब तक यह नहीं होगा और एक मनुष्य के द्वारा दूसरे मनुष्य का तथा एक राष्ट्र के द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण होता रहेगा,जिसे साम्राज्यवादी कहा जा सकता है तब तक उससे उत्पन्न होने वाली पीड़ाओं और अपमानों से मानव-जाति को नहीं बचाया जा सकता एवं युद्ध मिटाने तथा सार्वभौमिक शान्ति के युग का सूत्रपात करने के बारे में की जाने वाली समस्त चर्चायें कोरा पाखण्ड हैं।

क्रान्ति से हमारा प्रयोजन अन्ततः एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना है जिसको इस प्रकार के घातक खतरे का सामना न करना पड़े और जिससें सर्वहारा वर्ग की प्रभुता को मान्यता दी जाये। इसका परिणाम यह होगा कि विश्वसंघ मानव जाति को पूंजीवाद के बन्धन तथा युद्ध से होने वाली बर्वादी और मुसीबतों से बचा सकें।

लाहौर षडयंत्र केस की सुनवाई के लिए अंग्रेजी हुकूमत ने स्पेशल ट्रिव्यूनल का गठन किया जिसके निर्णय के विरूद्ध कहीं भी अपील नही की जा सकती थी। इस ट्रिव्यूनल के समक्ष क्रान्तिकारियों ने जो ब्यान दिये उसके आधार पर ही इन लोगों पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। ट्रिव्यूनल में होने वाले फैसले से सभी वाकिफ थे अब तो ध्यान इतना ही था कि क्रान्तिकारियों के किसी कृत्य से ऐसा न हो जिससे आने वाला इतिहास शहीदों की आलोचना की बात न कर दें। मुकदमें का सटीक चित्रण भगत सिंह की फिल्मों में किया गया है।

भगत सिंह आदि शत्रु की अदालत से किसी न्याय की उम्मीद नहीं रखते थे इसीलिए उन्होंने जेल के भीतर लड़ाई का फैसला किया। उन्होंने अपने मुकदमें की सुनवाई के दौरान अपने दृष्टिकोण को प्रचारित करने व समाजवाद के विचारों को लोकप्रिय बनाने और क्रान्तिकारी पार्टी के उद्देश्यों तथा प्रयोजनों को जनता के सामने रखने के लिए शत्रु अदालत को यंत्र के रूप में प्रयोग किया।

भगत सिंह ने क्रान्तिकारियों की तीन श्रेणियाँ बनाई गई। पहली श्रेणी उन लोगों की थी जिनका केंस वकीलों द्वारा लड़ा जाना था। जिनके विरूद्ध कोई संगीन अपराध नही थे दूसरी श्रेणी उन लोगों की थी जो अपना केस अपने आप लड़ें व तीसरी श्रेणी उन लोगो की थी जो शत्रु अदालत को ही मान्यता नहीं देगी इसी श्रेणी में डाक्टर गया प्रसाद कटियार,महावीर सिंह,बटुकेश्वर दत्त,कुंदन लाल,जितेन्द्र नाथ सान्याल थे। इनका काम था बुनियादी सबालों को उठाना,सरकार तथा उसकी सरकार को मान्यता देने से इनकार करना। इस ग्रुप के पांच साथियों ने विशेष ट्रिब्यूनल के सामने पहले

ही दिन एक लिखित ब्यान के द्वारा ऐलान किया कि हम न तो विदेशी सरकार को मानते है और न उसकी अदालत को। हम शत्रु की अदालत से किसी प्रकार के न्याय की आशा नहीं करते और इसलिए हम लोग अदालत की कार्यवाही में भाग नहीं लेगें।

विशेष ट्रिब्यूनल के समक्ष पहले ही दिन इन लोगों ने लिखित ब्यान दिया। तत्कालीन सरकार ने वह ब्यान राजद्रोहात्मक बताकर तत्काल जब्त कर लिया था। बाद में " भगत सिंह चुनी हुई कृतियाँ " पुस्तक में " तमाशा अदालत में हम भाग न लेंगें " के नाम से वह ब्यान पन्ना न0 148/149 पर छापा गया है। यहां हम उसी पुस्तक से ब्यान साभार प्रस्तुत कर रहें है।

क्रान्तिकारियों का लिखित ब्यान

सेवा मे,

कमिश्नर स्पेशल ट्रिब्यूनल

लाहौर षड्यंत्र केस लाहौर

" श्रीमान जीं,

मै अपने सहित अपने पांचो साथियों की ओर से केस के आरम्भ में ही ये वक्तव्य देना आवश्यक समझता हूँ। हमारी इच्छा है कि इसे रिकार्ड पर सुरक्षित रखा जाए।

हम इस केस में किसी प्रकार का भाग लेने नहीं जा रहे है। क्योंकि हम लोग इस सरकार को मान्यता नहीं देते है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह न्याय पर आधारित है या कि उसकी स्थापना कानून द्वारा हुई है।

हमारा विश्वास है और हम ऐलान करते है कि मनुष्य ही सम्पूर्ण शक्ति और अधिकार का स्रोत है। अतः कोई एक व्यक्ति या सरकार उस समय तक शक्ति या अधिकार की हकदार नहीं है जब तक कि वे अधिकार सीधे जनता से प्राप्त न किये जाएं।

चूंकि यह सरकार इस सिद्धान्त का पूर्ण निषेध है अतः इसके अस्तित्व का भी कोई औचित्य नहीं है। ऐसी सरकारों का गठन ही दलित राष्ट्रों के शोषण के लिए किया जाता हैं। ऐसी सरकार को तलवार या पाश्विक शक्ति जिसके सहारे वे स्वतंत्रता एवं स्वाधीनता के विचारों तथा जनता की आकांक्षाओं को कुचलने का प्रयास करते है, को छोड़कर और किसी के सहारे कायम रहने का अधिकार नहीं है।

हमारा विश्वास है कि इस प्रकार की सभी सरकारें, विशेषतया ब्रिटिश सरकार जिसे असहाय भारतवासियों के ऊपर जबरदस्ती थोप दिया गया है, तबाही एवं खून खराबे के भी साधनों से लैस डाकुओं एवं शोषकों के एक संगठित गिरोह के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। अमन और कानून के नाम पर ये उन सभी लोगों को कुचल देते है जो उनको बेनकाब करने या उनका विरोध करने का साहस करते है।

"........ हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि साम्राज्यवाद लूटने खसोटने के उद्देश्य से संगठित किये गये एक विस्तृत षडयंत्र को छोड़कर और कुछ नहीं है। साम्राज्यवाद मनुष्य द्वारा मनुष्य की तथा एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र को धोखा देकर शोषण करने की नीति के विकास की अन्तिम अवस्था है। साम्राज्यवादी अपने लूट खसोट के मनसूबों को आगे बढाने की गरज से केवल अपनी अदालतों द्वारा ही राजनैतिक हत्याएँ नही। करते, वरन् युद्ध के रूप में कत्लेआम, विनाश तथा अन्य कितने वीभत्स एवं भयानक कार्यो का संगठन

करते हैं जो उनकी लूट खसोट की मांगों को पूरा करने से इन्कार करते हैं या उनके तबाह करने वाले घृणित मनसूबों का विरोध करते हैं। उन्हें वे गोली से उड़ा देने में जरा भी नहीं हिचकिचाते। न्याय तथा शान्ति का रक्षक होने के बहाने वे शांति का गला घोटते हैं अशांन्ति की सृष्टि करते है, बेगुनाहों की जान लेते है और सभी प्रकार के जुल्मों को प्रोत्साहन देते है।

हमारा यह विश्वास है कि मनुष्य होने के नाते हर व्यक्ति आजादी का हकदार है,उसे कोई दूसरा व्यक्ति दबाकर नहीं रख सकता। हर मनुष्य को अपनी मेहनत का फल पाने का पूरा अधिकार है और हर राष्ट्र अपने साधनों का पूरा मालिक है यदि कोई सरकार उन्हें उनके इन प्रारम्भिक अधिकारों से वंचित रखती है तो लोगो का अधिकार ही नही यह उनका कर्त्तव्य है कि ऐसी सरकार को उलट दें, मिटा दें। चूंकि ब्रिटिश सरकार इन उसूलों से,जिनके लिये हम खड़े हुए है,बिल्कुल परे है इसीलिए हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि क्रान्ति के द्वारा मौजूदा हुकूमत को समाप्त करने के लिये सभी कोशिशें तथा सभी उपाय न्याय संगत है।

हम परिवर्तन चाहते हैं सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक सभी क्षेत्रों में आमूल परिर्वतन। हम मौजूदा समाज को जड़ से उखाड़ कर उसके स्थान पर एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते हैं। जिसमें मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण असंम्भव हो जाये और हर व्यक्ति हो हर क्षेत्र में पूरी आजादी हासिल हो जाये। हम महसूस करते हैं कि जबतक समाज का पूरा ढ़ाँचा ही नही बदला जाता और उसकी जगह समाजवादी समाज की स्थापना नहीं हो जाती तब तक दुनिया महाविनाश के खतरे से बाहर नहीं है।

" रही बात उपायों की, शांतिमय अथवा दूसरे जिन्हें हम क्रान्तिकारी आदर्शो की पूर्ति के लिये काम में लायेंगे, हम कह देना चाहते है कि इनका फैसला करना बहुत कुछ उन लोगो पर निर्भर करता है जिनके पास ताकत है। क्रांतिकारी तो सब का फायदा चाहने के सिद्धान्त पर विश्वास करने के नाते शांति के ही उपासक है। सच्ची और टिकने वाली शांन्ति के जिसका आधार न्याय और समानता पर है न कि कायरता पर आधारित तथा संगीनो की नोक पर बचाकर रखी जाने वाली शांन्ति के।

बयान के अन्त में कहा गया था " हम पर ब्रिटिश सरकार के विरूद्व युद्ध छेड़ने का अभियोग लगाया गया है। हम ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाई गयी किसी भी अदालत से न्याय की आशा नहीं करते। और इसीलिए हम इस न्याय नाटक में भाग नही लेंगे।

क्रान्तिकारी बम और पिस्तौल तभी उठाते है जब वो अत्यावश्यक हो जाता है। अन्तिम उपाय के रूप में।

हमारा विश्वास है कि कानून और व्यवस्था मनुष्य के लिये है न कि मनुष्य कानून और व्यवस्था के लिए। क्रान्तिकारी फ्रांस की सर्वोच्च ज्यूरी कौंसल के शब्दों में -

" कानून का उद्द्देश्य स्वतंत्रता को समाप्त करना या उस पर रोक लगाना नही है, उसका उद्देश्य है स्वतंत्रता की सुरक्षा तथा उसका पालन। शासनार्थ कानून बनाने के लिए न्यायसंगत अधिकार की आवश्यकता होती है, जिसकी स्थापना सार्वजनिक हितों के लिए हुई हो और जो अन्ततोगत्वा जनता की सहमति तथा उसके द्वारा प्रदत्त अधिकारों पर आधारित हो। इस नियम से कोई भी ऊपर नहीं है, विधायक गण भी नही। "

कानून की पवित्रता तभी तक सुरक्षित रह सकती है जब तक वह जनता की इच्छाओं को अभिव्यक्त करता है किसी जालिम एवं दमनकारी वर्ग के हाथों का हथियार बन जाने पर वह अपना महत्व और पवित्रता खो देता है। क्योकि न्याय के प्रशासनार्थ पहली और आधारभूत शर्त है निहित स्वार्थ की समाप्ति।

ज्यों ही कानून जनप्रिय सामाजिक आवश्यकताओं को प्रतिबिम्बत करना छोड़ देता है वह अन्याय और अत्याचार के पोषित कर्मों का साधन बन जाता है। इस प्रकार के कानूनों को बनाए रखना जनहित के विरूद्ध कुछ विशेष हितों को सुरक्षित रखने की मक्कारी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

मौजूदा सरकार के नियमों एवं कानूनों का अस्तित्व ही हमारी जनता के हितों के वरखिलाफ विदेशी शासकों के स्वार्थ के लिए है और ऐसी स्थिति में उनके प्रति कोई भी नैतिक बन्धन नही हो सकता। अतः इन नियमों का उल्लंघन एवं अवज्ञा हर भारतीय का अनिवार्य कर्त्तव्य है। शोषण की मशीनरी का एक पुर्जा होने के नाते अंग्रेजी अदालतें न्याय नहीं दे सकती। खास कर राजनैतिक मुकदमों में जहां सरकार के एवं जनता के हितों के बीच टकराव होता हैं हम जानते है कि यह अदालतें न्याय का माखौल उड़ाने वाले मंचों के अलावा और कुछ भी नहीं है। इन्हीं कारणों से हम नाटकीय मुकदमें में हिस्सा लेने से इन्कार करते है और आगे से हम इस केस की कार्यवाही में कोई हिस्सा नहीं लेंगें।

भवदीय

जे0एन0 सान्याल, महावीर सिंह,

बी0के0 दत्त, डा0 गया प्रसाद व कुन्दन लाल

डा0 गया प्रसाद आदि के उपरोक्त ब्यान से स्पष्ट है कि क्रान्तिकारियों की देश की आजादी के बारे में अपनी एक अलग ही सोच थी जिसे अहिंसा के तथाकथित पुजारी के नाम से जाने वाले नेताओं ने मान्यता नहीं दीं उनके विचार से लाला लाजपत राय की शहादत देश की आजादी की लड़ाई का एक हिस्सा मात्र थी। जिसका उन्हें कोई मुकदमा नहीं चलाना था। जबकि क्रान्तिकारियों के विचार से यह शहादत आजादी की लड़ाई का एक हिस्सा तो थी ही साथ ही साथ मनुष्य के ऊपर मनुष्य द्वारा किया गया जबरदस्ती एक अपराध भी था। जिसकी उसे सजा मिलनी चाहिए। इसीलिए उन्होंने सांडर्स को मारकर उसकी भरपाई की। तथा अंग्रेजों को चेतावनी भी दी कि अगर तुम निरपराध निर्दोष नेताओं को शासन के उन्माद में मारकर अफसोस तक जाहिर नहीं कर सकते तो यह भारत वीरो की धरती है। जलियांवाला बाग हत्याकांड का बदला भी लिया जायेगा और लाला जी की मृत्यु का भी।

इन विचारों को इंसाफ के तराजू पर तौलें तो लगेगा कि असल में अहिंसा के पुजारियों की रक्षा करने वाले भी भगत सिंह और उनके साथी ही थे अन्यथा उन्मादी अंग्रेज सरकार जो भारतीयों को कुत्तों से भी बदतर समझती थी। मानव का मूल्य कीड़ों मकोड़ों के जीवन से अधिक नहीं समझा जाता था। वह लोंग मुट्ठी भर अहिंसा के तथा कथित पुजारी नेताओं को खामोशी से चरित्र हनन का अभियोग लगाकर कभी का दफना देते। अथवा अपना चमचा समझकर उनको अपने हितों का साधन बना लेते।

7 अक्टूबर सन् 1930 ई0 को लाहौर षडयंत्र केस का चिरप्रतीक्षित फैसला सुनाया गया फैसले के मुताबिक सजाओं का विवरण हम विषय प्रवेश में लिख चुके है।

डा0 गया प्रसाद की सजा का आदेश मूल रूप में,

U/s 4(B) of the Explosive Substance Act read with Section 6 of that Act and with Section 120 B of IPC. He was an active and important sub-ordinate member of the party and took part in the manufacture or Boms. He is sentenced to transportation for life.

अर्थात - **विस्फोटक पदार्थ एक्ट की धारा 4 (बी) व 6 तथा भारतीय दण्ड विधान की 120 (बी) के अर्न्तगत, वे दल के महत्वपूर्ण सदस्य थे और उन्होंने बम बनाने में हिस्सा लिया। काला पानी की सजा दी जाती है।**

भगत सिंह सुखदेव और राजगुरू को फांसी देने से पहले अन्य कैदियों को लाहौर जेल से हटा दिया गया। डा0 गया प्रसाद आदि को बताया गया कि उन्हें काला पानी भेजा जा रहा है। सरकार समझ रही है कि फांसी के समय यदि ये लोग लाहौर जेल में होंगे तो देश में उपद्रव भड़कने की संभावना है। इसीलिए उन्हें हटाकर दिसम्बर सन् 1930 ई0 में न्यू सेण्ट्रल जेल मुल्तान (अब पाकिस्तान में) भेज दिया गया।

भगत सिंह से जुदाई के समय का हाल डा0 गया प्रसाद के शब्दों में मनोहर कहानियों में अगस्त सन् 1989 ई0 में इस प्रकार छपा था-

"एक रात अचानक हमारी काल कोठरियों के ताले खुले। हमारे क्रान्तिकारी साथियों को फांसी देने से पहले गोरी सरकार हमें कहीं दूर भेज देना चाहती थी। जेल का बड़ा दरोगा पूरे दल-बल के साथ हमें लेकर फाटक की ओर चल पड़ा कुछ दूर चलकर वह बोला अपने साथियों से नहीं मिलोगे।

हमने उसकी उदारता के लिए धन्यवाद दिया। तब उसने हम सबको एक कोठरी के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया। उस अंधेरी

कोठरी में सींकचों के पीछे उस पार सरदार भगत सिंह खड़े थे तनाव रहित चेहरे पर चिरपरिचित मुस्कान लिये हुए।

जिन्दगी में अब कभी यह बहादुर साथी (भगत सिंह) देखने को नहीं मिलेगा। यह ख्याल कौंधते ही हम सबकी आंखे नम हो गयी। उनसे अन्तिम विदाई लेकर जब हम लोग चलने लगे तभी हमारे साथी जयदेव कपूर ने भगत सिंह से पूछा "सरदार तुम फांसी के फंदे पर लटका दिये जाओगे हम जानना चाहते है कि तुम्हें इसका अफसोस तो नहीं।"

प्रश्न सुनकर पहले तो सरकार भगत सिंह ठहाका मारकर हंस पड़े। फिर गम्भीर होकर बोले, आज फांसी की इस कोठरी में सीखचों के पीछे बैठकर भी मैं करोड़ों देश वासियों के कंठों से निकलती इन्कलाब जिन्दाबाद की हुँकार सुन सकता हूँ। मेरी इतनी छोटी सी जिन्दगी का इससे अधिक मूल्य और हो भी क्या सकता है? भगत सिंह से हुई अन्तिम मुलाकात के क्षणों को याद करते हुए डाक्टर साहब बताते थे,-" सरदार से बिछुड़ते वक्त हम लोगो के आंसू निकलने लगे थे।" तब उन्होंने हमें समझाते हुए कहा- पागल मत बनो,यह भावुक होने का समय नहीं है। मेरा क्या है? मैं तो कुछ ही दिनों बाद फाँसी पर झूलकर सारे झंझटों से छुटकारा पा जाऊँगा। लेकिन तुम लोगो को लम्बा सफर तय करना है। मुझे यकीन है कि उत्तरदायित्व के भारी बोझ और लम्बे अभियान के बावजूद तुम लोग थकोगे नहीं। पस्त नहीं होगे और हारकर रास्ते में बैठ नहीं जाओंगे।"

कैसे महत्वपूर्ण क्षण रहे होगें वे कि एक इतिहास पुरूष जिसकी खुशी में सबकी खुशी थी और जिसके दुख में सबकों दुख था हमारे देश का बह अद्वितिय वीर जिसने ब्रिटिश साम्रज्य की जड़ें

हिला दी थीं उससे अंतिम भेंट के समय दिये गये उनके अपने साथियों को अमृत वचन रूपी निर्देश। ओह डा. गया प्रसाद को जीवनभर चलने को एक मार्ग मिल गया,एक विचार मिल गया। जिस पर वह चले और खरे भी उतरें। कहते है कि:-

मैं पहाड़ों से लड़ता रहा उम्र भर और कुछ लोग
गीली मिट्टी खोद कर फरहाद बन गये

कितनी कठिन डगर थी? उसूलों को बनाना,उन्हें स्वीकार करना और उन्हीं पर अमल करना तथा सफल भी होना। लेकिन डा. गया प्रसाद तो अपने के नाम पर सभी कुछ गवां चुके थे। इसके बाद भी हिम्मत नही हारी, यह ऊर्जा भगत सिंह ने उनके दिल मे भर रक्खी थी। जिसके कारण दो-दो महीने भूख हड़ताल करने की उनमें शक्ति थी एवं जेल की तमाम अन्य यातनाओं को झेलने की शक्ति थी। निष्कर्ष के रूप मे हम कह सकते हैं कि ड़ा गया प्रसाद ने भगत सिंह का अन्तिम संदेश हृदयंग्म कर लिया था,जिसका वे हमेशा पालन करते थे।

मुल्तान में एक माह रखने के बाद जनवरी सन् 1931 ई0 से जून सन् 1932 ई0 तक डा0 गया प्रसाद और महावीर सिंह आदि को बेलारी सेण्ट्रल जेल कर्नाटक भेज दिया गया। यहीं पर डा0 गया प्रसाद को,अल्फ्रेड पार्क इलाहाबाद में 27 फरवरी सन् 1931 ई0 को हुई चन्द्रशेखर आजाद की शहादत का पता चला। उन्हीं दिनों 23 मार्च दिन सोमवार, सन् 1931 ई0 का शाम 7 बजकर 33 मिनट पर लाहौर सैण्ट्रल जेल में हुई सरदार भगत सिंह और उनके दो साथियों को फाँसी लगने का भी पता चला। पता तो उन्हें पहले से ही था कि भगत सिंह को 24 मार्च को फांसी लगनी थी सूचना

में केवल अंतर इतना ही था की फाँसी एक दिन पहले रात को 7. 33 पर लगी। शहीदे आजम भगत सिंह डा.गया प्रसाद के आदर्श थे इसलिए उनकी शहादत का संक्षिप्त विवरण भी आवश्यक है।

"युगदृष्टा भगत सिंह" नामक पुस्तक में भगत सिंह की भतीजी **वीरेन्द्र सिंधु** ने 22 मार्च 1931 यानी फांसी लगने से एक दिन पहले का हाल इस प्रकार लिखा है चौदह नम्वर वैरक के साथियों ने एक पर्चा भगत सिंह के पास भेजा **"सरदार आप एक सच्चे इंकलावी की हैसियत से बतायें कि क्या आप चाहते है कि आप को बचा लिया जाय? इस अखिरी वक्त में भी शायद कुछ हो सकता है"** .... भगत सिंह ने अपने साथियों को उत्तर भेजा " जिन्दा रहने की ख़्वाहिश मुझ में भी होनी चाहिए। लेकिन मेरा जिन्दा रहना मशरूत (एक शर्त) पर है। मैं कैद होकर या पाबंद होकर जिन्दा रहना नही चाहता।

मेरा नाम हिन्दुस्तानी इन्कलाब पार्टी का निशान बन चुका है। इन्कलाब पसंद पार्टी के आदर्शों और बलिदानों ने मुझे बहुत ऊँचा कर दिया है। इतना ऊँचा कि जिन्दा रहने की सूरत में इससे ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता। .... हां एक ख्याल आज भी चुटकी लेता है। देश और इंसानियत के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं उनका हजारवां हिस्सा भी पूरा न कर पाया। अगर जिन्दा रहता तो शायद इनकों पूरा करने का मौका मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता।

इसके सिवा कोई लालच मेरे दिल में फाँसी से बच रहने के लिए कभी नहीं आया। मुझ से ज्यादा खुश किस्मत कौन होगा? मुझे आजकल अपने आप पर बहुत नाज है। मुझमें अब कोई ख़्वाहिश

बाकी नहीं है। अब तो बड़ी वेतावी से आखिरी इम्तहाँ का इन्तजार है। आरजू है कि यह और करीव हो जाये।

–आपका साथी भगत सिंह

फाँसी के दिन का वर्णन करते हुए शहीदे आजम की भतीजी वीरेन्द्र सिंधु अपनी पुस्तक में लिखती है कि फांसी लगाने को ले जाते समय भगत सिंह ने जेल अधिकारियों से कहा-"**हमारे हाथों मे हथकड़ियाँ न लगायी जाएँ और हमारे चेहरों पर कन्टोप न ढ़के जाएँ।**" भगत सिंह की बात मान ली गयी उसी समय सुखदेव और राजगुरू भी अपनी कोठरियों से आ गये। तीनों ने एक दूसरे को देखा और गले लगाया।

अब भगत सिंह बीच में थे और एक दूसरे की बाहों मे बाहें डाले चल रहे थे। अगल-बगल जेल अधिकारी, आगे-पीछे जेल वार्डर। भगत सिंह ने गाना शुरू किया-

"दिल से निकलेगी न मरकर भी वतन की उल्फत,
मेरी मिट्टी से खुशवू–ए– वतन आएगी

फाँसीघर में भीतर लाहौर का अंग्रेज डिप्टी कमीशनर खड़ा था। इन तीनों को खुला देखकर जरा परेशान हुआ, तभी भगत सिंह उनकी ओर मुखतिव होकर अंग्रेजी मे बोले जिसका भाव यह था-"मजिस्ट्रेट महोदय आप भाग्यशाली है कि आज आप अपनी आँखों से यह देखने का अवसर पा रहे हैं कि भारत के क्रान्तिकारी किस प्रकार प्रसन्नता पूर्वक अपने सर्वोच्च आदर्श के लिए मृत्यु का आलिंगन कर सकते हैं।" तीनों ने एक साथ नारा लगाया " **इन्क्लाब जिन्दावाद,साम्राज्यवाद मुर्दावाद**" इसके वाद तीनों ने अपना-अपना फंदा पकड़ा और उसे चूम कर अपने ही हाथों से गले मे डाल लिया।

जल्लाद द्वारा चरखी घुमाते ही तख्ता गिरा और तीनों वीर भारत मां को अर्पित हो गये।

अंग्रेजो ने फांसी दिये हुए भगत सिंह को फिर एक वार फांसी देने का इरादा बांधा और उनकी तथा उनके साथियों की लाशों को काट कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। ये टुकड़े बोरियों मे भर कर छोटे दरवाजे से निकालकर ट्रक में लादकर ले जाये गये।

जब लाहौर सैण्ट्रल जेल में यह कार्यवाही हो रही थी उसी समय लाहौर के मोरी गेट के बाहर हजारों आदमी जलसे में बैटे भगत सिंह के बारे में विचार विमर्श कर रहे थे। वहीं उन्हें भगत सिंह को फाँसी दिये जाने का समाचार मिला। तो लोग जेल की ओर दौड़े। तब तक लाशों का ट्रक फिरोजपुर की ओर चला गया था जब यह खबर फिरोजपुर पहुँची तो वहाँ से भी लोग दौड़े।

लाशों को इक्ट्ठा कर मिट्टी का तेल छिड़क दाह संस्कार कर रहे पुलिस वालों ने रात में जब इधर-उधर से अपनी ओर मशाले आती देखीं तो वे अधजले लाशों के टुकड़ों को सतलज मे फेंक कर भाग गये।

दूसरे दिन लोगों ने उस जगह को ढूढ़ लिया तथा बचे हुए अधजले अंगों को इक्ट्ठा करके हुसैनीवाला मे अन्य लोगों के साथ परिवार के लोगों ने अलग-अलग तीन चितायें बनाकर दाह संस्कार कर दिया। बाद के दिनों में जहाँ स्मारक बनाए गये हैं। यह स्थान पाकिस्तान सीमा से 10 किलोमीटर पहले भारत में है।

हाल ही में इंग्लैण्ड के प्रकाशन समूह यूनीस्टार से प्रकाशित भारतीय मूल के प्रवासी कुलवंत सिंह कूनर और जी.एस.सिधंरा द्वारा अंग्रेजी मे लिखी गयी पुस्तक"**सम हिडेन फैक्टसः मारटरडम**

ऑफ शहीद भगत सिंह" में भगत सिंह की शहादत से जुड़े उन रहस्यों और अनसुलझे सवालों के जवाब को ब्रिटिश इंडिया के एक इंटेलीजेंस ब्यूरों एजेंट द्वारा खोजने की कोशिश की गई है जिसमें कहा जाता है कि तीनों देशभक्तों के शव उनके परिजनों को नहीं सौंपे गए,तीनों के शवों का अंतिम संस्कार कहां किया गया और उनके शवों का पोस्टमार्टम क्यों नहीं किया गया?

इन रहस्यों को खोजते हुए पुस्तक में कहा गया है कि सांडर्स की मौत का बदला लेने के लिए उसके रिश्तेदार अंग्रेज अफसरों ने तीनों देशभक्तों को फांसी के फंदे पर टांगा और तुरंत ही मरने से पहले उतार लिया। निजी रंजिश निकालने के लिए लाहौर छावनी में ले जाकर तीनों को गोलियों से छलनी कर शहीद कर दिया गया। फिर लाहौर से 6 मील दूर सतलुज और ब्यास दरिया के संगम स्थल पर उनको जला दिया गया। इस कथित फांसी के चश्मदीद गवाह जल्लाद को भी उसी दिन मार दिया गया। अंग्रेज सैनिकों ने जलते शवों पर पानी फेंककर आधे बचे अंगों को हुसैनीवाला में ले जाकर फेंक दिया। भगत सिंह की बहन अमर कौर भी पुष्टि कर चुकी हैं कि शहीदों के आधे-अधूरे शव हुसैनीवाला में पाए गए थे। अंग्रेजों ने इसे ऑपरेशन **"ट्रोजन हार्स"** नाम दिया था।

भगत सिंह और उनके साथियों को फाँसी लगाये जाने की खवर जब विभिन्न जेलों मे बन्द भगत सिंह के साथियों को मिली तो उन्होंने आँपस में शोक सभा कर भगत सिंह को श्रद्धाँजलियाँ दीं तथा प्रतिज्ञायें कीं कि कितनी ही मुसीबत क्यों न झेलनी पड़े लेकिन हम सब भगत सिंह के बतायें रास्ते पर चलते रहेंगे।

वक्त के साथ बड़े बड़े जख्म भी भर जाते हैं लेकिन कुछ जख्म ऐसे होते हैं जो कभी नही भरते। साथी भगत सिंह और साथी चन्द्रशेखर आजाद की शहादत डाक्टर गया प्रसाद को ऐसे ही जख्म दे गयी। वह बीमार रहने लग गये। फिर भी उन्होंने साथियों को संगठित करके जेल में ही कम्युनिस्ट कंसालिडेशन की सदस्यता ले ली। शुरू में उनके कुछ साथियों ने साम्यवादी विचार धारा का विरोध किया। लेकिन थोड़े समय बाद उनके सभी साथियों ने साम्यवादी विचारधारा को अपना लिया।

वेलारी सेण्ट्रल जेल से डा0 साहब को मद्रास जेल लाया गया। 1 जून सन् 1933 ई0 को उन्हें अंडमान निकोबार भेजा गया। यह तो उम्मीद नहीं थी कि डा0 गया प्रसाद जी बच जायेगे लेकिन डाक्टर साहब में जीवन शक्ति बहुत थी। उन्हें आशा थी कि हमारा देश अवश्य आजाद हो जायेगा। टेविल की राजनीतिक बहस करने बाले देश के तमाम दूसरे लोगों का कहना था कि अंग्रेज सरकार जाने वाली नहीं है। वह इन्हें अंडमान निकोबार भेजकर तड़पा-तड़पा कर मार देगी।

अंण्डमान जेल की यातनायें कितनी भयंकर थी इसका अनुमान दामोदर विनायक सावरकर की जीवनी से लगा सकते है सावरकर नौजवानों की उस पीढ़ी से सम्बन्ध रखते हैं जिसने बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में देश के अन्दर तथा देश के बाहर क्रान्तिकारी कार्यों में भागीदारी तथा नेतृत्व किया। जब सावरकर को अंण्डमान जेल में यातनायें दी गयी तो वे सहन नहीं कर सकें। आगे चलकर सावरकर को ब्रिटिश शासन से क्षमा माँगनी पड़ी। इस प्रकार कालापानी से छूटने के कारण, हिन्दू महासभा से जुड़ने के कारण तथा महात्मा गाँधी की हत्या का आरोपी होने के कारण वे विवादों के घेरे में आ गये।

डा. गया प्रसाद इन्हीं भयंकर यातनाओं को सहते हुये अंग्रेजी सरकार से लड़ते रहें। उन्होंने अन्डमान में 46 दिन की भूख हड़ताल की। उन दिनों अन्डमान सैल्यूलर जेल में 400 कैदी काला पानी की सजा भोग रहे थे। उनका जीवन नारकीय था। जेल प्रशासन से कोई शिकायत कर नहीं सकता था। अगर किसी ने शिकायत की तो उसे जेल प्रशासन मरवाकर समुद्र में फिंकवा दिया करता था। यह सब दृश्य डाक्टर गया प्रसाद ने देखा तो उनकी वहां के अधिकारियों से कहासुनी हो गयी। अब डाक्टर साहब समझते थे कि मौत बहुत नजदीक है इसीलिए उन्होंने अपने मरने से पहले वे सारे तरीके अपनाये जिनसे अंग्रेज जल्दी से जल्दी भारत से विदा हो जाये। उन्होंने सैल्युलर जेल को आजादी की लड़ाई का अड्डा बना दिया। इस लड़ाई में उनके कई साथी शहीद हो गये।

अण्डमान जेल में ही उनका स्वास्थ्य भी कमजोर हो गया था। यहीं पर डा0 साहब को अपनी पत्नि रज्जो देवी के निधन व 7 वर्षीय उमा के अनाथ होने का दुखद समाचार मिला। फिर भी वे शान्तिपूर्वक अपने मार्ग पर बढ़ते ही रहे। जब हिन्दुस्तान के अतिरिक्त विश्व के अखवारों में भी डाक्टर गया प्रसाद के स्वास्थ्य के बारे में छपा तो अंग्रेज सरकार ने उन्हें दमदम (कोलकाता) सेण्ट्रल जेल बुला लिया। यहां पर उनका इलाज हुआ लेकिन यहां बंगाल के क्रान्तिकारियों का जमावड़ा था इसीलिए उन्हें यहां से हटा दिया गया एवं फिर लाहौर सेण्ट्रल जेल भेज दिया गया।

डा. गया प्रसाद कटियार की पत्नी की मृत्यु

स्मरणीय है कि जब रज्जों देवी ने सुना कि डाक्टर साहब जेल में बीमार है और मिलाई नहीं की जा सकती। तो सामन्ती परिवार की लक्ष्मण रेखा से बंधी बहू उन्हें देखने भी न जा सकी तिल-तिल जलकर उस सुहागिन विधवा ने अपने प्राण त्याग दिये परन्तु पति के दर्शन नहीं कर सकी। उस महान आत्मा,साध्वी,पति परायणा की मृत्यु भी देश के ऊपर एक शहादत है।

डा0 साहब ने पत्नी रज्जों देवी की मृत्यु के साथ -साथ उसके तड़प-तड़प कर मरने की कहानी भी सुनी कि उसने अन्त में दवा लेने से इन्कार कर दिया था परिवार के लोगों ने उनकों जिन्दा रखने हेतु दवाई खिलाने के लिए पुत्री उमा का वास्ता भी दिया परन्तु उन्होंने अपने पति डा0 गया प्रसाद की बीमारी की खबर सुनकर उनके मरने से पहले ही प्राण त्याग देना उचित समझा। रज्जों देवी की मृत्यु एक पति परायणा की मृत्यु, एक ऐसी सधवा विधवा की मृत्यु,एक ऐसी पत्नि की मृत्यु जिसको लगा कि बीमार पति से पहले ही उसको मरना है जबकि उसको ठीक से पता भी नही चल पा रहा था कि डा.साहब कितने वीमार है? फिर भी मृत्यु का बरण कर लिया। कह सकते है कि रज्जों देवी शहीद हो गयी। उनकी मृत्यु कठोर से कठोर हृदय को झकझोर देने वाली मार्मिक मृत्यु है। रज्जों ने नही सोचा की पति ने तो कहा था कि वह पुलिस की गोली से मर सकता है या फांसी पर भी चढ़ सकता है पर वो भविष्य में घटने वाली घटनाओं को देखने के लिए एक आशा की डोर से बांधे हुये वह जिन्दा रही।

रज्जों ने सुना था कि डा. साहब को पुलिस ने पीट-पीट कर मार डाला,वीमारी मे बिना दवा दिये मार डाला,जेल मे सड़ा-सड़ा कर मार डाला। क्या-क्या नही हुआ बाद में उसके पति के साथ। अव उन्हें तड़पा-तड़पा कर मारा जा रहा है उससे बर्दाश्त नही होता उसके जिन्दा रहने का अब कोई मूल्य नही है इसलिए अव उसने वेटी उमा का हाथ अपने छोटे भाई अमर नाथ कटियार के हाथ मे देते हुये कहा कि भैया बेटी का ख्याल रखना। परिवार के लोगों ने रज्जो से कहा कि बेटी उमा के लिए तो जिन्दा रहों कुछ खा लो पर उसने ऐसा नही किया। उसे संतोष तो यह था कि बेटी की देखरेख उसका मामा ठीक से कर लेगा। इसलिए वह शान्त हो गयी सिर्फ एक हिचकी के बाद।"

इन्हीं दिनों सरकार ने डा.साहब को लाहौर से इलाहाबाद की नैनी जेल भेज दिया। डा. साहब अब मृत्युशैया पर थे कि भारत में कम्युनिस्ट पार्टी ने देशव्यापी आन्दोलन की भूमिका बनाई।

घबराई सरकार ने आन्दोलन होने से पहले ही डाक्टर गया प्रसाद को इलाज के लिए लखनऊ भेज दिया। उनकी सेवा-सुश्रूषा के लिए देश के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी शिव वर्मा को पेरोल पर रिहा कर उनके पास भेज दिया। जहाँ उनका तीन महीने की लम्बी बीमारी के बाद आपरेशन हुआ। आपरेशन ठीक हो गया शिव वर्मा की तीमारदारी काम आयी। डा. साहब की इच्छा शक्ति और हिम्मत दोनों के कारण अब वे पूरी तरह से स्वस्थ हो रहे थे। अस्पताल मे इलाज के दौरान डाक्टर साहब की मिलाई पर से रोक हटा दी गयी थी। उनके साले अमर नाथ(वर्तमान मंत्री प्रेमलता कटियार के पति) उनसे मिलने जेल गये। वहां उन्होंने अन्य बातों के साथ-साथ उमा की शादी के बारे में बातचीत की।

डा0 साहब ने उमा को बचपन में ही देखा था सो उन्हें यह ख्याल ही नहीं आया कि बेटी शादी के योग्य हो गयी होंगी। उन्होंने कहा मेरा तो पता नहीं कब छूटे? आप अच्छा लड़का देखकर उमा का विवाह कर दीजिए।

उमा के पालक मामा अमरनाथ ने उमा का विवाह कर दिया। विवाह के बाद उमा और उसके पति हरनाम सिंह जेल में डा0 साहब से मिलने गये। उन दिनों जेल में मिलाई के नियम बड़े कठोर थे खासतौर से क्रान्तिकारी वंदियों से मिलायी करने के लिए काफी औपचारिकताऐं पूरी करनी होती थी। हरनाम सिंह ने अपने क्रान्तिकारी ससुर के दर्शन करने व उनसे शादी का आशीर्वाद लेने के लिए वे सारी औंपचारिकतायें पूरी की। वे मिलाई के लिए उमा को साथ लेकर लखनऊ जेल गये। जेल मे अंदर जाने पर ज्ञात हुआ कि आम कैदियों की तरह यहां क्रान्तिकारी सजा-याफ्ताओं की मिलाई नहीं होती है। उनसे बैरक में ही मिला जा सकता है स्टाफ ने उन्हें डाक्टर गया प्रसाद की बैरक के पास छोड़ दिया।

वहाँ आमने सामने दो बैरकें थीं उमा ने पिता को कभी देखा नहीं था वह ठिठकी और सामने वाली बैरक के सामने जैसे ही पहुंची दिल का दर्द आंखो में होकर बहने लगा। दोनो कैदी समझ नही पा रहे थे कि वह कौन है? उन्होंने काफी देर बाद सीखचों के भीतर से ही पूछा-"बेटा आप कौन हो किससे मिलना चाहती हो?" हरनाम सिंह ने कहा-" हम डा0 गया प्रसाद जी से मिलना चाहते हैं यह उनकी बेटी उमा हैं मैं उनका दामाद हूँ।" तब डा0 साहब बेटी और दामाद से मिले। तीनों के आंसू ही निकलते रहे। कुशल क्षेम से अधिक बात नहीं हुई। इतने में सिपाही ने कहँ दिया-"आपकी मिलाई का समय पूरा हो गया है।"

17 बर्षो के बाद एक बाप ने अपनी बेटी को देखा भी तो बात नहीं कर पाये उमा के जाने के बाद डा0 साहब के आँखो के सामने उनके मां-बाप,भाई-बहन,सास-ससुर तथा पत्नी रज्जो के चेहरे एक-एक कर घूमने लगे। आज यह सब इस दुनियाँ में नहीं थे सब काल का ग्रास बन चुके थे। क्या मैं ही इन सबकी मृत्यु का दोषी हूं। यह दुनिया तो सभी को छोड़नी होती है। लेकिन ऐसे नही जैसे मेरे सगे संबंधियो ने छोड़ दी।

बेटी की बिदायी

बेटी की विदायी किसी को भी कष्टदायी होती है बड़े अरमान से पिता बेटी का विवाह करता है लेकिन जब बेटी की विदायी का समय आता है तो कोई विरले ही माता-पिता होगे जो बेटी को विदा करते समय प्यार और जुदायी के आंसू न गिराते हों। ठीक इसी प्रकार डा. गया प्रसाद कटियार का चट्टान की तरह मजवूत हृदय आज मोम का होकर पिघलकर आँसू बनकर बह रहा था। एक क्रान्तिकारी पिता जिसने देश की आजादी के लिए दुनिया के सारे रिश्ते गौंण कर रक्खे थे और 17 वर्ष पहले पत्नी और दो वर्ष की बेटी को छोड़ कर चला आया था। पत्नी से सिंदूर पुछवा लेने वाला वैरागी आज रज्जों के वारे मे सोचता ही रह गया बेटी से यह भी नहीं पूछा-" तुम्हारी मां कैसे मरी क्या इलाज मे कुछ कमी तो नही रह गयी थी।" न उन्होंने वेटी की ही कोई बात पूँछी। अधीरता बांध की तरह डा.साहब का रास्ता रोंके खड़ी थी। एक पिता जिसने अपने दायित्वों को पूरा नहीं किया था। वेचारा पूछें भी तो कैसे? दामाद कितनी दिक्कतों से मुलाकात की इजाजत लेकर आया, उस से भी दिल भर कर बात नहीं हुई। यही सोचते-सोचते डा. साहब का सिर चक्कर खाने लगा।

अंग्रेजी सरकार ने क्रान्तिकारी बंदियों से मिलाई के लिए इतनी अधिक औपचारिकताएँ पूरी करने का नियम बना रक्खा था कि जिन्हें पूरा करना बहुत कठिन था। फिर बहुत जल्दी-जल्दी जेलें बदली जाती रहीं। अंडमान में काफी दिनों रहें लेकिन वहाँ दूरी के कारण मिलाई करना दुष्कर था इसलिए डा0 साहब से बिना मिले ही सभी सगे-सम्बन्धी उनकी यादों को हृदय में समेटे अशान्त हृदय ही शान्त हो गये। उन्होंने सुना था कि उनकी मां ने आजीवन कारावास की खवर सुनने के बाद ही अन्न जल छोड़ दिया था मां का हृदय ही कुछ ऐसा होता है वह अपने पुत्र को अपने प्राणों से अधिक प्यार करती है अतः डा. गया प्रसाद की मां ने भी अपने प्राण त्याग दिये।

पिता ने उजड़े घर को फिर से बसाने की कोशिश की। लेकिन वे अपने आप को कभी माफ नहीं कर सकें। " अपने बेटे को उसकी क्रान्तिकारी गतिविधियों के कारण घर से निकाल दिया था। लेकिन उनके हृदय मे टीस थी कि वे बेटे से नाराज नहीं थे न जान बूझकर निकाला ही था वे दुखी होकर कहते थे - किस-किस को समझाऊँ परिवार,रिश्तेदार,गांव,बिरादरी सभी डा0 साहब को याद करके बिलखते रहते हैं। हर समय उन्हीं की चर्चा करते रहते हैं जितने मुँह उतनी बातें। शायद गया प्रसाद ही ठीक थे,मै ही गलत था लेकिन अब इसकी भरपाई कैसे हो सकती है? ऐसी जमींदारी जो इस अंग्रेज सरकार को ढो रही है हमें नही चाहिए।" बेटे तुम कैसे हो? तुम्हें कैसे बतायें कि तुम महान हो तुम्हारे रास्ते महान हैं हो सकता है, कि हमें तुम व तुम्हारा स्वतंत्र भारत देखने को न मिले। क्या तुम हमको माफ नही करोगे? तुम्हारी मां विलख-विलख कर मर गई दवा तक नेही खाई। तुम्हारी पत्नि रज्जो आज तक जिसने कभी मुंह नही खोला उसने भी मौत को तुम्हारा उपहार समझकर गले लगा

लिया। बेटी उमा का भी उसने ख्याल नहीं किया और चली गई। इस उजड़े घर में अब मेरा मन भी नही लगता, हम भी ......। यह सारी बाते व खबरे चिट्ठी के द्वारा डा0 साहब को उनकी मृत्यु के महीनों बाद पता चलती थी। सो आज डा0 साहब से बेटी विदा नहीं कर मिली तथा आँसू नही रोक मिल रहे थे।

पाठकगण इस प्रसंग को इस प्रकार न सोचें कि डा.गया प्रसाद के हृदय मे कोई कमजोरी पैदा हुई होगी,कदापि नही। जिसने अपने प्राण हथेली पर रख लिये और इतने बड़े अंग्रेजी साम्राज्य से लड़ने की ठानी है तो वहां रिश्तों का कोई मोल नहीं रह जाता है। वहाँ मां वाप भाई बहन,बेटे-बेटी और पत्नी यह सब तो गौण हो जाते है उन्हें तो यह भी मालूम नहीं था कि वे किसी दिन पुलिस की गोली के शिकार हो जायेंगे या उसके कोड़ों की मार खायेगे या काला पानी मे चक्की पीसेंगे। उनके इरादे फौलादी थे। बाद के दिनों मे जव गया प्रसाद को पुलिस प्रताड़ना दी जाती थी तो उसे उन्होंने यही सोच कर झेला कि हमारे शरीर तो देश की आजादी के नाम वक्फ हो चुके है। उन्हें तो मुकद्दमे के समय मां बाप की पैरवी का न होना भी नही अखरा। आखिर वे कर भी क्या सकते थे? भगत सिंह के माता-पिता ने तो पूरी पैरवी की थी। ऐसा ही सोचकर वे अपने हृदय को शांति प्रदान कर लेते थे।

ऐ आजाद भारत के नागरिकों तुम्हारे पास गया प्रसाद की मां को देने के लिए कुछ है उसने पुत्र वियोग मे तड़प-तड़प कर अपनी जान दे दी,पर बेटे का मुंह देखने को नही मिला। उसे तो गया प्रसाद की उम्र कैद की सजा की खवर उसकी मौत की सजा बरावर थी लेकिन वह अंग्रेज सरकार को कोसने के अलावा और कर भी क्या सकती थी? शहीदे आजम भगत सिंह के मां बाप भाई आदि तो

मुकद्मे की सुनवायी के समय उसी शहर मे थे उनकी मां की पुकार गया प्रसाद की मां की पुकार की तरह ही बेवस थी **" अंग्रेजो हमारे बेटो पर तो तुम जुल्म ढ़ा ही रहें हो लेकिन याद रखों तुम भी भारत मे ज्यादा दिन नही रह पाओगे हमारे बेटे हजारों भगत सिंह और गया प्रसाद पैदा कर देगें जो तुम्हे भी चैन से नही रहने देगें। तुम इस देश के दुश्मन हो"** इसी प्रकार कितनी ही माताओं की गोद सूनी हुयी है उन्होंने आजादी मांगी थी। उन्हें मौत मिली आजादी आपको मिली। वे मातायें धन्य है जिनके लालों ने देश के लिए कुर्वानी दी।

सिक्खों के दसवें गुरू गोविन्द सिंह ने अपने शिष्यों से इसी प्रकार की कुर्वानी मांगी थी जव पहला व्यक्ति कुर्वान होने को तैयार हो गया तब गुरू उसे भीतर ले गये। खचाक की आवाज हुयी और खून से सनी तलवार लेकर वे फिर बाहर आये और एक और कुर्वानी की मांग की। तो जो व्यक्ति कुर्वान होने को उठा उसे मालुम था कि पहले गये व्यक्ति की कुर्वानी से तलवार खून से रंगी हुयी है उसके बाद भी एक के बाद एक पांच लोग कुर्वान होने के लिए तैयार हुये। वही तो खालसा पंथ के पंज प्यारे कहलाये, जिन्हें सिक्ख समुदाय आज भी बड़ी श्रद्धा से याद करता है वे सिक्खों के स्वर्णीम इतिहास के प्रारम्भ कर्ता है।

कुछ दिनों बाद डा.साहब को पुनः सुल्तानपुर जेल भेज दिया गया। इन दिनों मे ही डा0 साहब की आजीवन कारावास की सजा पूरी हो चुकी थी लेकिन अंग्रेज सरकार सशर्त रिहा करना चाहती थी। डा0 साहब अपनी रिहायी अंग्रेजी सरकार की शर्तो पर नही चाहते थे। उन्होने कहा **"अंग्रेजो दुनिया बदल गयी पर तुम नही बदले हमारी रिहायी के लिये अनोखी-अनोखी शर्ते रख रहे हो तुम्हारे खुद भारत से भागने का समय आ चुका है हमें तुम्हारी कोई**

शर्त मंजूर नही है भले ही हमारा जीवन ही जेल मे क्यों न समाप्त हो जाय।" इस प्रकार डा. गया प्रसाद ने अंग्रेजों की शर्तों पर रिहा होने से स्पष्ट मना कर दिया।

अजय घोष का लेख

सजा पूरी होने के बाबजूद भी सरकार ने डा0 गया प्रसाद को नही छोड़ा और वह जेल में टी.वी.(क्षय रोग) से बीमार हो गये। ऐसा लगता था कि डा0 साहब का प्राणान्त जेल में ही हो जायेगा उस समय अजय घोष ने सभी अखवारों में एक लेख छपवाया उसे मूल रूप में हम यहां छापना उचित समझते हैं।

" हिन्दुस्तान समाजवादी गणतन्त्र संघ के अधिकतर सदस्य किशोरवय छात्र थे। लेकिन गया प्रसाद उनसे भिन्न थे। वे शादीशुदा और अच्छी प्रैक्टिस के साथ जमे हुए आदमी थे। वे 1921-22 के असहयोग आन्दोलन के पूरे उभार के समय वे उसमे कूद पडे थे। आन्दोलन की विफलता और उसके वाद की कुंठा ने उनके विचारो को झकझोर दिया। उनके अनेक राजनैतिक सहकर्मी राजनीति से अलग हो गये,लेकिन उन्होंने ऐसा नही किया। वे क्रान्तिकारी आतंकवादी आन्दोलन में शामिल हो गये।

उन दिनों वे खूब अच्छी तरह कटी-छटी घनी दाढ़ी रखते थे। उनका चेहरा बहुत भड़कीला दिखलायी पड़ता था। एक मामूली आदमी के लिए यह कल्पना करना सम्भव नहीं था। कि यह चश्माधारी अधेड़ आदमी,जिसका रूप देखने मे इतना भव्य है और जो गम्भीर भाव से रोगियों की जांच-पड़ताल करता है, एक ऐसी पार्टी का बहुत ही कर्मठ सदस्य हो सकता है जो बमों और रिवाल्वरों के माध्यम से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए प्रयत्नशील है। डा0 गया प्रसाद की दाढ़ी और

उनकी चिकित्सा कला न केवल उनके लिए बल्कि पार्टी के लिए सुरक्षा कवच का काम करती थी क्योंकि जब भी आवश्यकता होती थी वे एक छोटा दवाखाना खोलकर प्रैक्टिस करने लगते थे और वस्तुतः उनका दवाखाना पार्टी का अड्डा होता था।

वे यू.पी. और पंजाब मे जिन्दादिली के साथ काम करते हुए अन्त में शिव और जयदेव के साथ सहारनपुर मे गिरफ्तार किये गये। जब मैं जेल में उनसे पुनः मिला तव उनकी मशहूर दाढ़ी गायब थी इससे मुझे आघात लगा था।

गया प्रसाद कुछ स्थूल काया थे लेकिन उनके शरीर मे ताकत कुछ ज्यादा नही थी और अक्सर चलने वाले संघर्ष तथा मुटभेड़ों में उनको अपार कष्ट झेलना पड़ा था लेकिन वे एक वार भी अपने पथ से विचलित नही हुए।

हम अनियंत्रित रहने वाले लड़कों को वे मातृवत स्नेह प्रदान करते थे वे हमेश चुस्त दुरस्त रहते थे और अस्त व्यस्त जीवन तथा किसी भी तरह की अव्यवस्था पसंद नही करते थे वे हर तीसरे रोज अपने बिछावन की चादर बदल देते थे,अपने कपड़े साफ कर देते थे,अपनी अलमारी झाडते पोंछते थे तथा अपनी चीजों को सजा-संवारकर रखते थे। वे इतने से संतुष्ट नहीं रहते थे बल्कि हर काम उसी तरह से क़रने के लिए हम पर भी दवाव डालते थे और अनेक वार तो वे स्वयं अपने हाथों से हमारा काम कर हमें लज्जित कर देते थे। मैं सबसे अधिक अनियंत्रित और अव्यवस्थित होने के कारण खास तौर पर उनकी चपेट मे आ जाता था। और उनको आते हुए देखकर बैरक से रफूचक्कर हो जाया करता था। लौटने पर वरावर देखता कि मेरे बिछावन की चादर बदल डाली गयी है और मेसी चीजे सजा कर रख दी गयी है।

गया प्रसाद हमारे सबसे अच्छे मैनेजर थे और वे जो भी काम अपने हाथ में लेते थे,उसे सुव्यवस्थित और अच्छे ढ़ंग से पूरा करते थे। बावर्चीखाने की देखभाल करने, कैदी बावर्चियों को काबू में रखने और खाने की तरह-तरह की चीजें तैयार करवाने का काम ,जिससे कम से कम मैं दूर भागता था वे न केवल बड़ी तत्परता के साथ बल्कि खुशी और बड़े नाज के साथ करते थे। खासकर मांस की तैयारी में उनका उल्लसित योगदान देखते ही बनता था उन्हें अपनी रसोई कला के ज्ञान पर गर्व था। उनकी मैनेजरी मे हमे बराबर दुर्लभ और स्वादिष्ट चीजे खाने को मिलती रही और उनकी मैनेजरी से हमने खूव लाभ उठाया। उस समय उनका चेहरा गर्व और हर्ष से चमक उठता था जब हम कहते"डा.साहव आज तो आपने कमाल कर दिया।"

नेक स्वभाव के जेल डाक्टर भी डा0 गया प्रसाद को चाहते थे। हम लोगों में से किसी के बीमार पड़ जाने पर डा. साहब न केवल मातृवत् स्नेह और प्रेम के साथ उसकी तीमारदारी करते थे,बल्कि जेल के डॉक्टरों से रोग के बारे में चाहे साधारण रोग ही क्यों न हो,राय मशविरा करते थे और उपयुक्त दवाईयां हासिल करने के पहले तक चैन नहीं लेते थे। उसके वाद उनका कठिन काम शुरू हो जाता था। वे देखते रहते थे कि दवाईयां ठीक समय पर ली जा रही या नही। भले ही रोगी सव कुछ भूल जायें ....., और वह अक्सर भूल जाया करता था.....लेकिन गया प्रसाद के लिए भूल जाना संभव नही था। वे हमारे सबसे अच्छे मैनेजर,हमारे प्रमुख बार्वची,हमारी देखभाल करने वाले डाक्टर और हमारे परिचारक थे। एक व्यक्ति मे ही यह सारे गुण सीमित हो गये थे।

अभियोग पक्ष एक भी ऐसा सबूत पेश नही कर सका कि गया प्रसाद किसी सशस्त्र कार्यवाही के समय मौजूद थे,लेकिन इससे अभियोग पक्ष के लोगो को कोई परेशानी नही हुयी। गया प्रसाद एक ऐसी पार्टी के कर्मठ सदस्य थे जिसने एक "राजा के खिलाफ लड़ायीं छेड़ दी थी" वे एक बम फैक्ट्री मे गिरफ्तार किये गये थे। फिर क्या था,एक पक्षीय फैसला घोषित कर दिया गया-आजीवन कारावास। दूसरे लोगो की तरह उन्हें भी सी-श्रेणी दी गयी।

अण्डमान में सन् 1937 ई0 की मशहूर भूख हड़ताल में शामिल होने के साथ-साथ गया प्रसाद ने अनेक संघर्षो में भाग लिया और इस समय वे सुल्तानपुर जेल में है। अण्डमान में रहते हुए ही उन्होंने कम्युनिज्म को अपना लिया और उसके बाद, समय गुजरने के साथ-साथ,उनका विश्वास पक्का होता गया।

सोलह वर्षो की जीवित मृत्यु ने उनका शरीर बिल्कुल तोड़ दिया है। वे पिछले एक साल से तपेदिक से पीड़ित है। इस समय उनकी हालत चिन्ताजनक है। अगर पंजाब सरकार में जिसकी कैद में वे है जरा भी मानवीय शिष्टाचार होता तो उन्हें छोड़ देतीं। उनका व्यक्तित्व उच्च गुणों से सम्पन्न है,उन्होंने अपना सारा जीवन देश की सेवा में अर्पित कर दिया है और यह उल्लेखनीय है कि आजीवन कैदियों को 14 साल की जो निर्धारित अवधि पूरी करनी पड़ती है,उससे दो साल अधिक बिता चुके हैं,पंजाब सरकार उन्हें अपने दोस्तों और परिवार के सदस्यों के बीच न शान्तिपूर्वक रहने देना चाहती है और न शान्तिपूर्वक मरने देना चाहती है।

क्या हम सरकार की बात को ही लक्ष्मण रेखा मान ले? इसका जबाब डा0 गया प्रसाद को देशवासियों को देना है,जिनके लिए वे जीवित रहे और जिनके लिए वे मर रहे है। "

इसी प्रकार का एक लेख रंजीत सिंह पंडित ने भगत सिंह के

साथियों के बारे में लखनऊ जेल में उनके साथ दो मास रहने के बाद रिहाई हो जाने पर लिखा था।

जवाहर लाल नेहरू ने भी अपनी पुस्तक " डिस्कवरी ऑफ इण्डिया " में पृष्ठ न0 449 पर इसी प्रकार का उल्लेख करते हुए जयदेव कपूर,शिव वर्मा व डा0 गया प्रसाद कटियार के बारे में लिखा है कि " बहुत से लोग लड़ाई के पहले से लगातार जेल में पड़े है। मेरे नौजवान कामरेड 15 साल से जेल में है और अब भी वही है। जब उन्हे सजा हुई थी तब वे लड़के थे,मुश्किल से 20 साल के लगभग। अब वे अधेड़ उम्र के हो चुके है और उनके बाल भी सफेद हो गये है। संयुक्त प्रान्त की जेल यात्रा में मुझे उनसे मिलने का मौका मिला है। मै जेल गया हूँ,कुछ समय के लिए वहां रहा हूँ फिर बाहर चला गया हूँ। लेकिन उनके लिए फाटक नही खुले हैं। यद्यपि वे लोग यू0 पी0 के हैं और कुछ सालों से संयुक्त प्रान्त की जेलों में रह रहें हैं,उनको सजा पंजाब मे हुई थी। इसलिए वे पंजाब में मातहत है। संयुक्त प्रान्त की कांग्रेस सरकार ने उनकी रिहाई की मांग की थी। लेकिन पंजाब सरकार राजी नही हुई। "

(डिसकवरी ऑफ इण्यिा,पृष्ठ सं0-449,संस्करण सन् 1960 से)

अजय घोष के संस्मरण

1940 मे मेरी गिरफ्तारी के वाद लखनऊ जिला जेल में जयदेव,शिव और गया प्रसाद से मेरी मुलाकात हुयी अब वे पक्के सिद्धांतनिष्ठ कम्यूनिस्ट थे वे अनवरत अध्ययन में संलग्न रहते थे। वे उस दिन का इन्तजार कर रहें थे,जब वाहर आकर आन्दोलन मे योगदान कर सकेगें। उनमें पहले से भी कहीं अधिक उत्साह था। उनकी आस्था बिल्कुल अडिग थी,हालांकि वे जानते थे कि उन्हें अभी कुछ और वर्षो तक जेल में रहना है।

इस बीच भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने बम्बई में **"अंग्रेजो भारत छोड़ो"** का नारा दिया जिसका सारे देश पर व्यापक असर हुआ। यद्यपि सारे नेता जेलों में बन्द थे लेकिन 8 अगस्त सन् 1942 ई0 का स्वतः स्फूर्त आन्दोलन अपने पूरे शबाब के साथ चला। इस आन्दोलन के बाद घबराई अंग्रेज सरकार ने कांग्रेस के बंदियों को तो रिहा कर दिया लेकिन डाक्टर गया प्रसाद की रिहाई रोक दी। डाक्टर गया प्रसाद के शब्दों में :-

"नौबत यह आ गयी थी कि कांग्रेसी नेताओं को सन् 1942 ई0 में जनता द्वारा लगाये जाने वाले इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे से नफरत सी हो गयी। इसीलिए वे कांग्रेसी नेताओं की रिहाई की बात तो करते थे लेकिन क्रान्तिकारियों की रिहाई की बात जिनकी सजायें पूरी हो गयी थी इसके बावजूद भी नहीं करते थे।"

अन्त में सन् 1942 ई0 का आन्दोलन अपने व्यापक असर के साथ समाप्त हुआ। तो नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने अंग्रेजी शासन को जड़ से उखाड़ने हेतु **"आजाद हिन्द फौज"** का गठन किया। इसके बाद दिसम्बर सन् 1946 ई0 में नेवी और गोदी में व्यापक पैमाने पर देश में हड़ताल की योजना बनाई। इसी समय विश्व के कम्युनिष्ट अखवारों में डा0 साहब की रिहाई के लिए लिखा। कि अगर अंग्रेज सरकार में जरा भी मनवता शेष है तो उसे जिन क्रान्तिकारियों की सजा काफी समय पहले पूरी हो गई हैं उन्हें तत्काल रिहा कर देना चाहिए। देश में आजादी से सम्बन्धित होने वाले आन्दोलनों से घबराई सरकार ने उन्हें 21फरवरी 1946 को रिहा कर दिया। उनकी रिहाई के पूरे डेढ़ साल बाद 15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हो गया।

भाग – 4

जेल से रिहाई के बाद

जेल से रिहाई के बाद जब डा0 साहब अपने घर लौटे तो उन्हें गाँव में कितने ही लोगों ने पहचाना भी नहीं, क्योंकि उनको गाँव छोड़े हुए लगभग 26 साल बीत चुके थे। उनके घर छोड़ने के समय जो बच्चे पैदा हुए थे आजकल वे स्वयं बाल-बच्चेदार हो गये थे। जो पुराने लोग परिवार के थे। वे मर चुके थे। इस प्रकार डा0 साहब को पहचानने वाले लोग उस गाँव मे कम ही रह गये थे। जो थे भी उनको देश की आजादी की लड़ाई से कोई सरोकार नहीं था। उन दिनों शासन भी अंग्रेजों का ही था तो उनसे पंगा कौन ले? इस सबके बावजूद भी गांव के लोगों ने उनका स्वागत किया,मिलने जुलने भी आये। परिवार के स्नेही लोग सब पहले ही मर चुकने के कारण डा. साहब का मन गांव मे नहीं लगा।

डा.साहब ने जगदीश पुर गांव में अपनी डिस्पैन्सरी खोली। चूंकि डा0 साहब का ज्ञान एलोपैथी,होम्योपैथी और आयुर्वेद तीनों पर बहुत अच्छा था। इसीलिए समय के साथ-साथ उनकी प्रैक्टिस बहुत अच्छी चलने लगी। बूढ़ा सा दिखने वाला जर्जर स्वास्थ भी अच्छा होने लगा। लोग कहते थे "नई जिन्दगी हुयी है।"

उजड़े परिवार को फिर से बसाने के लिए डा0 साहब पर मिलने वालों तथा रिश्तेदारों ने जोर डाला। लेकिन डा0 साहब ने यह कहकर मना कर दिया कि पचास साल के लगभग आयु हो चुकी है एक पत्नी को तो सुहागिन होते हुए भी विधवा बना दिया था। अब दूसरी को जान बूझकर दो चार साल की जिन्दगी के वास्ते विधवा

नही बनाना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि पुलिस की पिटायी,जेल यातनाओं,भूख हड़तालों व बीमारी के कारण शरीर भी इस योग्य नही रह गया है कि विवाह किया जाए। एक बात यह भी है कि हमारा देश आजाद तो हो गया है लेकिन जिन उसूलों के लिए सरदार भगत सिंह फांसी चढ़े,उन्हें हम और हमारे साथी जब तक पूरा नहीं कर लेंगे चैन से नहीं बैठना चाहते अतः मुझे इस सरकार में भी जेल जाना पड़ सकता है।

अब इन हालातों को देखते हुए भी अगर कोई शादी का औचित्य सिद्ध करें तो विचार किया जा सकता है। लोगों ने कहा कि वीमारियां तो ठीक हो चुकीं हैं यह भी तो हो सकता है कि चैन की रोटी मिले तो स्वास्थय फिर से अच्छा हो जाये।

डा0 साहब की ससुराल बैरी गांव के रहने वाले चौधरी राधा कृष्ण कटियार ने डा0 साहब से अपनी सुशिक्षित पुत्री निर्मला देवी से विवाह का प्रस्ताव रखा। चूंकि डा0 साहब और निर्मला देवी की आयु में लगभग 20 वर्ष का अन्तर था। इसीलिए डा0 साहब ने कहा कि इस विषय में निर्मला देवी से तो बात कीजिए।

निर्मला देवी अपनी बहिन रज्जो देवी के मुंह से डा0 साहब की प्रशंसा बचपन में ही सुन चुकीं थीं वे देश के महान क्रान्तिकारी थे। इसके अलावा उनकी डिसपैन्सरी भी बहुत अच्छी चल रही थी यह सोचकर कि डा0 साहब के साथ विवाह होना मेरे लिए एक खुशी की बात होगी। इसीलिए निर्मला देवी ने अपने पिता से डा0 साहब की उम्र के अन्तर के बावजूद भी शादी करने की हामी भर ली और खुशी-खुशी शादी हो गई। यह विवाह बचपन वाले विवाह की तरह नहीं था।

शादी के बाद डा0 साहब का काया कल्प ही हो गया। बिगड़ा स्वास्थ्य भी ठीक हुआ घर परिवार की आर्थिक स्थिति भी ठीक हुई। समाज में पुराना सम्मान भी वापस हुआ। उनकी डाक्टरी की प्रैक्टिस भी बहुत अच्छी चलती थी खास बात यह थी कि जिसने जो दे दिया सो उन्होंने ले लिया कभी किसी से पैसे के लिए उन्होंने दबाव नही डाला इसलिए लोग डा. साहब के बडे अहसान मंद थे। उनकी दूकान पर फिर पहले की तरह ही भीड़ जमा होने लगी। डा.साहब की बातें भी पुरानी शैली में ही होती थीं। अन्तर केवल इतना था कि पहले वार्ता का विषय अंग्रेजों को भारत से भगाना हुआ करता था। अब अंग्रेजों को भगाया जा चुका था तो विषय देश की तरक्की का होता था,आम आदमी की खुशहाली का होता था। जो भी उनके सम्पर्क मे आया उनका हो गया।

उन्हीं दिनों वे दो वार चुनाव भी लड़े लेकिन जीत नही पायें। उन दिनों कांग्रेस का बोल-वाला था अतः पैसे और प्रभाव का प्रयोग करके कंग्रेस प्रत्याशी जीत गये और डा. साहब कुछ वोटों से हार गये कई वार कांग्रेस के क्षेत्रीय लोगों ने डा. साहब को कांग्रेस के साथ आने को कहा लेकिन डा. साहब ने उसूलों से कभी समझौता नहीं किया। वे दो बार जेल भी गये, उन्होंने 43 वर्ष का वैवाहिक जीवन बिताया। उनके दो पुत्र व तीन पुत्रियां हुई।

अनवरत् संघर्षशील कम्युनिस्ट पार्टी सी.पी.एम. के अखिल भारतीय नेता सादगी की प्रतिमूर्ति डा0 गया प्रसाद कटियार का जीवन बिना बट्टे का साफ सुथरा और सरल व त्यागी जीवन था। उनका एक-एक काम एक-एक वस्तु व्यवस्थित होती थी जैसे किसी मिलेट्री के अधिकारी के इशारे पर सैनिक कार्य कर रहा हो। जीवन

की संध्या में वे लम्वे बीमार हुये चलने फिरने में पहले ही कष्ट शुरू हो गया था बाद को खाट पकड़ ली और उठना वैठाना भी कठिन हो गया। फिर बेहोश हो गये और अंत में 10 फरवरी सन् 1993 ई0 को उनका देहान्त हो गया।

93 वर्ष की लम्बी जीवन कहानी जिसमे अनेक उतार चढ़ाव तथा रूप रंग रहे हो उसे यदि विस्तार से लिखा जाये तो एक ग्रन्थ हो जायेगा उनके शिष्यों की लम्बी फैहरिस्त,उनके मित्रों की लम्बी फैहरिस्त हर क्षेत्र में उनके साथियों को जैसे ही यह पता कि डा0 साहब इस दुनिया में नहीं रहे तो शव यात्रा में शामिल होने वालों का लम्बा काफिला हो गया गांव से लगभग 10 किलोमीटर दूर गंगा घाट पर उनकी अंत्येष्टि की गयी। तो लाखों लोगो की आंखे नम थी।

शवयात्रा में मुख्य रूप से डा0 लक्ष्मी सहगल (आजाद हिन्द सेना की महिला सेना की संचालिका), डा0 साहब के परम मित्र महान क्रान्तिकारी शिव वर्मा, हरि किशन श्रीवास्तव (पूर्व विधान सभा अध्यक्ष), जगदीश अवस्थी (पूर्व सांसद), डा0 सोने लाल पटेल वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष अपना दल आदि लोग शामिल हुए। शान्ति हवन के दिन सरदार भगत सिंह के भाई सरदार कुलतार सिंह भी पधारे। डा0 साहब के साथी शिष्य ठाकुर राम सिंह जो उ0प्र0 में कालापानी की सजा पाने वालों मे एकमात्र जीवित स्वतन्त्रता सेनानी हैं,आगरा से पधारे। डा0 साहब की मृत्यु का समाचार रेडियो,टी.वी. पर भी प्रसारित हुआ, अगले दिन सभी अखवारों में **"महान क्रान्तिकारी भगत सिंह के साथी डा0 गया प्रसाद कटियार नही रहें"** शीर्षक से समाचार छपा।

समय की पुकार की याद अखवार ही दिलाते हैं। डा0 साहब

की मृत्यु के बाद कानपुर के लोगों ने डा0 साहब की प्रतिमा की स्थापना की मांग की। अखबारों ने अपने सम्पादकियों में उनकी यादगार में कानपुर के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर उनकी प्रतिमा लगाने की मांग की। परिणामस्वरूप दिनांक 1.4.2000 को उत्तर प्रदेश सरकार ने डा0 साहब की प्रतिमा शिवराजपुर ब्लाक कार्यालय में स्थापित की।

इस सबकी विधिवत् जानकारी के लिए लेखक उनके परिवार से मिलने कानपुर गया। डा. गया प्रसाद के घर जब लेखक पहुँचा तो उनकी मृत्यु हुए लगभग 10 बर्ष वीत चुके थे लेकिन उनका कमरा पुकार-पुकार कर कह रहा था यहाँ शहीदे आजम भगत सिंह,चन्द्रशेखर व उनके साथी वड़े वड़े चित्रों की शक्ल में आज भी विराजमान हैं।

डा0 साहब के व्यक्तिगत जीवन के बारे में परिवार के लोगों से बातचीत भी की। उनकी पत्नी निर्मला देवी ने बताया -''मेरी और डाक्टर साहब की उम्र में अन्तर तो था लेकिन मैंने डा0 साहब के गुणों के बारे में कई लोगों से सुना था इसलिए मैं शादी करने को तैयार हो गयी।

विवाह के बाद जैसा मैने सुना था उन्हें वैसा ही पाया। डा0 साहब के बारे में आप और लोगों से भी पूछ सकते हैं मैं आपको एक संस्मरण सुनाना चाहती हूँ मैने एक वार डाक्टर साहब से कहा आप बड़े निर्मोही है मेरी बहन रज्जो को छोड़कर चले गये फिर उससे कभी नहीं मिले वह बेचारी आपका नाम लेते हुए तड़प तड़प कर मर गयी पर दुवारा दर्शन नही कर पायी। क्या मेरे साथ भी ऐसा ही सलूक तो नहीं कर देगें।'' यह कहते कहते निर्मला जी की आंखों

मे आंसू आ गये वह कुछ और भी कहना चाहती थी लेकिन गले ने उनका साथ नही दिया।

निर्मला जी वृद्ध है इसलिए मैने भी उन्हें और नहीं कुरेदा क्योंकि रज्जों देवी का प्रकरण ही ऐसा है कि जरा सा सोचने पर किसी को भी लगता है कि कितने कष्ट उस महान महिला ने उठाये उसके बाद भी वह फिर कभी अपने पति के दर्शन नहीं कर सकी। पति अगर न रहें तो समय के साथ उसका दर्द कम हो जाता है लेकिन अगर पति जिन्दा है और उसे यातनाएं देकर धीरे-धीरे मारा जा रहा हो तो कोई भी पत्नि उसे बर्दाश्त नही कर सकती है। यद्यपि स्नेही जन उन हालातों मे कुछ कर नहीं सकते थे लेकिन वह स्थिति बहुत ही दयनीय थी जेल की खबरें रज्जों तक छन कर कुछ इसी प्रकार पहुंचती थीं।

डा. साहब की बीमारी की खबर रज्जों को मिली तो वह अपने आपको रोक नही सकी और देश की आजादी पर प्रकारान्तर से बलिदान हो गयी। डा. साहब भी स्वयं कभी उस महान महिला को नहीं भूले।

डा. साहब छोटी-छोटी बातों पर देश का हवाला देते हुए लम्बे चौड़े व्याख्यान देते रहते थे लेकिन उस समय निर्मला देवी के सबाल को सुनकर यकायक सकपका गये और बोले **''अरे यह तुमने कहाँ की बात शुरू कर दी। हम तो मौत के मुँह से निकले हैं। ये देश भी हमारी कुर्बानियों की वजह से ही आजाद हुआ है। यद्यपि आजादी के बाद हम लोगों के द्वारा सोची गयी आजादी का नक्शा पूरा नही हुआ है लेकिन अब यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि हमको आजाद भारत में भी जेलों में सड़ना पड़ेगा।''** निंमला जी ने बताया कि डा0 साहब से मुझे कभी कोई शिकायत नहीं हुई।

सन्-1952 ई0 और 1957 ई0 के विधान सभा चुनाव बहुत

थोड़े वोटों से डा0 साहब हारने के बाद चुनाव से विश्वास खो बैठे थे। कहते थे "चुनाव पैसे वालों का खेल है। भारत के वोटर को वोट डालने के लिए सोचने का मौका ही नहीं दिया जाता है। वह तो तड़क-भड़क,रैला,हवा,जोर,पोस्टर,वैनर,लुभावने नारे और जात-बिरादरी को देखकर वोट देता है। नेता भी इन्ही विकल्पों को लेकर जनता के मध्य जा रहा है। अगर त्याग,तपस्या,बलिदान और कुर्बानियों का ध्यान रखा गया होता तो जनता व सरकार दोनों ही डा0 साहब को या तो चुन लेते या तो नामित कर सकते थे,जो नहीं हो सका।

डा0 साहब स्वतंत्र भारत में दो बार जेल भी गये। एक बार सन् 1957 ई0 में किसान आन्दोलन के समय तथा दोबारा सन् 1965 ई0 में। दोबारा जेल जाने से पहले हम लोगों को कुछ मालूम नहीं था। देखते क्या हैं एक दिन सैकड़ों पुलिस वालों ने हमारा घर घेर लिया। डा0 साहब को बाहर निकाला,और कपड़े पहनकर थाने चलने के लिए कहा। ड़ा0 साहब ने कहा **"मेरा क्या अपराध हैं यह मुझे बताया जाए?"** तो पुलिस वालों ने बताया कि आप अंग्रेज हुकूमत में सरदार भगत सिंह के साथ में जेल गये थे,आप कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं।

देशभर में कम्युनिस्ट पकड़े जा रहे है। यह सरकार की नीति का मामला है हमको इससे अधिक नहीं मालूम है पुलिस वाले डा0 साहब को लेकर चले गये। वहां से यह जेल भेज दिये गये। डा.साहब को पुराने रास्ते वास्ते याद आ गये। वही पुलिस और वही जेल वही पुराने ढ़र्रे कोई भी बदलाव नही अगर कोई वदलाव था तो केवल यह कि पहले अंग्रेज अफसर होता था अव देशी अफसर है लेकिन व्यवहार उनका समान है।

निर्मला जी ने बताया "डा0 साहब की प्रैक्टिस तो बहुत अच्छी चलती थी लेकिन वे गरीबों से दवा तक के पैसे नहीं लेते थे। इसीलिए पैसे की तंगी रहती थी, जो कुछ बचता था वह पार्टी के फण्ड में जमा कर देते थे या पार्टी पर खर्च कर देते थे। जब वह जेल चले गये तो मेरे सामने बच्चों के पालन-पोषण की समस्या आई मैंने प्रदेश सरकार को दरखास्त दी कि 65 वर्षीय मेरे पति के अलावा मेरे घर में कोई कमाने वाला नही है। बच्चों के भूखों मरने की नौबत है कृपया मेरी हालत पर गौर करके मेरे पति को छोड़ने की कृपा करें।" जब डा0 साहब को मालूम हुआ तो उन्होने मुझे मिलने जाने पर डांटा और कहा - "घर में जो दवा है उसे तुम रोगियों को दो,बीच-बीच में मुझसे यहां आकर पूछ लेना उससे जो आय हो उससे बच्चों का पालन करो। हमें इस सरकार से भी कोई उम्मीद नहीं है। तुम्हारे पास गहने और कुछ खेती भी है जो तुम्हारी मदद कर सकती हैं। लेकिन मैने यह सोचकर की पता नहीं कितने दिन ऐसे ही गुजारने पड़े कोई चीज बेंची बिगाड़ी नहीं। डेढ़ साल जेल मे रहने के बाद डा0 साहब छूटे।

लेखक ने उनके पुत्र इंजीनियर क्रान्ति कुमार कटियार से बात की और अपनी लिखी हुई सामग्री उन्हें दिखायी एवं कुछ संस्मरणों के बारे में जानकारी चाही तो क्रान्ति कुमार ने बताया कि संस्मरण तो सब आपने लिख ही रखे है। मैं पिताजी के साथ अंडमान जेल का भ्रमण का उल्लेख अवश्य करना चाहूंगा।

" सन् 1985 ई0 में जब ज्ञानी जैल सिंह भारत के राष्ट्पति थे तो उनकी अनुमति से अंडमान जेल में रह चुके लगभग 70 क्रान्तिकारियों का दल अंडमान जेल को पुनः देखने भेजा गया। मैंने

पिताजी से साथ जाने की जिद्द की। मैं भी काला पानी देखना चाहता था। सो पिताजी के दल के साथ मैं भी काला पानी गया। कलकत्ते से हमारा दल पानी के जहाज से साढ़े तीन दिन की यात्रा के बाद अंडमान पहुंचा। महामहिम ज्ञानी जैल सिंह ने स्वयं वहाँ पहुंचकर सभी स्वतंत्रता सेनानियों का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया।

अंडमान की धरती पर पांव रखते हुए मेरे पिताजी ने बताया कि इसी प्रकार आज से लगभग 52 वर्ष पहले हम लोगों ने अंडमान की धरती पर पांव रखा था तो इन्कलाब जिन्दाबाद,साम्राज्यवाद मुर्दाबाद,अंग्रेजी सरकार का नाश हो,हिन्दुस्तान सोशिलिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसिएशन जिन्दाबाद के गगनभेदी नारे लगाये थे। जेल पहुंचते ही अंग्रेज सुपरिण्टेण्डैन्ट ने लोगों को फटकारते हुए कहा था- " यहां से भागकर नहीं जा सकते। यहां पर ज्यादा बदमाशी मत करना नहीं तो मारकर समुद्र में फिकवा दिये जओंगे। भारत तक खबर भी नहीं पहुँचेगी। न मालूम कितने लोग समुद्र के हवाले हो चुके हैं।" हम लोगों ने अंग्रेज अफसर को बताया कि हम भारत को आजाद करवाना चाहते हैं सरकार जेलों मे हमें कितनी ही यातनायें क्यों न दे हमारा जीवन देश की सेवा के लिए वक्फ हो चुका है। हम तुम्हारी भभकी और धमकी से डरने वाले नही है। आखिर हमें यहाँ भी 46 दिन की भूख हड़ताल करनी पड़ी थी। जिसमे भाई महावीर सिंह शहीद हो गये थे लेकिन अंग्रेजों को यहाँ का जेल मैनूअल बदलना पड़ा। इस प्रकार यह हमारी हड़ताल पूरी तरह से कामयाब हुई।

सैल्यूलर जेल को हमने बहुत करीब से घूम-घमकर देखा वहाँ पर सभी बन्दियों के नाम अंकित थे। डा. साहब के नाम के



डॉ. गया प्रसाद कटियार के पार्थिव शरीर के साथ डा. सोनेलाल पटेल और शिव वर्मा



सेलुलर जेल के प्रांगण में इंजी. जे.पी.सिंह, उनकी पत्नी व पुत्र तपेश



सेलुलर जेल (राष्ट्रीय स्मारक का मुख्य द्वार)



बायें से दायें
इंजी. क्रान्ती कुमार कटियार (पुत्र)
स्वतंत्र कुमार कटियार (पुत्र)
विप्लव सिंह (पौत्र)

श्रीमती निर्मला देवी (पत्नी)
श्रीमती डॉ. सुमन बाला (पुत्रवधू)
श्रीमती उमा कटियार (पुत्री)
श्रीमती सुनील कटियार (पुत्री)
श्रीमती मीरा कटियार (पुत्रवधू)

लेखक डॉ. कटियार की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए (डॉ. कटियार के परिवार के साथ)

आगे उर्फ डा. रामलाल उर्फ डा.रामनाथ उर्फ डा.बी.एस. निगम लिखा हुआ था। आजकल काला पानी सजा नहीं होती है। अब अंडमान द्वीप समूह काफी आबाद हो चुका है लेकिन उन दिनों जब डा. साहब जेल में थे तब वहाँ आबादी नहीं थी। यद्यपि 48 वर्ष बाद डा.साहब अंडमान गये थे लेकिन उन्हें वहाँ जो तरह-तरह की यातनायें सहनी पड़ती थी जैसे नारियल कूटना,कोल्हू चलाना,तेल पेरना,आटा पीसना आदि कार्य लिया जाता था। सब बातें ज्यों की त्यों याद थीं। उन्होंने बताया-**"मैंने हमेशा निर्धारित कार्य से अधिक कार्य किया लेकिन इसके बावजूद भी यहाँ के हुकुमरान हमें बहुत सताते थे। यहाँ की दी गई यातनायें जब याद आती है तब कलेजा कांपने लगता था।"**

आज का नौजवान इस बात को सोच भी नही सकता है कि हमने आजादी के वास्ते यहाँ नरकीय जीवन बिताया था इसके बाद भी मेरे और मेरे साथियों के विचारों मे रंच मात्र भी परिवर्तन नही हुआ।" क्रान्ति कुमार ने आगे बताया कि आते-जाते समय अन्य क्रान्तिकारीयों से जो वार्तालाप हुआ उससे ज्ञात हुआ कि अपने साथियों में डा. साहब का बड़ा सम्मान था इतने दिनों के बाद भी सभी लोग उतना ही सम्मान दे रहे थे। मुझे बड़ी खुशी हुयी कि ऐसे महान व्यक्ति के घर मुझे जन्म लेने का अवसर मिला। मुझे अपने क्रान्तिकारी पिता पर गर्व है। डा. साहब के कारण उनके साथी लोग मुझे बहुत प्यार करते थे यात्रा से वापसी के काफी दिनों वाद तक मुझे ऐसा लगता रहा कि पिताजी के सादे व्यवहार के कारण हम लोगों को लगता ही नहीं था कि वह कितने महान व्यक्तित्व के धनीं हैं।

जब लेखक इ.क्रान्ति कुमार की पत्नी श्रीमती डा. सुमन

बाला कटियार एम.एस.सी,एल.एल.बी,पी.एच.डी. से मिला और डा. साहब के बारे में कोई संस्मरण बताने या लिखने को कहा तो विदुषी सुमन बाला ने बताया कि मेरा विवाह तो डा. साहब की मृत्यु के पश्चात् हुआ लेकिन मैंने उन्हें देखा था। हमारे कालेज में एक बार किसी विशेष कार्यक्रम में वे मुख्य अतिथि थे। तब मैंने उनके विचार सुने। मेरे मन में उनके प्रति अगाध श्रद्धा है। मुझे गर्व है कि ऐसे क्रान्तिकारी के घर की बहू बनकर आने का सौभाग्य मिला।

परिवार के लोगों से जब लेखक ने डा. साहब के अन्तरंग जीवित व्यक्तियों के बारे में जानकारी चाही तो उन्होंने 80 वर्षीय डा. ब्रजलाल कटियार "पावन जी" एवं जगदीशपुर निवासी राजकुमार "नेताजी" एवं बिल्हौर निवासी असर हुसैन साहब के नाम बताये। मैंने तत्काल योगेन्द्र वर्मा से टेलीफोन पर सम्पर्क किया तो शाम को मुलाकात करने का समय पक्का हो गया अब में क्रान्ति कुमार को लेकर डा.साहब की ससुराल बैरी पहुँचा। बैरी शिवराजपुर के पास एक मशहूर गाँव है जहाँ आजकल डिग्री कालेज है। मैंने देखा डा. साहब की पुरानी ससुराल का घर एक किले के रूप में है। श्रीमती प्रेमलता कटियार मंत्री उत्तर प्रदेश शासन डा. साहब के साले अमरनाथ कटियार की दूसरी पत्नी है। महल को बाहर से देखकर ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आज से 100 वर्ष पहले यह कोई रजवाड़ा रहा होगा। इसी घर में रज्जो जी की मृत्यु हुई एवं उनकी पुत्री उमा का लालन-पालन हुआ था।

बैरी के भ्रमण के बाद हम लोग ग्राम कुकरी डाकखाना बीरामऊ के डा. ब्रजलाल कटियार 'पावन जी' से मिले। पावन जी बीमार थे। लेकिन जब उन्हें पता चला कि मैं डा. साहब के बारे में कुछ पूँछना चाहता हूँ तो उन्होंने बताया कि आज की तरह मैं आज

से 52 साल पहले भैंसऊ गाँव में बीमार पड़ा था। डा0 साहब ने मेरा इलाज किया। लेकिन पैसे तक नहीं लिये। पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि डा. साहब 17 वर्ष अंग्रेजों की जेलों में रहे हैं और क्रान्तिकारी भगत सिंह के साथी है तो मैंने मन ही मन उनको अपना गुरू मान लिया और उनकी दुकान पर ही काम करने लग गया। मेरा उनका लगभग 43 वर्ष का साथ रहा इस बीच मुझे उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला।

डा0 साहब सन् 1952 ई. का चुनाव लड़े तो मैंने चुनाव में खूब दौड़ धूप की ,कई कवितायें बनाई और चुनाव प्रचार किया। यह चुनाव डा.साहब इसलिए हार गये क्योंकि कांग्रेस वालों ने अपने प्रत्याशी को जिताने के लिए बहुत पैसा खर्च किया था। डा.साहब के पास उतना पैसा नही था हम लोग 40-50 साईकिलें लेकर घूमने निकलते थे उस वक्त लोगों को वोट डालने की पूरी जानकारी नहीं थी अलग-अलग डिब्बों मे वोट पड़ते थे तो कुछ लोग डिब्बों के बाहर ही वोट छोड़ आते थे। चालाक लोग अपने आदमी भेजकर उन्हें भी अपने डिब्बें में डाल लेते थे। इसीलिए डा.साहब की हार हुई। उन्होंने चुनावी कविता लिखा एक पर्चा भी दिखाया जिसंकी कुछ लाईनें इस प्रकार है:-

'किसानों बढ़ चलो आगे ,बढ़ों हे सर्वहारा गण।
बढ़ों विद्यार्थी भाई ,बढ़ों हे बेसहारा जन।।
खड़ा है द्वार पर "पावन" ,अलख सबकी जगाने को।
सभी हुंकार भर चल दो ,नई दुनिया बसाने को।।

पावन जी ने बताया कि डा0 साहब ने कई नाटक भी लिखे जिनकी विषय वस्तु किसान और मजदूर ही रहती थी। उनका मंचन भी कई बार हुआ। एक नाटक का नायक राजू किसान था उसी के नाम पर मैने डा0 साहब के बेटे क्रान्ति कुमार का नाम राजू कर

दिया। मुझे आफसोस है कि उनकी पाण्डु लिपि मेरे पास नहीं है वे नाटक छापे नहीं जा सके थे। इतना कहते-कहते बीमार पावन जी का गला भर आया वे कुछ और भी बताना चाहते थे लेकिन तबियत ज्यादा खराब थी इसलिए बोलने में कष्ट हो रहा था। वह लगातार डा0 साहब के साथ रहे हैं उनकी बहुत सारी यादें उनके हृदय में बसी है। डाक्टर साहब ने पावन जी को डाक्टरी सिखायी थी।

जगदीशपुर के नेता जी राजकुमार कटियार जी से लेखक मिला वे भी लगभग 80 वर्ष के है और काफी वृद्ध हो चुकें हैं। उन्होंने बताया कि मैं इस गांव में आया तो मेरी मुलाकात डा0 साहब से हुई। मैंने उनके विचारों को जाना व समझा। मैंने उनसे डा0 साहब के विषय में कोई संस्मरण सुनाने को कहा।

राजकुमार जी ने बताया कि उन दिनों पंचायत में सरपंच का चुनाव हाथ उठाकर होता था। ऐसे ही चुनाव के समय सरकारी इंस्पैक्टर हमारे गांव आया और पंचायत का चुनाव कराया। हाथों की गिनती करते समय उसने कांग्रेस के पक्ष में बेईमानी करनी चाही तो डा0 साहब ने उसे टोका। इसके बाद भी जब वह नहीं माना तो गांव के लोगों ने उसे पीट दिया जिसकी शिकायत उसने शिवराजपुर थाने व डी.एम. कानपुर के यहां की।

डी.एम. साहब जब जाँच में शिवराजपुर आये तो उन्होंने डा0 साहब को शिवराजपुर बुलाया। जो अफसर बुलाने आये थे वह अपने साथ कोई कागज नहीं लाये थे। डा0 साहब ने जाने से इन्कार कर दिया। जब उन अफसरों ने बड़ी खुशामद की तो डा0 साहब शिवराजपुर गये वहां जाते ही डी.एम.साहब डा.साहब पर उखड़ गये और तेज आवाज में कुछ बोला वे डा0 साहब को जानते नही थे

इसीलिए साधारण व्यवहार कर रहे थे। डा0 साहब उठकर खड़े हुए और डी.एम.साहब से कहा," डी.एम.साहब हमने अंग्रेजों की लाठियां खाई हैं। 17 साल उनकी जेलों में रहे हैं। हमें मौत से डर नहीं लगता,हम सरदार भगत सिंह के साथी हैं। अगर गलत बात आप भी करेंगे तो हम आपको भी जरूर टोंकेंगे। इस अपने इंसपैक्टर से पूछो कि क्या इसने बेईमानी नहीं की थी। " यह सुनकर डी.एम.साहब व इंस्पैक्टर दंग रह गये और उन्होने डा0 साहब से माँफी मांगी।

कामरेड डा0 सुरेन्द्र सिंह कटियार (प्रदेश सचिव भारत का0 कम्युनिस्ट संगठन-मार्क्सवादी लेनिनवादी) डा0 साहब के प्रिय शिष्यों मे से एक हैं। जब लेखक उनसे मिला और पाण्डुलिपि दिखायी तो उन्होंने बताया कि मैंने तो कांग्रेस पार्टी से काम शुरू किया था। लेकिन डा0 साहब के प्रभाव से कांग्रेस छोड़कर कम्युनिस्ट पार्टी में आंया और लगातार उनके सम्पर्क में रहा। हालांकि बाद में मैंने सी.पी.एम.छोड़ दी थी। डा0 साहब उसी में थे। तब भी वे मुझे पुत्रवत् प्यार करते रहे। जब भी मैंने उनसे कोई सलाह मांगी तो उन्होंने हमेशा उचित सलाह दी। वे मेरे राजनैतिक गुरू थे। इतने बड़े क्रान्तिकारी होने के बाद भी वह निहायत ही सादा जीवन बिताते थे। जीवन के अन्त तक वे साईकिल से ही चलते रहे। कभी-कभी हम लोग अपने वाहनों पर उन्हें बैठने के लिए कहते थे,तो वह हंसी में कहते थे कि जब तक तुम अपने वाहन से वहां पहुंचोगे मैं तुम्हें पहले ही वहां मिलूंगा। उनका जीवन एक आदर्श जीवन था। यद्यपि नेता बहुत बड़े-बड़े देखे है लेकिन व्यवहारिक रूप जैसा डा0 साहब का था वैसा मैंने किसी का भी नहीं देखा। वह सच्चे अर्थो में कम्युनिस्ट थे।

मैंने अपनी पाण्डुलिपि कामरेड सुरेन्द्र कटियार को दिखायी उसे पढ़ने के बाद उन्होंने कहा कि आपने जो कुछ लिखा है वह मेरी जानकारी में ठीक है। यूँ तो डा0 साहब रोज ही कुछ न कुछ ऐसा करते रहते थे, जो आदर्श रूप में देखा जा सकता है। आप उनके घर में देखिये चन्द्रशेखर आजाद और भगतसिंह आदि के आदम कद चित्रों से उनकी बैठक सजी रहती है। उनसे मिलने देश के बड़े-बड़े नेता आते थे। बड़े-बड़े लेखक उनके इन्टरव्यू लेने आते थे। उनमे से अधिकतर अखबारों में भी छपे हैं।

डा0 साहब के एक शिष्य बिल्हौर में वहां के पूर्व चेयरमैन असर हुसैन साहब हैं। लेखक जब उनसे मिला तो उन्होंने डा0 साहब के बारे में बताया कि डा0 साहब हम सबके राजनैतिक गुरू थे उनसे हमने बहुत कुछ सीखा। सबसे बड़ी बात यह थी कि डा0 साहब कभी किसी से नाराज नहीं होते थे। किसी मरीज पर अगर पैसा नहीं होता था तो भी वह उसका इलाज करते थे। डाक्टरी में उनका हाथ बहुत अच्छा था। उनके सिंखायें सैकड़ों शिष्य इस क्षेत्र में डाक्टरी कर रहे हैं। वे एलोपैथी, होम्योपैथी और आयुर्वेद के अच्छे ज्ञाता थे। हम लोग किसी समस्या के समय डा0 साहब से मशविरा करते तो वे हमेशा गम्भीर होकर विचार करते थे और सही राय देते थे हमने डा0 साहब की मृत्यु के बाद उनकी स्मृति में बिल्हौर में एक मुहल्ले का नाम गया प्रसाद नगर करवा दिया है ताकि आने वाली पीढ़ी डा0 साहब को याद रख सके।

पुस्तक छपने के बाद मुझे ज्ञात हुआ कि आदरणीय सुधीर बिद्यार्थी जी ने आजादी की पचासवीं वर्षगांठ पर कुछ प्रमुख क्रान्तिकारियों के जीवन वृत **"आमादेर विप्लवी"** नामक पुस्तक में लिखें हैं उस में

डा. कटियार के बारे में भी लिखा हैं। मैंने विधार्थी जी से संपर्क करके अपनी पुस्तक उन्हें भेंट की तो वह वहुत प्रसन्न हुये और उन्होंने भी अपनी पुस्तक मुझे दी साथ ही उन्होंने बताया "मै डा.साहब से कई वार मिला हूँ उनके द्वारा मुझे क्रान्तिकारी इतिहास के बारे मे काफी जानकारी भी मिली है। वे मुझे बहुत प्यार करते थे।"

विद्यार्थी जी ने अपनी पुस्तक में डा. साहब की सरलता के बारे मे लिखा है" क्रान्तिकारी आन्दोलन से जुड़े जिन व्यक्तियों की सरलता और सादगी ने मुझे गहरे तक प्रभावित किया उनमें डा. साहब का नाम सबसे ऊपर है।"

डा. साहब की पत्नि रज्जो देवी के विषय मे विधार्थी जी लिखते है-"बाद को क्रान्तिकारी आन्दोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए डा. गया प्रसाद जब गिरफ्तार किए गए तो सामन्ती रूढ़िंयो से बंधे परिवार की बहू उनसे मिलने जेल के दरवाजे पर कैसे जाती। तिल-तिल जलकर उस सुहागिन ने अपने प्राण त्याग दिये,पर जीते जी अपने पति के दर्शन न कर सकी। क्या कोई इतिहास लेखक उस महिला के आत्मबलिदान की कहीं चर्चा कर सकेगा?

क्रान्तिकारियों के राजनीतिक विचारों के सवंध में-"डा. गया प्रसाद और उनके साथियों ने ट्रिब्यूनल के सामने पहले ही दिन जो ब्यान दिया था वह उनकी राजनैतिक दृष्टि सम्पन्नता का अच्छा नमूना है।"

यातनाओं के बारे में-"चार-चार,पांच-पांच बार्डर मिलकर उन्हें पकड़कर परेड मे ले जाकर खड़ा करते। पर वे क्रान्तिकारी भी गजब के थे जैसे ही सुपरिन्टेन्डेन्ट आता दिखायी देता तो वे दोनो जमीन वर बैठ जाते या लेट जाते। सुपरिन्टेन्डेन्ट मुक्केवाज था वह सिपाहियों से डा. गया प्रसाद और महावीर सिंह को खड़ा करवाता

फिर उन पर 10-10,15-15 मिनट तक जमकर मुक्केवाजी करता था। इस मुक्केवाजी के कारण एक वार डा. गया प्रसाद 36 घण्टे तक जेल के अस्पताल मे वेहोश पड़े रहे।"

आजादी के बाद डा.साहब के विचारों के बारे में-**"मैं चाहता हूं कि मेरे देशवासी यह अच्छी तरह समझ लें कि अन्याय अत्याचार,शोषण,अहिंसा,असमानता,अभाव,गरीवी तथा वेरोजगारी आदि से अगर औसत आदमी को छुटकारा नही मिलता तो राजनैतिक आजादी का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। यह एक सारहीन चीज बनकर रह जायेगी।"**

मुझे बड़ी खुशी हुयी कि विधार्थी जी को ऐसे महान व्यक्तिव से भेंट करने का अवसर मिला जिसके लिये मैं वंचित रह गया।

संस्मरण - 1
काशीराम गंगवार से वार्तालाप

यह संस्मरण प्रथम संस्करण का है काशीराम गंगवार जी आज हमारे बीच नहीं हैं इसलिये यह अत्यन्त महत्व का है काशी राम जी की इच्छा थी कि द्वितीय संस्करण कुछ बेहतर जानकारियों के साथ हो इसलिए हमारी कोशिश रही कि इस संस्मरण में भूली बिसरी जानकारियाँ भी सम्मिलित कर ली जायें। यह संस्करण अच्छा और विश्वसनीय बनाने में काफी समय लग गया इस बीच हमारे प्रेरक काशी राम जी हमसे विदा हो गये। उनकी मृत्यु पुस्तक के लिए एक अपूर्णीय क्षति है।

डाक्टर गया प्रसाद कटियार की पत्नी श्रीमती निर्मला देवी सगी पांच बहनें हैं। जिनमें दो का विवाह बरेली में ही हुआ है। शीला देवी का विवाह ग्राम कठर्रा निवासी अम्बा प्रसाद वर्मा से हुआ, जो बहेड़ी से दो बार विधायक भी रहे। उनसे छोटी बहन रमा देवी का विवाह ग्राम वहरोली निवासी काशीराम गंगवार चीफ सेनेट्री इंस्पैक्टर से हुआ वह आजकल राजेन्द्रनगर बरेली में रहते हैं मैने डाक्टर गया प्रसाद कटियार से संबंधित जानकारी लेने के लिए श्री काशीराम गंगवार से कई बार भेंट की तथा अपनी लिखी पांडुलिपि भी उन्हें दिखायी। काशीराम जी ने काफी सामग्री तथा जानकारी मुझे दी मैंने प्रश्नोत्तर के रूप में उनसे बातचीत की । प्रस्तुत है उसके महत्वपूर्ण अंश :-

प्रश्न–गंगवार साहब आप डा0 गया प्रसाद कटियार के रिश्तेदार हैं उनसे प्रथम बार भेंट आपकी कब हुई?

उत्तर–डा0 गया प्रसाद कटियार जी से मेरी भेंट प्रथमवार मेरे विवाह के अवसर पर सन् 1956 ई0 में हुई उसके बाद कई वार मिला व बातचीत भी हुई। आपने जो कुछ भी लिखा है वह ठीक है ऐसा ही वह सुनाते भी थे। मैं उनकी बड़ी इज्जत करता था,इसलिए कोई सवाल मैंने उनसे कभी नहीं किया।

प्रश्न–कोई महत्वपूर्ण यादगार भेंट या कार्यक्रम जो आपको प्रायः याद आता हो बताइये ?

उत्तर–मेरी पोस्टिंग तो देववन्द में थी लेकिन बच्चों के काम काज के हिसाब से मकान सहारनपुर में बनवाया हुआ था। एक बार डा0 साहब ने बताया कि सहारनपुर में ही भगत सिंह के भाई सरदार कुलतार सिंह जी रहते है। मैं डा0 साहब का नाम लेकर कुलतार सिंह जी से मिला तो उन्होनें बड़े सम्मान के साथ बैठाया और बात की तथा अतीत की यादों को ताजा करते हुए कुछ रोमांचकारी किस्से भी सुनाये। उस समय तक मुझे डा0 साहब के क्रान्तिकारी जीवन के बारे में इतनी अधिक जानकारी नहीं थी कुलतार सिंह जी ने यह भी कहा कि मैं उन्हें बड़े भाई की तरह मानता हूँ जब वह आपके यहाँ आयें तो मेरी भी भेंट कराना न भूलिये। उनसे बातचीत के बाद मेरा मन डा0 साहब की ओर से श्रद्धा से भर गया मैने सोचा ऐसे क्रान्ति वीर की मुझे भी कुछ सेवा अवश्य करना चाहिये।

मैने डा0 साहब से भेंट करके कहा कि मैं आपके बेटे को अपने साथ रख कर पढ़ाना चाहता हूँ तीन बेटे मेरे है उन्हीं के साथ खेलता भी रहेगा और शहर में पढ़ाई भी अच्छी हो जायेगी। डा0 साहब तैयार हो गये और मैं क्रान्ति कुमार को अपने साथ ले गया व साथ में रख कर वहीं पढ़ाया। देववन्द में मैने अपने मित्रों से डा0

साहब के बारे मे बताया तो सभी उनके दर्शनों के इच्छुक हुए। भगत सिंह बलिदान दिवस पर 23 मार्च को देववन्द में सभी जीवित क्रांतिकारियों के अभिनन्दन का कार्यक्रम बनाया गया। शिव वर्मा,जयदेव कपूर व डा0 गया प्रसाद की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई। किसी आवश्यक काम के कारण शिव वर्मा नही पहुँच सके। जयदेव कपूर और डा0 गया प्रसाद कटियार पहुँचे और भी कई लोग पहुँचे यह लोग सहारनपुर में कुलतार सिंह के यहाँ ही ठहरें।

कार्यक्रम में डा0 साहब ने पकड़े जाने से लेकर छूटने तक का जो हाल श्रोताओं के सामने रखा तो सैकड़ों लोगों की आँखो मे आँसू आ गये उन यातनाओं को सुनकर ही हमारे रोंगटे खड़े हो जाते है डाक्टर साहब ने बताया कि अच्छा-अच्छा क्रान्तिकारी भी इन यातनाओं के कारण ही मुखबिर बन जाता था। घंटो बर्फ की सिल्ली पर लेटना आसान काम नहीं है महात्मा गांधी जी ने 21 दिन का अनशन कर दिया तो अखवारों में हलचल मच गई। भगत सिंह ने तो 4 महीने भूखहड़ताल की। अंग्रेज लोग वैरक के वाहर खाना रख देते थे और आड़ में हो जाते थे ताकि कोई भी उसमें से कुछ खा ले,लेकिन किसी ने कुछ नहीं खाया आखिरकार उन्होंने पानी में दूध मिला कर रखना शुरू किया। हम लोगों ने वह पानी भी नही पिया। लोग प्यासे मर गये पर दूध मिला पानी नहीं पिया।

जेल वालों ने जबरदस्ती नाक में नली डालकर यतीन्द्र नाथ दास को दूध पिलाने की कोशिश की तो उन्होंने खाँसकर नली को मुंह से बाहर निकाल दिया फिर डाली गई फिर खाँसा तो वह नली गले में हवा नली की ओर मुड़ गई और जेल वालों ने उसमें दूध डाल दिया जो उनके फेंफड़ों में चला गया। यतीन्द्र दा शहीद हो गये।

इतनी यातनायें झेलने के बाद मिली आजादी को लोग बहुत हल्के से लेते हैं तो बड़ा कंष्ट होता है हमारे तो सत्रह-सत्रह साल जेल में रहने के बाद घर तबाह हो गये अब हमारे रहनुमा वे हो गये जिनका आजादी की लड़ाई से दूर-दूर का भी सम्वंध नहीं था भगत सिंह ने जेलों में हड़ताल करके जेल मैनुअल बदलवाये,सुविधायें बाद में लोगों को मिलीं। मै खुद घंटो बर्फ की सिल्ली पर लिटाया गया हूँ, महीनों भूखा रहा हूँ, चक्की चलाई है, तेल पेरा है। निर्धारित काम से मैंने हमेशा अधिक काम किया। अपने साथियों के हिस्से का भी कार्य किया है। अब हम खुद सोचते हैं तो लगता है कि भगत सिंह ने हम लोगों में कोई ताकत भर दी थी। हम लोग क्रान्तिकारी बने हुए थे लेकिन कभी-कभी भूखे सोना पड़ता था,जाड़ो की रातों में हम बिना विस्तर के सोये है। हजारो आदमी कुर्बान हुआ है तो मिली है आजादी।

मैं तो आज के नौजवान से कहता हूँ- "पढ़ो भगत सिंह को और उसके परिवार को, चन्द्रशेखर आजाद और उसके परिवार, को अशफाक उल्ला,राम प्रसाद विस्मिल,ठाकुर रोशन सिंह तथा राजेन्द्र लाहिड़ी आदि को तो पता चलेगा आजादी कैसे मिली है। डा0 साहब की तरह ही जयदेव कपूर और अन्य लोगों ने भी बताया तो श्रोतागण भूल गये कि वे हिन्दू हैं या मुस्लमान हैं या उनकी जाति क्या है? कौन बड़ा है? कौन छोटा है? सबकी आँखो के सामने कुलतार सिंह ने भगत सिंह का ऐसा चित्र खींचा कि जनता के जहन और जवान पर शहीद भगत सिंह अमर रहे का ही नारा था। लोग सुधबुध खो चुके थे। कार्यक्रम के बाद डा0 साहब सरदार कुलतार सिंह के यहाँ ही ठहरे,वहाँ भी मिलने वालों का तांता लगा रहता था।

उन दिनों क्रान्ति कुमार मेरे पास ही रहते थे उन्होंने वही से इन्टरमीडियेट पास किया। वाद के दिनों में डा0 साहब ने बेटियों के विवाह के समय मुझे अपने साथ ही रक्खा।

प्रश्न--कृप्या डा0 साहब का कोई ऐसा संस्मरण बताइये जो आपको प्रायः अब भी याद आता हो ?

उत्तर--डा0 साहब का दवाखाना जगदीशपुर गाँव में था वाद के दिनों मे बच्चों की पढ़ाई आदि के लिए उन्होंने शहर में रहना चाहा। मुझसे जब बात हुई तों मैंने कहा कि बरेली में रह लीजियें सस्ता,साफ व अच्छा शहर है। मैंने आवास विकास से मकान आबंटित कराया था इसी प्रकार के मकान पर वह भी तैयार हो गये उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक सहारनपुर में दिनांक 15.4.1981 ई0 को 2000-00(दो हजार) रूपया का बैंक ड्राफ्ट आवास विकास परिषद लखनऊ को देय जमा किया जो आवास विकास उ0प्र0 के निर्धारित चालान पर था लखनऊ में संबंधित बाबू कुछ अलग से चाह रहा था मैं डा0 साहब के साथ था मैंने बाबू को डा0 साहब के बारे में बताया तो ऐसा लगा कि उसने उसे सच नही माना और उसने काम ऐसा उलझा दिया जो अभी तक नहीं हो पाया डा0 साहब को चलने फिरने में दिक्कत होती थी। इसलिए उन्हें मकान की फाइल का पीछा नही कर मिला।

मैं डा0 साहब के साथ लेकर बरेली के एक नेताजी से मिला और डा0 साहब की सहायता करने को कहा तो नेताजी ने भी कोई दिलचस्पी नहीं ली शायद उनके भीतर से आवाज आ रही थी कि बरेली में बूढ़ा क्रान्तिकारी बस जायेगा तो उनकी इज्जत में बंटवारा कर लेगा या सोचा होगा मैं तो कई बार चुनाव जीता हूँ यह तो

चुनाव हारे हुए है अगर अच्छे नेता होते तो चुनाव जीत जाते। बरेली में नेताओं की वैसे ही भीड़ लगी है। एक नेता और बसा लें। अतः उनसे भी निराशा हाथ लगी बाद मे डा0 साहब बीमार रहने लगे मामला और उलझ गया और मकान नहीं मिल सका इसका मुझे बहुत कलख है मौत जिन्दगी तो सबको लगी है लेकिन अगर डा0 साहब बरेली में रहें होते तो अंतिम दर्शन तो हो जाते। हमें डा0 साहब के जीवन पर एक शेर याद आता है।

उनकी तुरवत पर नही है एक भी दिया,
जिनके खूँ से जलते थे चरागे वतन।
मकबरे जगमगा रहे है उनके,
जो बेचा करते थे मुर्दो के कफन।।

प्रश्न–आपकी डाक्टर साहब से अंन्तिम बार भेंट कब और कहाँ हुई ?

उत्तर–यह बड़ी दर्दनाक घटना है मैं बीमार था लखनऊ बलरामपुर अस्पताल में भर्ती था मुझे वहीं ज्ञात हुआ कि डा0 साहब बहुत सख्त बीमार हैं। उनकी उम्र 90 वर्ष की हो चुकी थी। जब मैं ठीक हो गया तो अस्पताल से छुट्टी के बाद लखनऊ से आलोक वर्मा पुत्र अम्बा प्रसाद की गाड़ी से कानपुर गया। यह दिनांक 21 दिसम्बर सन् 1990 ई0 की बात है। डा0 साहब बेहोश थे। किसी को पहचान भी नही रहे थे। मैंने उनके कान मे मुँह सटाकर कहा कि मैं काशीराम हूँ तो उन्होंने सुन भी लिया,पहचान भी लिया और आँखे खोली पर तुरन्त ही बन्द कर लीं, पीड़ा उनके घुटनों में थी। काफी पहले सरसों के मिलावटी तेल (भटकटैया के बीजो के तेल) के सेवन से उत्तर प्रदेश में काफी लोग बीमार हुए थे उसी में डा0 साहब भी बीमार हो गये यद्यपि वे अपनी दवाओं से ठीक हो गये थे पर बीमारी का प्रभाव

उन पर रहा। उम्र के अंतिम पड़ाव पर हर किसी को ऐसी ही कोई बीमारी जो युवावस्था में दबी रहती है, घेर लेती है, और मृत्यु का कारण बन जाती है।

जेल में मिले कष्टों का भी इन दिनों उनके शरीर पर विपरीत प्रभाव हो रहा था लेकिन डा0 साहब मे इच्छा शक्ति बहुत थी उनकी पहले भी ऐसी हालत हो गई थी। वाद में ठीक हो गये थे। परिवार के लोगों को सांत्वना देकर मैं बरेली चला आया यहां आने पर मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे छोटे बेटे शरद कुमार जो सहारनपुर में मेडीकल की दुकान करता था, का एक्सीडैन्ट हो गया है और वह दिल्ली में अस्पताल में भर्ती है। गम्भीर चोंटे लगी है। बरेली से सीधे हम लोग दिल्ली चलें गये वहाँ इलाज के दौरान ही दिनांक 27 सितम्बर सन् 1990 ई0 को उसकी मृत्यु हो गई। शरद मेरा सबसे होशियार पढ़ा लिखा बेटा था उसकी मौत ने मुझे झकझोर दिया काफी दिनों तक दिमागी हालत खराब हो गई मैं घर से बाहर नहीं निकला इस सूने संसार में अभी तक मैं भी मौत के इंतजार में जीवित हूँ पर कोई चीज अच्छी नहीं लगती। डा0 साहब का भी इन दिनों सन् 1993 ई0 में देहांत हो गया।

आप डा0 साहब के जीवन पर लिख रहे है,अच्छी बात है मैंने यह फोटो और कागज संजोकर रक्खे है,आप के लेखन में अगर मेरी कुछ मदद हो जायेगी तो मेरी इच्छा पूरी हो जायेगी।

अंन्तिम प्रश्न–और कोई व्यक्ति जो डा0 साहब के बारे में जानकारी रखता हो अगर आप जानते हो तो बताइये ?

उत्तर–आप अम्बा प्रसाद जी की पत्नी शीलाजी से बात करलें। वह कुछ बता सकती हैं। इसके अलावा डा0 साहब बरेली में किसी के यहाँ नहीं गये।

अम्वा प्रसाद वर्मा पूर्व विधायक जी से मेरे अच्छे सम्बन्ध थे व उनके यहाँ काफी आना जाना था लेकिन उन्होंने कभी डा.साहब के बारे में कोई जानकारी नही दी। 1990 में उनका देहान्त हो गया। मैंने उनकी पत्नी शीला जी से बात की तो उन्होंने बताया कि डा0 साहब थे तो बहुत बड़े क्रान्तिकारी पर हृदय से कोमल थे आपने जो उनके बारे में पुस्तक में लिखा है वह सही है। इसके अलावा मुझे भी कुछ नही ज्ञात है। बहन रज्जों का देहान्त हमारे बचपन में ही हो गया था। घर पर बचपन में ही डा.साहब के बारें में कुछ सुना था। बाद के दिनों में डा.साहब जेल गये तो हम लोगों ने बच्चों की देखभाल में सहायता की। डा.साहब की आदत कम बोलने की थी उनसे बड़े-बड़े लोग मिलने आते थे।

अम्बा प्रसाद जी के भतीजे डा0 ब्रज मोहन लाल गंगवार रिटायर्ड डिप्टी डायरेक्टर कृषि उत्तर प्रदेश ने बताया कि मैंने एम. एस.सी. कानपुर से ही किया। मैं सन् 1955 से 1959 ई0 तक कानपुर में ही रहा,इस बीच कई बार उनके गांव जाकर मै डा0 साहब से मिला व बात की वह बड़े क्रान्ति धर्मी व्यक्ति थे उन्होंने गरीबों,मजदूरों,किसानों,दलितो,पिछड़ों व महिलाओं के अधिकारों के लिए कई कार्यक्रम बनाए गरीबों को वे हमेशा दवा मुफ्त ही देते थे। देश में पनपते भ्रष्टाचार, जातिवाद,ऊँच नीच बढ़ते राजनीतिक अपराधों से वे बहुत दुखी थे। उनका कहना था कि क्या यही सब देखने के लिए हम लोगों ने बलिदान किये थे। उनका चरित्र व विचार बहुत ऊँचे स्तर के थे। वह बड़े योग्य व्यक्ति थे

संस्मरण - 2
शहीदे आजम सरदार भगत सिंह के अनुज कुलतार सिंह से वार्तालाप

प्रथम संस्करण के विमोचनार्थ मैं कुलतार सिंह जी से मिला था उन्होंने मुझे बहुत प्रोत्साहित किया बड़े कष्ट के साथ लिखना पड़ रहा है कि आज हमारे बीच कुलतार सिंह जी नही है उनकी यादें ही शेष है। निम्न लिखित वार्तालाप प्रथम संस्करण का ज्यों का त्यों लिख रहें है।

डाक्टर गया प्रसाद कटियार शहीदे आजम भगत सिंह के साथी थे वह उनके विचारों से बहुत प्रभावित थे। सरदार भगत सिंह के अनुज सरदार कुलतार सिंह देश की आजादी के बाद लाहौर से सहारनपुर में आकर बस गये उनकी आयु इस समय 84 वर्ष की है। काफी कमजोर हो गये है। लाहौर केस के प्रत्यक्ष दर्शी इस समय केवल वे अकेले व्यक्ति है। उनके डा0 गया प्रसाद कटियार से घरेलू सम्बन्ध थे। लेखक काशीराम गंगवार को साथ लेकर उनसे सहारनपुर जाकर मिला। प्रस्तुत है उनसे बातचीत के प्रमुख अंश प्रश्नोत्तर के रूप में -

प्रश्न–आदरणीय कुलतार सिंह जी कृपया अपने परिवार के विषय में कुछ जानकारी देने का कष्ट करें ?

उत्तर–हमारे दादा सरदार अर्जुन सिंह आर्य समाजी हो गये थे,आज़ादी की लड़ाई हमारे परिवार में वही से शुरू हुई उनके तीन पुत्र हुए। सरदार किशन सिंह (पिताजी),सरदार अजीत सिंह (चाचाजी),सरदार स्वर्ण सिंह (चाचाजी)। सरदार स्वर्ण सिंह युवावस्था

में ही एक आन्दोलन के समय सन् 1910 ई0 में ही शहीद हो गये थे। सरदार अजीत सिंह बड़े क्रान्तिकारी थे इसलिए अंग्रेज सरकार द्वारा 1907 में देश बदर कर दिये गये थे। वे 40 वर्ष तक विदेशों में रहकर देश की आजादी के लिए लड़ते रहें। उन्होंने सबसे पहले इटली में आजाद हिन्द फौज का गठन किया। पिताजी कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता रहे उन पर अंग्रेजी अदालतों में 42 मुकदूमें चले मैं भी सात वर्ष जेल मे रहा मेरे भाई कुलवीर सिंह भी सात वर्ष अंग्रेजी जेलों मे रहे। मेरी बहन भी जेल में रही। हमारे पूरे परिवार ने आजादी की लड़ाई मे किसी न किसी रूप में हिस्सा लिया।

बड़े भाई साहब सरदार भगत सिंह को घर का वातावरण आजादी की लड़ाई में कूदा हुआ मिला उसको उन्होंने अपने बलिदान से ऐतिहासिक पहचान दे दी। मेरे भाई कुलवीर सिंह की मृत्यु हो चुकी है। उनका परिवार फरीदाबाद में रह रहा है। दो छोटे भाई रनवीर सिंह और राजेन्द्र सिंह के परिवार उत्तरांचल में ऊधमसिंह नगर मे रहते हैं। भाईयों में अकेला मैं ही जीवित हूँ,मेरे दो बेटे है,जो यही वकालत भी करते है और खेती भी देखते है। भगत सिंह का विवाह ही नही हुआ था। माता जी पिता जी व चाचा-चाची का देहान्त हो चुका है।

प्रश्न–जब शहीदे आजम पर मुकद्मा चला व फांसी हुई उस समय का कुछ हाल बताईये ?

उत्तर–भारत की आजादी में हजारों क्रान्तिकारियों को फांसी लगी, सजायें हुई, कई क्रान्तिकारी दल बने,बड़े बहादुर लोग थे, जिन्होंने अंग्रेजों को मारा और खुद भी मर गये भगत सिंह की सोच ही कुछ अलग थी। वे समाजवादी विचारों वाले थे उनमें संगठन करने की

क्षमता अदभुत थी। वह देश को किस प्रकार की आजादी देना चाहते थे ? क्या आजादी के बाद देश धन्ना सेठों की कठपुतली बन जाये? यह आजादी भगत सिंह के विचारों की आजादी नही है। उन्होंने अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिये असैम्बली में बम और पर्चे फेंके थे किसी को मारना नही था बम फेंकने के बाद वे भाग भी सकते थे,लेकिन उन्होंने खुद को गिरफ्तार कराया था, बमो के धमाके बहरे अंग्रेजों को भारतीयों की आवाज सुनाने के लिये किये गये उन्होंने मुकद्मा भी नही लड़ा वह जानते थे कि कितना भी मुकद्मा लड़ो अदालत का फैसला वही होना है उन्होंने अपना पक्ष केवल इस रूप में रखा ताकि भारतभूमि क्रान्तिवीरों को पैदा करने वाली उर्वरा भूमि हो जाय।

जब मुकदमा चल रहा था मैं उन दिंनो 10 या 12 वर्ष का था मैं सभी से मिलता था। भगत सिंह का छोटा भाई था। इसीलिए सभी का स्नेह मेरे ऊपर था। डा0 गया प्रसाद कटियार उस समय उम्र में सबसे बड़े थें हृष्ट-पुष्ट भी सबसे अधिक थे इसीलिए सभी उन्हें अपना बड़ा भाई मानते थे। पुस्तक में आपने मुकदमें का फैसला लिख ही दिया है;आप की पुस्तक में मेरी जानकरी में सभी बातें ठीक है। जब भगत सिंह को फांसी लगी तो बाकी साथियों को दूसरी जेलों में भेज दिया गया था एक सिपाही ने फांसी से पहले भगत सिंह को वाहे गुरू का नाम लेने और गुरू ग्रन्थ साहब का गुटका पढ़ने को कहा तो उन्होने बड़े प्यार से उससे मना कर दिया उन्होंने सांडर्स की हत्या से पहले केश कटवा दिये थे,पर सांडर्स हत्या काण्ड के समय पगड़ी बांधे हुये थे,बाद को पगड़ी उतार दी थी जेल में संत रनधीर सिंह से भगत सिंह मिलना चाहते थे। लेकिन संत जी

ने मिलने से मना कर दिया क्योंकि उन्होंने वाल कटा दिये थे।

भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव को एक साथ फाँसी लगी। हम लोगो को पता नही लगा। फाँसी के बाद अंग्रेजों ने उनके अंगो को काट कर बोरी में भरकर जेल से निकाला था। काफी दूर जाकर सतलज के किनारे जंगलों में उन्हें जलाया गया तब तक जनता पहुंच गई तो सिपाही अधजले अंग नदी में फेंककर भाग गये जनता को जो कटे हुए बिखरे अधजले अंग मिले उन्हें लेकर प्रदर्शन हुआ और अगले दिन हुसैनीवाला में तीन चितायें बनाकर उनका दाह संस्कार किया गया। जहाँ बाद को उनके स्मारक बनवा दिये गये है।

प्रश्न–डाक्टर गया प्रसाद कटियार के जेल से छूटने के बाद आप उनसे कब मिलें ?

उत्तर–उन दिनों मै भी जेल मे ही था छूटने के बाद हम लोग मिलते ही रहें। मै उनके गांव जाकर मिलता था,मुझे वे अपना छोटा भाई मानते थे वह जीवन भर भगत सिंह के विचारों के वाहक रहे। उनमें कभी कोई कमजोरी दिखाई नही दी,वह हमारे घर भी आये मै उनके देहान्त के बाद भी उनके घर गया। बड़े लड़के राजू के विवाह में भी गया था।

लेखक ने उनसे पुस्तक के विमोचन के लिए बरेली आने की प्रार्थना की तो उन्होंने कहा अब तो चलना फिरना मुश्किल हो गया है आना जाना बंदकर दिया है। मेरा बरेली पहुँचना सम्भव नही है।

संस्मरण – 3

उ0प्र0 के एकमात्र जीवित क्रान्तिवीर ठाकुर रामसिंह से वार्तालाप

तत्कालीन क्रान्तिकारी दल के उत्तर प्रदेश में एक मात्र जीवित सदस्य ठाकुर रामसिंह आगरा में निवास करते है उनकी आयु इस समय 95 वर्ष की है आपने डा0 साहब के साथ-साथ सी. पी.एम. में काम किया है एवं आगरा में क्रान्तिकारी वीरों की स्मृति में काफी कार्य किया है कई स्मारिकाओं आदि का प्रकाशन, शहीद स्मारक का निर्माण एवं शहीदे आजम भगत सिंह व चन्द्रशेखर आजाद की पुण्य तिथियों पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आदि करते रहते हैं पुस्तक की परख कर ली जाये उनसे बातचीत कर ली जाय प्रस्तुत है उनके डा0 गया प्रसाद कटियार से संबंधित कुछ संस्मरण प्रश्नोत्तर के रूप मे-

प्रश्न–सिंह साहब आप काला पानी के दिनों की गतिविधियों पर प्रकाश डालने का कष्ट करें?

उत्तर–शहीद भगत सिंह और चन्द्रशेखर हमारे दल के नेता थे और डा0 गया प्रसाद केन्द्रीय कार्यालय के संचालक थे। इन लोगों के कार्यो पर,कार्य पद्धति पर,विचारों पर व शहादत पर हमें गर्व है और हर भारतवासी को गर्व होना चाहिये। यह लोग संयुक्त प्रांत और पंजाब में थे मैं राजस्थान में था हम सभी उन दिनों नौजवान थे मैने डा0 साहब की कार्य पद्धति के बारे में सुना था पर भेंट नहीं हुई थी दल मे गोपनीयता भी बहुत वर्ती जाती थी। नाम भी बदले हुए रहते थे इसलिये जानकारी होने में दिक्कत रहती थी। मुझे इतना

ज्ञात था कि कार्यलय जगह बदल-बदल कर खोले जाते रहें।

प्रश्न–आप डाक्टर गया प्रसाद कटियार से पहले पहल कैसे ,कब और कहाँ मिले ?

उत्तर–मुझे अजमेर के डोंगरा शूटिग केस में 14 वर्ष की सजा हुई थी। डाक्टर साहब को सहारनपुर बम फैक्ट्री केस तथा लाहौर षडयंत्र केस में आजीवन कैद की सजा हुई थी हम लोग पहले अंडमान जेल मे मिले वहाँ डा0 साहब हमारे दल के नेता थे वहाँ भी हमारे दल ने 46 दिन की भूख हड़ताल की डा0 साहब बीमार वंदियों की बड़ी सेवा करते थे सरकारी डाक्टर से सलाह मशवरा करके दवा दिलवाते थे दवा भी अच्छी मिल जाती थी वाद के दिनों में जेल के अधिकारी भी डा0 साहब से सलाह लेते थे वह वंदियों की सुविधा के लिए अधिकारियों से लड़ भी जाते थे काले पानी के बाद लखनऊ जेल मे भी हम लोग साथ-साथ रहे।

प्रश्न–आप को डाक्टर साहब की कौन सी बात अच्छी लगी?

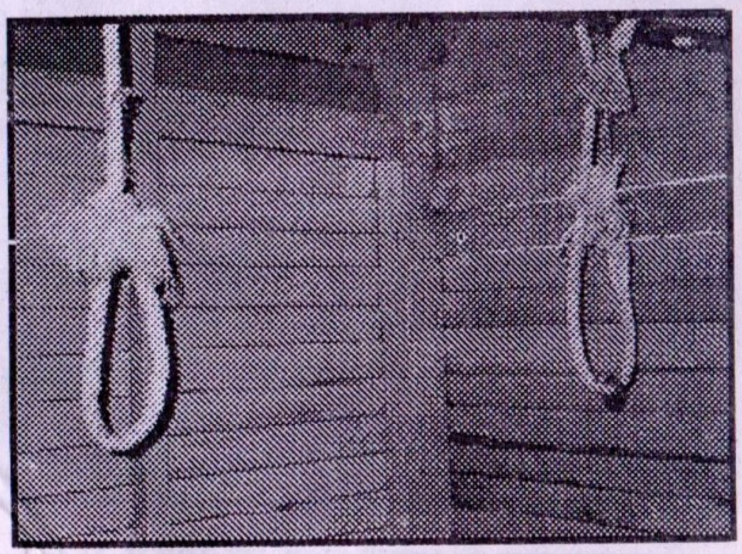
उत्तर–मुझे उनके राजनैतिक विचार सबसे अच्छे लगे उन्होंने अंत तक भगत सिंह की नीतियों पर ही अमल किया उन्हीं नीतियों के लिए उन्होंने आंदोलन किये उन्होंने मजदूर व किसान की दशा को चित्रित करने वाले नाटक लिखे व उनका सफल मंचन किया। वह चुनाव भले ही नहीं जीते लेकिन इन्दिरा गांधी जी ने सुना था कि डा0 साहब मरीज देखने की टेबिल पर भी भगत सिंह का फोटो लगाकर रखते हैं तो जब उन्होंने डा0 साहब को बातचीत के लिये बुलाया तो मेज पर भगत सिंह का फोटो पहले से लगा लिया था इस पर डा0 साहब ने कह दिया था फोटो से नही विचारों से भी भगत सिंह होने चाहिए। हम भगत सिंह के विचारों से हटकर कोई समझौता नहीं कर सकते। उनके

यही सिद्धान्त हमें सबसे अच्छे लगते थे।

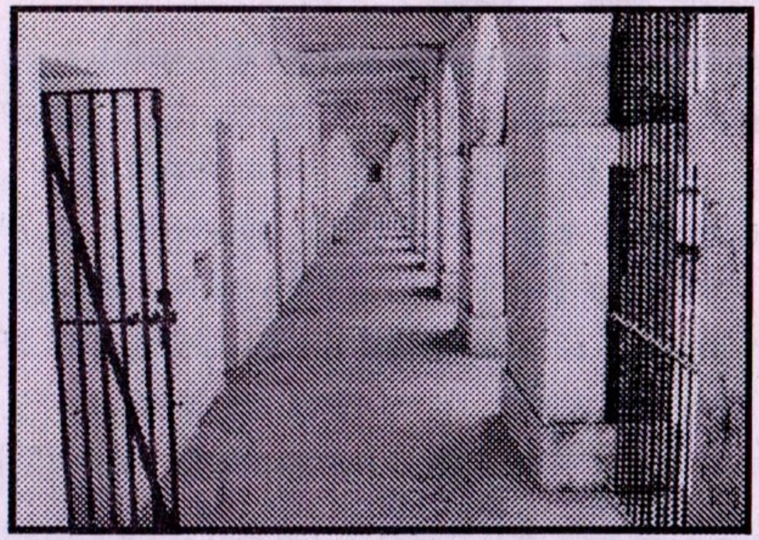
प्रश्न–नौजवानों को आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?

उत्तर–नौजवान ही देश की असली सम्पत्ति होते हैं वही आज बेकार घूम रहे हैं। कभी धर्म के नाम पर या सम्प्रदाय के नाम पर वहकाया जा रहा है और देश हो चुका है आर्थिक गुलाम। इस समय तो नौजवान को बहुत सोचकर फैंसले लेने चाहिये जिन उसूलों के लिए क्रान्तिकारी फांसी चढ़े व जेलों में सड़े, उनकी जानकारी हमारे नौजवानों को नहीं होने दी जा रही है यह फैसला तो देश के नौजवानों को ही करना है कि वे पूँजीवाद चाहते है या समाजवाद।

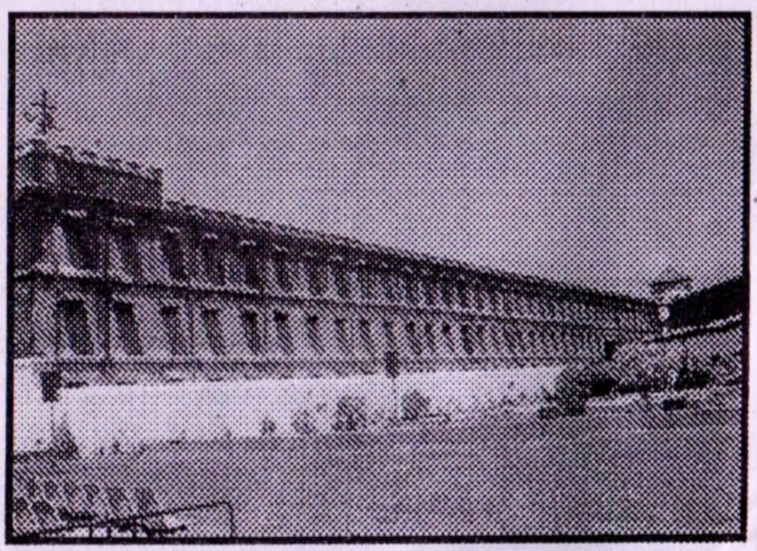
वतन को फिर कहीं गिरवी न रख देना ,ऐ वतन वालों
शहीदों ने बड़ी मुश्किल से ये कर्ज चुकाये है।



सेल्यूलर जेल का फांसी घर



सेल्युलर जेल के पार्श्व भाग का आन्तरिक दृश्य



सेल्युलर जेल के पार्श्व भाग का बाह्य दृश्य